

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१६

ॐ । वहुङ्ग'व'दवद'वोस'सुवस'वस्त्रिणस'खईद'वदि'
खदे'सुद'यस'द्वुद'वदि'वत्तुदस'सुवस'दवद'विण'
वोद'सुद'दु'वग्गेय'व'दद'वठस'व'वत्तुवस'सो॥

भदन्त-इन्द्रेण संकलिताः

सूत्र-तन्त्रोद्भवाः कतिपयधारणीमन्त्राः

भोटानुवादसहिताः

[संशोधितं संस्करणम्]



लिप्यन्तरकर्ता सम्पादकश्च

ठिनलेराम शाशनी

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५५०

ख्रीस्ताब्द-२००६

མདོ་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བའི་གཟུངས་སྒྲགས་འགའ་ཞིག་
བོད་སྐད་དུ་བསྐོས་བ་དང་བཅས་བ་བཞགས་སོ།

सूत्र-तन्त्रोद्भवाः कतिपयधारणीमन्त्राः
भोटानुवादसहिताः

SŪTRA-TANTRODBHAVĀḤ
KATIPAYADHĀRAṆĪMANTRĀḤ

(With Tibetan translation)

by

Bhadanta Indra

[Revised Edition]



Transcribed and Edited

by

Thinlay Ram Shashni

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH UNIT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

Chief Editor : Prof. Geshe Ngawang Samten

Publication In-charge : Samten Chhosphe, Ph.D.

First Edition: 550 copies, 1997

2nd Edition (Revised): 550 copies, 2003

Reprinted: 1000 copies, 2006

Price : Rs. 55.00

© Copyright by Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath,
Varanasi -221007, India, 2006. All rights reserved.

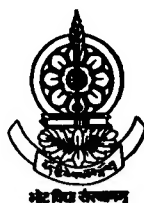
Publisher :

Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

ISBN: 81-87127-55-4

༢༩། བཅུན་པ་དབང་པོས་སྟོགས་བསྐྱེགས་མཛད་པའི་
མདོ་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བའི་གཟུངས་སྒྲགས་འགའ་ཞིག་
བོད་སྐད་དུ་བརྟོལ་བ་དང་བཅས་པ་བཞུགས་སོ།

भदन्त-इन्द्रेण संकलिताः
सूत्र-तन्त्रोद्भवाः कतिपयधारणीमन्त्राः
भोटानुवादसहिताः
[संशोधितं संस्करणम्]



लिप्यन्तरकर्ता सम्पादकश्च
ठिनलेराम शाशनी

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेसे डवङ्ग समतेन

प्रकाशन प्रभारी : डॉ० समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९७

द्वितीय संस्करण(संशोधित) : ५५० प्रतियाँ, २००३

तृतीय संस्करण : १००० प्रतियाँ, २००६

मूल्य : रु० ५५.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी - २२१००७
२००६, प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक : केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

ISBN: 81-87127-55-4

मुद्रक : सुरभि प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी ।

बौद्धपरम्परा में धारणीमन्त्रों को लौकिक एवं लोकोत्तर सिद्धियों का महत्त्वपूर्ण अङ्ग माना जाता है। परन्तु, मन्त्रों का वाचन या जप मात्र पर्याप्त नहीं है। सम्पूर्ण तन्त्र-शास्त्र और साधना के परिप्रेक्ष्य में मन्त्र को देखा जाना चाहिये। प्रत्येक मन्त्र के साथ साधना-पद्धति और गम्भीर दर्शन जुड़े हुये हैं। इन के समीचीन हृदयङ्गम और यथावत् ध्यानभावना से ही शास्त्रोल्लिखित सिद्धि की प्राप्ति होती है।

आज के इस भौतिकयुग में भी लोगों की इन पर इतनी आस्था है, यह इसी से प्रतीत होता है कि शलु लोचावा द्वारा संगृहीत तथा भदन्त इन्द्र (चुन-प-वड्-पो) द्वारा प्रतिसंस्कृत धारणीमन्त्रसंग्रह का प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया। आज इसके दूसरे संस्करण को प्रकाशित कर साधकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग में कार्यरत श्री ठिनलेराम शाशनी ने इस संस्करण में रोमन लिपि में भी लिप्यन्तरकर विभिन्न बौद्धतन्त्र ग्रन्थों के अद्यतनीय संस्करणों में उद्धृष्ट धारणीमन्त्रों, धारणीसंग्रह-आदि पाण्डुलिपियों तथा साधनमाला आदि में दिये हुए धारणी-मन्त्रों से इन मन्त्रों को मिलाकर यथासंभव शुद्ध करने का प्रयत्न किया है और सभी पाठों को टिप्पणी में दे दिया है। इस प्रकार यह संस्करण सामान्य पाठकर्ताओं, प्रबुद्धपाठकों एवं शोधकर्ताओं के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

इस ग्रन्थ के शुद्ध और सुरुचिपूर्ण सम्पादन के लिये हम इसके संस्कर्ता श्री ठिनलेराम शाशनी को साधुवाद के साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं तथा इस कार्य को निष्पन्न करने में सहयोगकर्ताओं के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

भवतु सर्व मङ्गलम्।

सारनाथ
28 जुलाई, 2003

प्रो० गेशे डवड् समतेन
(निदेशक)

དབར་སྐྱོན་ཆེད་བཟློག་

སངས་རྒྱལ་པའི་ལུགས་ལ་གཞུང་ས་སྐྱུགས་ནི་འཛིན་རྟེན་དང་འཛིན་རྟེན་ལས་
འདས་པའི་དངོས་གྲུབ་སྐྱུགས་པའི་ཆ་ཤས་གལ་ཆེན་ཞིག་དུ་འདོད། འོན་ཀྱང་མཆོག་སྐྱུགས་པ་
ལ་གཞུང་ས་སྐྱུགས་ཀྱི་བསྐྱེད་བཟློག་ཅམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་གསང་སྐྱུགས་ཀྱི་རྒྱུད་གཞུང་
སྐྱུ་དང་བྱེ་བྲག་སོ་སོའི་གོ་བ་ཆགས་པའི་ཐོག་ནས་སྐྱུགས་ཐབས་ལ་ཞུགས་དགོས། གཞུང་ས་
སྐྱུགས་སོ་སོར་བསྐྱེད་སྐྱུགས་ཀྱི་ཚུལ་དང་ལྟ་བའི་ཐབས་གནད་ཀྱི་གཞི་རྟེན་ཡོད་པས་དེ་དག་
ཡང་དག་པར་ཁོང་དུ་རྒྱུད་པ་དང་ཚུལ་བཞིན་དུ་སྐྱུགས་པའི་ཐབས་ལ་གཞི་ལ་ན་གཞུང་ནས་
བཤད་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རིགས་རྣམས་འབྱུང་རྒྱས་པ་ཡིན་ནོ།

དེར་སྤྱི་དངོས་པོ་གཙོ་ཆེར་འཛིན་པའི་དུས་འདིར་ཡང་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་གཞུང་ས་
སྐྱུགས་ལ་དད་མོས་ཆེན་པོ་ཡོད་པར་སྒྲུང་། དེ་ཡང་ཞུ་ལུ་ལོ་ཆེན་གྱིས་སྤྱོད་པ་བདུས་
མཛད་ཅིང་། སྐྱེ་བོ་དཔོན་བཅུན་པ་དབང་པོས་དག་ཞུས་གནང་བའི་གཞུང་ས་སྐྱུགས་
སྤྱོད་པ་བདུས་དབར་ཐངས་དང་པོ་དེ་དུས་ཡུན་སྤང་དུ་ཞིག་ནང་ཆ་ཆང་རྩོགས་ཟེན་པར་
བརྟེན། ད་ལན་དེབ་འདིའི་དབར་ཐངས་གཉིས་པ་ཉམས་ལེན་པ་རྣམས་ཀྱི་མདུན་དུ་བསྐྱུན་
སྐྱུགས་པར་སྐྱོ་བ་ཆེན་པོ་བྱུང་།

ཆེས་དཀོན་གསུང་རབ་སྤྱེ་ཆེན་གྱི་ལས་བྱེད་གཞུང་འདིའི་ཞུ་སྤྱོད་པ་ཆེ་དང་ལུན་
པ་འཕྲིན་ལས་རྣམས་སྤྲུལ་རྣམས་པར་ཐངས་འདིར་གཞུང་ས་སྐྱུགས་རྣམས་ཀྱི་དབྱིན་ཡིག་གི་
གཞུགས་སུ་སྐྱུ་གཞུགས་པའི་བསྐྱུར་དང་། དེར་ལུགས་ལྟར་གཞུང་ས་སྐྱུགས་རྣམས་དང་
གཞུང་ས་བསྐྱུས་ལ་སོགས་པའི་རྩ་བའི་མ་དཔེ་ཁག་དང་། སྐྱུགས་ཐབས་ཀྱི་ཕྱིང་བ་ལ་

མོགས་པར་བསྟན་པའི་གཟུངས་སྒྲགས་རྣམས་དང་མཚུངས་བསྟར་དང་སྒྲགས། རྒྱས་
 དག་གང་རྒྱས་བྱས་ཏེ་མི་འདྲ་བ་རྣམས་འོག་མཆན་དྲུ་བཀོད་པ་འདི་ནི་གཟུངས་སྒྲགས་
 གྲོག་པ་པོ་སྤྱི་དང་། མཁས་པ་ཁག་དང་། ཉམས་ཞིབ་པ་རྣམས་ལ་ཕན་ཐོགས་ཆེན་པོ་
 ཡོང་བའི་རེ་བ་ཡོད།

དགའ་དད་སྦྲོ་གསུམ་གྱི་སྦྲོ་ནས་གཞུང་འདིའི་རྒྱས་དག་དང་སྦྲོགས་བསྦྲིགས་
 གནང་མཁན་ཆེ་དང་ལྷན་པ་འཕྲིན་ལས་རྣམས་ལ་བསྒྲགས་བརྗོད་དང་མ་འོངས་
 མདུན་ལས་བཟང་པོའི་སྦྲོན་འདུན་ཡོད། གཞན་ཡང་བྱ་བ་འདི་མཐའ་འཁྲོངས་ཡོང་བར་
 མཐུན་འགྱུར་གནང་མཁན་ཆང་མ་ལའང་སྤྱགས་ཇེ་ཆེ་ཞུ་བྱུ་ཡིན།

སྐུ་དབུས་པོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སྦྲོབ་གཉེར་ཁང་གི་ངས་སྟོན་པ་དག་
 བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་གྱིས་སྤྱི་ལོ་ ༢༠༠༢ ལྷ་ ༧ ཆེས་ ༢༤ ཉིན་གྱིས་པ་དག་
 ལེགས་འཕེལ།

PUBLISHER'S NOTE

In the Buddhist tradition the *dhārāṇi-mantras* constitute an important part in the process of realization of mundane and trans-mundane attainments. However, mere recitation or reading of *mantras* is not sufficient. One should look into them in the context of holistic picture of the entire tantric system and their gradual stages of practices. Each *mantra* is connected with the practical procedural methods as well as with sophisticated philosophical views. One can attain various realizations mentioned in the treatises with thorough understanding of the system and genuine meditational practices.

In this materialistic era also there is a great enthusiasm among the people in this very field of learning, as the first edition of the collection of *dhārāṇi-mantra* of *Shalu Lotsawa* and revised by *btsun-pa-dbaṅ-po* (*Bhadant Indra*) sold-out so quickly. It is pleasure to bring out the second revised edition before the scholars and practitioners.

Mr. Thinlay Ram Shashni, who edited this second edition, is presently working in the Rare Buddhist Texts Research Unit. In this revised edition he has provided the romanised version based on lately published *dhārāṇi-mantras*, manuscripts of collection *dhārāṇi* and those in the *Sādhnamālā*. Correcting the obvious scribal mistakes and misprints in the respective sources, he has provided the variant readings in the footnotes. Thus, I hope that this edition will be useful for common folks, scholars and researchers as well.

I appreciate Mr. Thinlay Ram Shashni's effort to bring out this collection of *dhārāṇi-mantra* with upgraded revised version. I also thank those who have extended their cooperation in accomplishing this work.

May all beings be happy.

Sarnath :
28th July, 2003.

Prof. Geshe Ngawang Samten
(Director)

प्रस्तुत ग्रन्थ को भोट आचार्य भदन्त इन्द्र (५३६-५५८ ई.) ने तत्कालीन भोट नरेश की आज्ञा के अनुसार महापण्डित शलु लोचावा के द्वारा संगृहीत धारणीमन्त्रों को पुनः संकलितकर, प्रारम्भ और अन्त में कुछ महत्वपूर्ण धारणी-मन्त्रों को समाविष्टकर तथा ग्रन्थ का सम्यक् परिष्कारकर भोटानुवाद के साथ भोटलिपि में प्रकाशित किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में कुल 82 धारणीमन्त्र हैं। इनमें से अधिकांश वे हैं जो बौद्ध समाज में अत्यन्त प्रचलित हैं। अवशिष्ट वे हैं जो बौद्ध तान्त्रिक अनुष्ठानों से सम्बद्ध हैं।

भदन्त इन्द्र (५३६-५५८ ई.) द्वारा संगृहीत धारणी-मन्त्रों के संग्रह का द्वितीय संस्करण पाठकों के समक्ष परिमार्जन कर प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। अप्रत्याशित रूप से ग्रन्थ के प्रति पाठकों की रुचि, विशेषकर मठों में निवास कर रहे भिक्षुओं एवं विदेशी बौद्ध धर्मावलम्बियों के कारण ग्रन्थ का प्रथम-संस्करण शीघ्र ही बिक गया। इस से उत्साहित होकर मैंने ग्रन्थ का लाभ अधिकाधिक पाठकों को मिल सके, इस दृष्टि से प्रस्तुत संस्करण में धारणी-मन्त्रों का भोट-लिपि से नागरी-लिपि के अतिरिक्त रोमन-लिपि में भी लिप्यन्तर किया है।

इस ग्रन्थ की एक प्रति जिसे मैंने 'क' से संकेत किया है, मुझे श्री डब्लू रिगजिन (वाग्निन्द्र विद्याधर), गाँव तिन्नो, जिला लाहुल एवं स्पिति के व्यक्तिगत संग्रह से प्राप्त हुई। वास्तव में उन्हीं की प्रेरणा एवं आग्रह पर ही मैंने इस ग्रन्थ को भोट लिपि से देवनागरी में लिप्यन्तर एवं सम्पादन करने का प्रयास किया। इसकी दूसरी 'ख' प्रति मुझे शान्तरक्षित पुस्तकालय में मिली, जो 'टिबेटन बोनपो मोनास्टिक सेन्टर, दोलनजी, सोलन, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित हुई है। यह प्रति काफी बाद की प्रतीत होती है। इस की विशेषता यह है कि इसमें सभी धारणीमन्त्रों का शीर्षक भोट भाषा में दिया है, जबकि 'क' प्रति में मन्त्रों का शीर्षक नहीं दिया है। मैंने इनका भी यथास्थान अनुवाद कर दिया है। यद्यपि इन दोनों प्रतियों के पाठों में विशेष अन्तर नहीं है।

प्रथम-संस्करण में मन्त्रों की गम्भीरता एवं संस्कृत-स्रोत के अभाव में सम्पादन का कार्य आंशिक रूप में ही किया जा सका। सम्प्रति बौद्ध तन्त्र के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। उन तन्त्र ग्रन्थों में प्रसंगवश धारणीमन्त्रों का भी समावेश है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय अभिलेखालय, नेपाल से प्राप्त "धारण्यादि संग्रह" नामक पाण्डुलिपि, जिसमें लगभग 263 धारणी-मन्त्रों का संग्रह है। यद्यपि इस पाण्डुलिपि में लिपि की अस्पष्टता एवं भाषागत

अनेक त्रुटियाँ हैं; फिर भी इस ग्रन्थ के सम्पादन में इसकी उपयोगिता बहुत अधिक रही है; क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ के अधिकाँश धारणीमन्त्र इस संग्रह में उपलब्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त विनयतोष भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित और ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बडौदा से 1968 में प्रकाशित साधन-माला (दो भाग) तथा दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित विविध बौद्ध तन्त्र ग्रन्थों में उपलब्ध मन्त्रों से भी सम्पादन में सहायता ली गई है। सम्पादन करते समय इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि भदन्त इन्द्र के द्वारा संकलित एवं भोट भाषा में अनूदित धारणी-मन्त्रों के स्वरूप में अधिक परिवर्तन न करते हुये पाठ-भेदों को पाद-टिप्पणी में ही रखा जाये। मन्त्रों का सम्पादन अन्य ग्रन्थों की भाँति करना संभव नहीं है, इसलिए जहाँ बहुत आवश्यक हो वहाँ पाठ-भेद को सुझाव के रूप में कोष्ठक में रख दिया गया है। एक ही मन्त्र के कई पाठान्तर मिलने पर ऐसे स्थलों में पाठ-निर्णय करना अत्यन्त कठिन था, अतः मैंने पाद-टिप्पणी में देना ही उचित समझा। दूसरी ओर, जिस धारणीमन्त्र में पाठ-भेदों की बहुलता हो, ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण धारणी-मन्त्र को ही पाद-टिप्पणी में दे दिया गया है, ताकि ऐसे स्थलों में सुधीजन स्वयं निर्णय लेकर मन्त्रों का पाठ निर्धारण कर सके। सम्पादन के तहत विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध पाठों का संकेत एवं सूचनायें यथास्थान दे दी गई हैं।

भोटभाषा में उपलब्ध विभिन्न बौद्ध तान्त्रिक अनुष्ठानों एवं पूजा-विधियों के ग्रन्थों में जिन धारणीमन्त्रों के लिप्यन्तर हुए हैं, वे कमोवेश भ्रष्ट रूप में मिलते हैं। इससे मन्त्रों के उच्चारण में भी दोष आ जाता है तथा मन्त्रों की सिद्धि में भी संदेह उत्पन्न करता है। अतः प्रस्तुत लघु ग्रन्थ का सम्पादन इस ओर किञ्चित् प्रयासमात्र है। यद्यपि मन्त्रों को भाषा के आधार पर शुद्ध करना निःसंदेह बहुत कठिन ही नहीं अपितु असंभव-सा है। विशेषकर बीजमन्त्रों का, क्योंकि बीजाक्षर साधना की अवस्था में निष्पन्न देवबिम्बों के प्रतीक स्वरूप हैं इसलिए साधना की उस अवस्था विशेष में पहुँचे विना इन बीजाक्षरों की शुद्धि सम्भव नहीं है। भोट आचार्यों ने भी इन बीजाक्षरों का भोट भाषा में अनुवाद नहीं किया है, बल्कि बीजाक्षर को यथावत लिप्यन्तर कर रख दिया है। इसलिए साधना के अभाव में मात्र भाषा के आधार पर इन बीजाक्षरों का संशोधन करना समीचीन नहीं होगा।

इस तरह इस संस्करण में मैंने मन्त्रों की गूढ़ता एवं रहस्यात्मकता के बावजूद कतिपय स्थलों में जहाँ स्पष्ट अशुद्धि परिलक्षित होती है, वहाँ पाठों को संशोधित करने का प्रयास किया है; अन्यत्र स्थलों में पाठान्तरों को पाद-टिप्पणी में दे दिया है, ताकि तन्त्रशास्त्र के वेत्ता एवं शोधकर्ता भविष्य में ऐसे स्थलों पर यथोचित पाठ-निर्णय कर सके।

प्रथम संस्करण के प्राक्कथन में मन्त्रों की व्युत्पत्तियाँ, जो विभिन्न बौद्धतन्त्र ग्रन्थों से संकलित कर दी गई थी, इस सम्बन्ध में कुछ पाठकों का सुझाव था कि उन स्थलों का हिन्दी में अनुवाद होना चाहिए, ताकि मन्त्रों के स्वरूप को समझने में सामान्य पाठकों को भी सुविधा हो। यह सुझाव मुझे समीचीन जान पड़ा। तदनुसार, मैंने प्रथम संस्करण के प्राक्कथन के अधिकांश अंशों को संशोधित एवं परिमार्जित कर भूमिका में प्रस्तुत किया है। आशा है पाठकों को निःसंदेह इससे कुछ लाभ मिलेगा।

इस ग्रन्थ को दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान करने के लिए मैं संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो० एस० रिन्योछे जी का अत्यन्त आभारी हूँ। संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो० गेशे डवङ्ग समतेन जी के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने द्वितीय-संस्करण को प्रकाशित करने की अनुमति देकर और प्रकाशकीय लिखकर इस ग्रन्थ की उपयोगिता को और बढ़ाया है। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के कार्यकारी निदेशक पं० जनार्दन पाण्डेय जी ने इस ग्रन्थ में आवश्यक प्रूफ संशोधन कर ग्रन्थ का परिष्कार किया है, एतदर्थ मैं उन्हें भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस ग्रन्थ के परिष्कार में गेशे डवङ्ग समतेन, डॉ० वङ्छुक दोर्जे नेगी, भिक्षु जलछेन नमडोल, डॉ० बनारसी लाल आदि विद्वानों का भी विशेष योगदान रहा है, एतदर्थ मैं इन सभी विद्वानों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। प्रकाशन-अनुभाग के प्रभारी श्री समतेन छोस्फेल को भी ग्रन्थ के प्रकाशन सम्बन्धी कार्य सम्पन्न करने के लिए धन्यवाद देता हूँ। मेरे सहयोगिनी डॉ० छेरिङ्ग डोलकर ने ग्रन्थ के भोट-अंश के प्रूफ-संशोधन में अपेक्षित सहयोग प्रदान किया है, मैं उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। विशेषकर, मेरे ग्रामवासी श्री डवङ्ग रिगजिन जिसने मुझे इस ग्रन्थ की सूचना दी तथा अपनी व्यक्तिगत पाण्डुलिपि सौंपकर प्रकाशनार्थ उत्साहित किया, का हृदय से आभार प्रकट करते हुये धन्यवाद देता हूँ। अन्त में सुधी पाठकों से निवेदन है कि ग्रन्थ में रह गई त्रुटियों एवं अपने अमूल्य सुझावों से अवश्य अवगत करायें, ताकि आगे के संस्करणों में भी अपेक्षित सुधार किया जा सके।

सारनाथ

28 जुलाई, 2003

ठिनलेराम शाशनी

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

अनेन मम पुण्येन सर्वसत्त्वा अशेषतः ।
विरम्य सर्वपापेभ्यः कुर्वन्तु कुशलं सदा ॥

मा कश्चिद् दुःखितः सत्त्वो मा पापी मा च रोगितः ।
मा हीनः परिभूतो वा मा भूत् कश्चिच्च दुर्मनाः ॥

(बोधिचर्यावतार 10.31,41)

विषय-सूची

प्रकाशकीय वक्तव्य

(हिन्दी)	vii
(तिब्बती)	viii-ix
(अंग्रेजी)	x

पुरोवाक्	xi-xiii
विषय-सूची	xv-xxiii
भूमिका	xxv-xxxviii
धारणीमन्त्रसंग्रहः	1-125
(1) षडङ्गवर्द्धयन्त्रिंशत्पञ्च	
(नामसंगीतिमन्त्रः= Nāmasaṃgīti-mantraḥ)	2-4
(2) चक्रवर्त्तयन्त्रिंशत्पञ्च	
(चक्रसंवरमन्त्रः= Cakrasaṃvara-mantraḥ)	5-8
(3) हेवज्रमन्त्रं	
(हेवज्रमन्त्रः= Hevajra-mantraḥ)	9-11
(4) आर्य-अमोघपाशनामधारणी	
(आर्य-अमोघपाशनामधारणी= Ārya-Amoghapāśanāmadhārāṇī)	12-34
(5) एकादशाननधारणी	
(एकादशाननधारणी= Ekādaśānanadhārāṇī)	35-36
(6) शीलविशुद्धिधारणी	
(शीलविशुद्धिधारणी= Śīlaviśuddhidhārāṇī)	36
(7) उष्णीषविजयाधारणी	
(उष्णीषविजयाधारणी= Uśnīṣavijayādhārāṇī)	37-44

- (8) གཙུག་རྟེན་གྱི་མེད་གྱི་གཟུངས། 45-50
(उष्णीषविमलधारणी= Uṣṇīṣavimaladhārāṇī)
- (9) གྱི་མེད་གྱི་གཟུངས་ཟུང་། 51
(लघुविमलधारणी= Laghuvimala-dhārāṇī)
- (10) གསང་བ་རིང་བསྐལ་གྱི་གཟུངས། 52-55
(गुह्यधातुधारणी= Guhyadhātudhārāṇī)
- (11) བྱང་ཆུབ་གྱི་སྒྲིང་པོའི་རྒྱན་འབུམ་གྱི་གཟུངས། 55-57
(बोधिगर्भालङ्कारलक्षधारणी= Bodhigarbhālāṅkāralakṣadhārāṇī)
- (12) ཙ་ལྷགས། 57
(मूलमन्त्रः= Mūlamantraḥ)
- (13) རྟེན་འབྲེལ་སྒྲིང་པོ། 58
(प्रतीत्यसमुत्पादहृदय[मन्त्रः]= Pratītyasamutpādahṛdayamantraḥ)
- (14) ཆེ་དང་ཡེ་ཤེས་དབག་ཏུ་མེད་པའི་གཟུངས་རིང་། 58-59
(अपरिमितायुर्ज्ञानवृहद्धारणी= Aparimitāyurjñānavṛhaddhārāṇī)
- (15) ཆེ་དང་ཡེ་ཤེས་དབག་ཏུ་མེད་པའི་གཟུངས་ཟུང་། 60
(अपरिमितायुर्ज्ञानलघुधारणी= Aparimitāyurjñānalaghudhārāṇī)
- (16) ངན་སོང་སྒྲིང་པོའི་རྩ་བའི་རིག་ལྷགས། 60-61
(दुर्गतिपरिशोधनमूलविद्यामन्त्रः=Durgatipariśodhanamūlavidyā-mantraḥ)
- (17) མི་འབྲུགས་པའི་གཟུངས། 61-62
(अक्षोभ्यधारणी= Akṣobhyadhārāṇī)

- (18) དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ། 62-63
(तथागतशताक्षरम्= Tathāgataśatākṣaram)
- (19) རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ། 64-65
(वज्रसत्त्वशताक्षरम्= Vajrasattvaśatākṣaram)
- (20) ཧེརུ་ཀའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ། 65-67
(हेरुकशताक्षरम्= Herukaśatākṣaram)
- (21) མཆོད་པ་སྒྲིན་གྱི་གཟུངས། 68-69
(पूजामेघधारणी= Pujāmeghadhāraṇī)
- (22) མཆོད་རྟེན་བསྐྱོར་བའི་གཟུངས། 69
(चैत्यपरिक्रमाधारणी= Caityaparikramādhāraṇī)
- (23) ཡོན་སྦྱོང་བའི་གཟུངས། 70
(दक्षिणापरिशोधनीधारणी= Dakṣiṇāpariśodhanīdhāraṇī)
- (24) ཟུབ་དབང་གི་སྒྲིང་པོ། 71
(मुनीन्द्रहृदय[मन्त्रः]= Munīndrahṛdayamantraḥ)
- (25) སྒྲིན་རས་གཟིགས་གྱི་སྒྲིང་པོ། 71
(अवलोकितेश्वरहृदय[मन्त्रः]= Avalokiteśvarahṛdayamantraḥ)
- (26) འཇམ་དབྱངས་གྱི་སྒྲིང་པོ། 72
(मञ्जुश्रीहृदय[मन्त्रः]= Mañjuśrīhṛdayamantraḥ)
- (27) ཐུག་རྡོར་གྱི་སྒྲིང་པོ། 72
(वज्रपाणिहृदय[मन्त्रः]= Vajrapāṇihṛdayamantraḥ)

- (28) འཇམ་དབྱངས་འགྲོ་བ་སྒྲིན་གྱེད། 73
(मञ्जुश्री-अरपचन[हृदयमन्त्रः]=Mañjuśrī-arapacanahr̥dayamantraḥ)
- (29) མི་གཡོ་བའི་སྤྱིང་པོ། 73
(अचलहृदय[मन्त्रः]=Acalahr̥dayamantraḥ)
- (30) སྒྲོལ་མའི་གཟུངས། 74
(ताराधारणी= Tārādhārāṇī)
- (31) འོད་ཟེར་ཅན་མའི་གཟུངས། 74-75
(मारीचीधारणी= Mārīcīdhārāṇī)
- (32) སོ་སོར་འབྲང་མའི་གཟུངས། 75
(प्रतिसराधारणी= Pratisarādhārāṇī)
- (33) བདྲ་གཙུག་ཏོར་གྱི་གཟུངས། 75
(पद्मोष्णीषधारणी= Padmoṣṇīṣadhārāṇī)
- (34) རྣམ་སྤྲུལ་གྱི་གཟུངས། 76
(वैश्रवणधारणी= Vaiśravaṇadhārāṇī)
- (35) འཕགས་པ་སྟོང་ཕྱག་བརྒྱ་བའི་སྤྲུལ་སྤྱོད། 76-78
(आर्यशतसाहस्रिकामन्त्रः= Āryaśatasāhasrikāmantraḥ)
- (36) ཤེས་རབ་གྱི་པ་རྩལ་དུ་བྱེན་པ་སྟོང་ཕྱག་ཉི་ལྔ་ལྟ་བུ་བའི་སྤྲུལ་སྤྱོད། 78-79
(पञ्चविंशतिसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्रः= Pañcaviṃśatisāhasrikāprajñā-pāramitāmantraḥ)
- (37) ཤེས་རབ་གྱི་པ་རྩལ་དུ་བྱེན་པ་བརྒྱད་སྟོང་བའི་སྤྲུལ་སྤྱོད། 80
(अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्रः= Aṣṭasāhasrikāprajñāpāramitāmantraḥ)

- (38) ཤེས་རབ་སྒྲིང་པོའི་སྒྲགས། 80-81
(प्रज्ञापारमिताहृदयमन्त्रः= Prajñāpāramitāhṛdayamantraḥ)
- (39) བ་ལྟོ་ཏུ་སྒྲིན་བ་དུག་གི་སྒྲིང་པོའི་གཟུངས། 81-82
(षट्पारमिताहृदयधारणी= Ṣaṭpāramitāhṛdayadhāraṇī)
- (40) བུམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས། 82-83
(मैत्रेयप्रतिज्ञाधारणी= Maitreyapratijñādhāraṇī)
- (41) བར་དུ་གཙོད་པ་སེལ་བའི་རིག་སྒྲགས། 83-84
(विघ्नविनायकविद्यामन्त्रः= Vighnavināyakavidyāmantraḥ)
- (42) བདུད་སྒྲིག་པར་བྱེད་པའི་སྒྲགས། 84
(मारत्रासकरीमन्त्रः= Māratrāsakarīmantraḥ)
- (43) བཅིངས་པ་ལས་གྲོལ་བའི་སྒྲགས། 85
(बन्धमोचनीमन्त्रः= Bandhamocanīmantraḥ)
- (44) བལ་པོ་ཆེ་གཟུང་བར་འགྱུར་བའི་སྒྲགས། 85-86
(अवतंसकधारिकामन्त्रः= Avatamsakadhārikāmantraḥ)
- (45) ཉིང་ངེ་འཛིན་ལྷུ་པོའི་མདོའི་སྒྲགས། 86-87
(समाधिराजसूत्रमन्त्रः= Samādhirājasūtramantraḥ)
- (46) ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པའི་སྒྲགས། 87
(प्रज्ञोत्पन्नामन्त्रः= Prajñotpannāmantraḥ)
- (47) སྒྲོང་འགྱུར་གྱི་སྒྲགས། 88-89
(सहस्रवर्तिमन्त्रः= Sahasravartimantraḥ)

- (48) ཐུག་བྱ་བའི་སྒྲགས། 89
(वन्दनामन्त्रः= Vandanāmantraḥ)
- (49) སྒྲིག་པ་ཐམས་ཅད་ནི་བར་བྱེད་བའི་སྒྲགས། 90
(सर्वपापशमनीमन्त्रः= Sarvapāpaśamanīmantraḥ)
- (50) དཀོན་ཅོག་གི་རྟེན་ལ་སྒྲོར་བ་བྱེད་བའི་སྒྲགས། 90-91
(त्रिरत्नाश्रयप्रदक्षिणामन्त्रः= Triratnāśrayapradakṣiṇāmantraḥ)
- (51) ཆོག་བཙན་བའི་སྒྲགས། 91
(वचनप्रभावकरीमन्त्रः= Vacanaprabhāvakarīmantraḥ)
- (52) ངན་སོང་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བའི་སྒྲགས། 91-92
(सर्वदुर्गतिपरिशोधनमन्त्रः= Sarvadurgatipriśodhanamantraḥ)
- (53) སྒྲན་གཏོང་བའི་ཆེ་སྒྲན་ལ་གདབ་བའི་སྒྲགས། 92
(भैषज्यदाने भैषज्याभिमन्त्रणमन्त्रः= Vaiṣajyadāne bhaiṣajyābhimantraṇa-
mantraḥ)
- (54) ནད་ཐམས་ཅད་རབ་དུ་ནི་བར་བྱེད་བའི་སྒྲགས། 93
(सर्वव्याधिप्रशमनीमन्त्रः= Sarvavyādhipraśamanīmantraḥ)
- (55) ཡོན་ཏན་བསྒྲགས་པ་དཔག་དུ་མེད་བའི་སྒྲགས། 93-94
(अपरिमितगुणानुशंसामन्त्रः= Aparimitagunānuśamsāmantraḥ)
- (56) ཆོས་སྦྱོང་རབ་གསལ་གྱི་སྒྲགས་གོང་དུ་མ་འཇུག་བ་རྣམས། 95
(पूर्व-असंगृहीतधर्मचर्याप्रकाशकमन्त्रः= Purvāsamgrhītadharmacaryāprakā-
śakamantraḥ)

- (57) སྐྱུ་ཁྲུས་གསོལ་བའི་སྒྲགས། 96
(कायस्नानमन्त्रः= Kāyasnānamantraḥ)
- (58) ལྷ་སྦྱིན་གྱི་སྒྲགས། 96
(जलदानमन्त्रः= Jaladānamantraḥ)
- (59) རྩ་སྦྱལ་སེར་པོའི་སྒྲགས། 97
(पीतजम्भलमन्त्रः= Pītajambhālanmantraḥ)
- (60) རྩ་སྦྱལ་ནག་པོའི་ལྷ་སྦྱིན་གྱི་སྒྲགས། 98
(कृष्णजम्भलजलदानमन्त्रः= Kṛṣṇajambhālajaladānamantraḥ)
- (61) བདུད་ཅི་འབྱིལ་བའི་སྒྲགས། 98
(अमृतकुण्डलीमन्त्रः= Amṛtakuṇḍalīmantraḥ)
- (62) མ་དག་བ་སྦྱང་བའི་སྒྲགས། 99
(अशुद्धशोधनमन्त्रः= Aśuddhaśodhanamantraḥ)
- (63) མི་གཡོ་བའི་གཏོར་སྒྲགས། 99
(अचलबलिमन्त्रः= Acalabalīmantraḥ)
- (64) སྦྱོལ་མའི་གཏོར་མ་འབུལ་བའི་སྒྲགས། 99-100
(ताराबल्यर्पणमन्त्रः= Tārābalyarpanamantraḥ)
- (65) སྐུ་གཏོར་གྱི་སྒྲགས། 100-102
(नागबलिमन्त्रः= Nāgabālīmantraḥ)
- (66) སུརུ་བའི་སྒྲགས། 102-103
(सुरूपमन्त्रः= Surūpamantraḥ)

- (67) སྤྱད་མཆོད་འབུལ་བའི་སྔགས། 103-104
(अग्रपूजार्पणमन्त्रः= Agrapūjārpaṇamantraḥ)
- (68) ཆང་བྱའི་སྔགས། 104-105
(पिण्डमन्त्रः= Pindamantraḥ)
- (69) སྦྱང་བ་ཆོས་ཉིད་རྣམ་པར་དག་བའི་སྔགས། 106
(शोधनधर्मताविशुद्धिमन्त्रः= Śodhanadharmatāviśuddhimantraḥ)
- (70) སྦྱེལ་བ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་སྔགས། 106
(संवर्द्धनगगनगञ्जमन्त्रः= Saṃvarddhanagaganagañjamantraḥ)
- (71) སྦྱོད་པར་དབང་བ་སྔགས་ལྟན་འོད་ཀྱི་སྔགས། 107
(चर्यावशितावेगवदंशुमन्त्रः= Caryāvaśitāvegavadamśumantraḥ)
- (72) ཡེ་ཤེས་སྐར་མདའི་སྔགས། 107
(ज्ञानोल्कामन्त्रः= Jñānolkāmantraḥ)
- (73) དབང་བསྐྱར་འཁོར་ལོའི་སྔགས། 108
(वशिताचक्रमन्त्रः= Vaśitācakramantraḥ)
- (74) (ཡང་) ཐུ་གཏོར་ལུགས་གཅིག་གི་སྔགས། 108
(पुनः आम्यायान्तरेण जलबलिमन्त्रः= Punah āmnāyāntareṇa jalabali-
mantraḥ)
- (75) སྦྱ་གཏོར་གྱི་སྔགས། 109
(नागबलिमन्त्रः= Nāgabalimantraḥ)
- (76) ལྷ་མོ་འོད་ཟེར་ཅན་གྱི་སྔགས། 109
(मारीचीदेवीमन्त्रः= Māricīdevīmantraḥ)

- (77) ཐུགས་སྐྱོང་བཅུདི་སྒྲགས། 110-112
(दशदिक्पालमन्त्रः= Daśadikpālaṃantraḥ)
- (78) ཐེ་བརྒྱད་ཀྱི་སྒྲགས། 112
(अष्टसेनमन्त्रः= Aṣṭasenamantraḥ)
- (79) འབྲུང་གཏོར་གྱི་སྒྲགས། 113
(भूतबलिमन्त्रः= Bhūtabalimantraḥ)
- (80) ལྷ་ལྷི་གཟུངས། 113-121
(छ छ [सञ्चक]धारणी= Sañcakadhārāṇī)
- (81) མཐོན་མེདི་སྒྲགས། 122-123
(महाकालमन्त्रः= Mahākālaṃantraḥ)
- (82) ལྷ་མེདི་སྒྲགས། 123
(देवी[महाकाली]मन्त्रः= Devi [Mahākālī]mantraḥ)
- (83) བསྐྱོ་བའི་ཆོགས་བཅད། 124
(परिणामनाशलोकाः= Pariṇāmanāślokāḥ)

तथतां च महादेवीं बुद्धबोधिं नमाम्यहम् ।
वसुमतीं महालक्ष्मीं रत्नज्वालां नमे नमे ॥

उष्णीषविजयां देवीं मारीचीं पर्णशाबरीम् ।
जाङ्गुलिं धारणीं वन्दे अनन्तमुखधारणीम् ॥

चुन्दां प्रज्ञां च पद्मां च सर्वावरणशोधनीम् ।
अक्षयज्ञानकारण्डं धर्मकायवतीं नमे ॥

(धर्मधातुवागीश्वरमण्डलस्तोत्रम् 17-19)

महायान बौद्ध वाङ्मय में धारणियों का अत्यन्त महत्त्व है। धारणियों को बुद्धवचन ही माना गया है। धारणी-मन्त्र बुद्धवचन होने के कारण इनकी अमोघता पर संदेह नहीं किया जा सकता। धारणियों को मन्त्रात्मक वाणियाँ ही मानना चाहिए। भोट आचार्यों ने भी धारणियों का संकलन तन्त्रवर्ग के अन्तर्गत क-ग्युर (बुद्धवचन) में किया है।¹ सद्धर्म-पुण्डरीक (धारणीपरिवर्त) में भी धारणीमन्त्रों को असंख्य बुद्धों द्वारा भाषित कहा है। इन धारणीमन्त्रों के द्वारा ऐहिक सुख-शान्ति की प्राप्ति, दुःख-बाधाओं से निवृत्ति तथा सद्गति और अन्ततोगत्वा कर्म और क्लेश के बन्धन से मुक्त होकर परमपद की भी प्राप्ति हो सकती है। भारत के पड़ोसी देश तिब्बत, भूटान, नेपाल, चीन, ताइवान, जापान, कोरिया तथा भारत के सीमान्तवर्ती बौद्ध क्षेत्रों में इन धारणीमन्त्रों का अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास के साथ पाठ किया जाता है। विशेषकर सामान्यजनों का धारणीमन्त्रों के पाठ करने से ऐहिक सुख-शान्ति एवं सद्गति की प्राप्ति में अटूट विश्वास है।

ऐसा प्रतीत होता है कि चीन आदि देशों में धारणी एवं मन्त्रों का प्रचलन उन देशों में बौद्धधर्म के प्रवेश के साथ ही हुआ होगा। चीन में श्रीमित्र ने (ई० 307-42) महामायूरी आदि अनेक धारणियों का अनुवाद किया है। बाद में अतिगुप्त ने भी ई० 654 में धारणी-समुच्चयसूत्र (T.901, K. 308) नामक ग्रन्थ का अनुवाद किया है। इसीप्रकार 2 जापान के होर्युजी विहार में भी 7वीं शताब्दी के प्रारम्भ से उष्णीषविजयाधारणी तथा प्रज्ञापारमिता-हृदयसूत्र तालपत्रों में सुरक्षित हैं। नेपाल में भी प्रारम्भ से ही धारणियों का अत्यन्त प्रचलन रहा है। नेपाल के बौद्ध समाज में भी धारणियाँ ऐहिक सुख एवं शान्ति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। यहाँ विशेषकर, पञ्चरक्षाधारणी नाम से प्रसिद्ध महाप्रतिसरा, महासाहस्रप्रमर्दिनी, महामायूरी, महाशीतवती तथा महारक्षा-मन्त्रानुसारिणी जो विभिन्न रोगों, विषैले जानवरों, बुरी आत्माओं एवं ग्रहों आदि तथा पाप का शमन करने वाली हैं का अत्यन्त श्रद्धा के साथ पाठ किया जाता है। नेपाल के विहारों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों एवं व्यक्तिगत संग्रहों में धारणीमन्त्रों के अनेक संग्रह प्राप्त होते हैं, लेकिन अधिकांश पाण्डुलिपियों तक ही सीमित हैं। अभी तक सम्भवतः इन धारणीमन्त्रों का कोई शोधात्मक सम्पादन नहीं हुआ है।

1. इमानि भगवन् मन्त्रधारणीपदानि द्वाष्टिभिर्गङ्गानदीवालुकासमैर्बुद्धैर्भगवद्भिर्भाषितानि। (धारणी परिवर्त) पृ० 406, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1966.
2. The Tantric Ritual of Japan, p. 21

अनेक बौद्ध विद्वानों ने धारणीमन्त्रों का समय ई० पू० 100-400 ई० तक माना है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भी मन्त्रयान के रूप में अलग यान मानकर मन्त्र के विकासक्रम को दर्शाते हुये निम्नकालों में विभाजित किया है—1. सूत्ररूप में मन्त्र—ई० पू० 400-100, 2. धारणी-मन्त्र—ई० पू० 100-400 ई०, तथा 3. मन्त्र-मन्त्र—ई० 400-700; लेकिन धारणीमन्त्रों को बुद्धभाषित माना जाता है, इसलिए बुद्धवचनों को कालों में विभाजित कर इतिहास के विकासक्रम में अध्ययन करना कहाँ तक समीचीन होगा, विचारणीय है। इसीप्रकार डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य ने भी धारणियों में मन्त्रों के विकास का विस्तार से विवेचन करते हुए अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता का विकास क्रमशः प्रज्ञा-पारमिताहृदयसूत्र, प्रज्ञापारमिताधारणी, प्रज्ञापारमितामन्त्र के क्रम से 'प्र' नामक बीजाक्षर में माना है।

महायानसूत्रों के साथ धारणियों का समावेश अनेक रूपों में देखा जा सकता है। ललितविस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक और लंकावतारसूत्र आदि अनेक महायान के ग्रन्थों में धारणीपदों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि धारणियों का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है; किन्तु, अनेक धारणियाँ सूत्र ग्रन्थों के साथ भी समाविष्ट हैं। महायानसूत्र दिव्यावदान में 'ॐ मणिपद्मे हूँ' जैसे सुप्रसिद्ध अवलोकितेश्वरहृदयमन्त्र उपलब्ध है। महायानसूत्रों के अतिरिक्त तन्त्र ग्रन्थों में भी धारणियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं।

सद्धर्मपुण्डरीक नामक ग्रन्थ में भैषज्यराज ने सद्धर्मपुण्डरीक धर्मपर्याय को कण्ठगत एवं पुस्तकगत करके धारण करने वाले कुलपुत्र एवं कुलपुत्री के हित, सुख, अनुकम्पा, रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-पदों को कहा है और भगवान ने इसका अनुमोदन किया है। इन धारणी-पदों के बारे में भैषज्यराज आदि ने कहा है कि ये धारणी-मन्त्र असंख्य तथागत, अर्हत् एवं सम्यक्संबुद्धों के द्वारा कहे गये हैं, तथा वह उन सभी भगवान् बुद्धों का द्रोही होगा, जो इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकारके सूत्रान्तधारकों का अपमान करेगा। इस संदर्भ में ¹सद्धर्मपुण्डरीक (धारणीपरिवर्त) में उल्लिखित वचन इस

1. अथ खलु भैषज्यराजो बोधिसत्त्वो महासत्त्वस्तस्यां वेलायां भगवन्तमेतदवोचत्। दास्यामो वयं भगवन्तेषां कुलपुत्राणां कुलदुहितृणां वा येषामयं सद्धर्मपुण्डरीको धर्मपर्यायः कायगतो वा स्यात् पुस्तकगतो वा रक्षावरणगुप्तये धारणीमन्त्रपदानि। तद्यथा—“अन्ये मन्ये मने-----अमन्यनताये स्वाहा।” इमानि भगवन् मन्त्रधारणीपदानि द्वाषष्टिभिर्गङ्गानदीबालुकासमैर्बुद्धैर्भगवद्भिर्भाषितानि। ते सर्वे बुद्धा भगवन्तस्तेन दुग्धाः स्युर्य एवंरूपान् धर्मभाणकानेवंरूपान् सूत्रान्तधारकानतक्रामेत्। अथ खलु भगवान् भैषज्यराजाय बोधि-सत्त्वाय महासत्त्वाय साधुकारमदात्। साधु साधु भैषज्यराज सत्त्वानामर्थः कृतो धारणीपदानि भाषितानि सत्त्वानामनुकम्पामुपादाय रक्षावरणगुप्तिः कृता।-----अथ खलु वैश्रवणो महाराजो भगवन्तमेतदवोचत्। अहमपि भगवन् धारणीपदानि भाषिष्ये तेषां धर्मभाणकानां हिताय सुखायानुकम्पायै रक्षावरणगुप्तये। तद्यथा—“अट्टे तट्टे नट्टे वनट्टे अनड्डे नाडि कुनडि स्वाहा।” एभिर्भगवन् धारणीपदैस्तेषां धर्मभाणकानां

प्रकार हैं—“महासत्त्व बोधिसत्त्व भैषज्यराज भगवान् से यह बोले—वे कुलपुत्र या कुलकन्याएँ जो इस सद्धर्मपुण्डरीक नामक धर्मपर्याय को कण्ठगत या पुस्तकगत कर रखती हैं, उनकी रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-मन्त्र के पदों को देंगे, वे इस प्रकार हैं—“अन्ये मन्ये मने ममने-----अमन्यनताये स्वाहा।” हे भगवन्! ये धारणी-मन्त्र के पद बासठ गंगा नदियों की बालुका के समान (असंख्य) भगवान् बुद्धों के द्वारा कहे गये हैं। वह उन सभी भगवान् बुद्धों का द्रोही होगा, जो इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों का अपमान करेगा। तदनन्तर भगवान् ने महासत्त्व बोधिसत्त्व भैषज्यराज को साधुवाद दिया—हे भैषज्यराज! तुमने बहुत अच्छा किया है। प्राणियों पर दया करके उन धारणीपदों को कहकर तुमने उनका हित किया और उन प्राणियों की रक्षा, आवरण एवं गुप्ति की।---तत्पश्चात् महाराज वैश्रवण भगवान् से यह बोले— हे भगवन्! मैं भी उन धर्मभाणकों के हित, सुख, अनुकम्पा, रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-पदों को कहूँगा। वे इस प्रकार हैं—‘अट्टे तट्टे नट्टे वनट्टे अनट्टे नाडि कुनडि स्वाहा।’ हे भगवन्! इन धारणीपदों के द्वारा मैं सौ योजन से उन धर्मभाणक पुद्गलों की रक्षा करता हूँ तथा इस प्रकार उन कुलपुत्रों एवं कुलपुत्रियों तथा इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों की रक्षा हो जायगी एवं कल्याण होगा। तदनन्तर-----महाराज विरूढक भगवान् से बोले—हे भगवन्! मैं भी बहुजनहिताय बहुजनसुखाय तथा इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों की रक्षा आवरण एवं गुप्ति के लिए इस धारणीमन्त्र के पदों को कहूँगा। यथा— ‘अगणे गणे गौरि गन्धारि चण्डालि मातङ्गि पुक्कसि संकुले वूसलि सिसि स्वाहा।’ हे भगवन्! ये वे धारणी-मन्त्र के पद हैं, जिनको बयालीस कोटि बुद्धों ने कहा था। वह उन सबका द्रोही होगा, जो इस प्रकार के धर्मभाणकों का अपमान करेगा।” इत्यादि।

अतः उपर्युक्त सूत्रग्रन्थ में उल्लिखित वचनों से निश्चित है कि धारणियाँ बुद्धोक्त हैं और धारणीमन्त्रों के द्वारा प्राणियों की रक्षा, आवरण एवं गुप्ति आदि होती है। चन्द्रकीर्ति विरचित गुह्यसमाजतन्त्र की टीका 'प्रदीपोद्योतन' में 'बुद्धसैन्यमपि क्रुद्धं नाशं गच्छेन्न संशयः'

पुद्गलानां रक्षां करोमि योजनशताच्चाहं तेषां कुलपुत्राणां कुलदुहितृणां चैवरूपाणां सूत्रान्तधारकाणां रक्षा कृता भविष्यति स्वस्त्ययनं कृतं भविष्यति। अथ खलु विरूढको महाराजो-----भगवन्तमेतदवोचत्। अहमपि भगवन् धारणीपदानि भाषिष्ये बहुजनहिताय तेषां च तथारूपाणां धर्मभाणकानामेवरूपाणां सूत्रान्तधारकाणां रक्षावरणगुप्तये धारणीमन्त्रपदानि। तद्यथा—“अगणे गणे गौरि गन्धारि चण्डालि मातङ्गि पुक्कसि संकुले वूसलि सिसि स्वाहा।” इमानि तानि भगवन् धारणीमन्त्रपदानि यानि द्वाचत्वारिंशद्भिर्बुद्धकोटीभिर्भाषितानि। ते सर्वे तेन दुग्धाः स्युर्यस्तानेवरूपान् धर्मभाणकानतिक्रमेत्। पृ० 406-408, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1966.

1. बुद्धास्तन्त्रमन्त्रकुशलाः तेषां सैन्यं वृद्धं क्रुद्धं प्रत्यर्थिभूतं नाशयेदनुशासयेत्, नात्र संशयः। (गुह्यसमाजतन्त्र-प्रदीपोद्योतनटीका षट्कोटिव्याख्या, 13वाँ पटल, पृ० 134)

गुह्यसमाजतन्त्र (13.65) के इस वचन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए—बुद्धों को तन्त्र और मन्त्र में कुशल कहा है। दूसरी ओर, मन्त्र को तन्त्रशास्त्र का हृदय एवं अन्तर्भाग माना जाता है। तन्त्रों में मन्त्र और मुद्रा के द्वारा साधना कर सिद्धि प्राप्त की जाती है।

¹कुरुकुल्लाकल्प में बोधिसत्त्वों के द्वारा सत्त्वों के अनुत्पन्न स्वभाव होने के कारण मन्त्रों की सिद्धियाँ कैसे सिद्ध होती हैं तथा मण्डल आदि की भावना कैसे संभव है, ऐसा पूछने पर वज्रपाणि ने उत्तर में कहा है—प्रतीत्यसमुत्पाद नियम से अर्थात् हेतु और प्रत्ययों की अपेक्षा से जैसे सभी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, उसी प्रकार मन्त्र और मुद्रा आदि की अपेक्षा से सिद्धियाँ सिद्ध होती हैं। मन्त्र अपात्र (अयोग्य) लोगों के लिए गोपनीय होने से गुह्य है। तन्त्रशास्त्र में मन्त्र को गोपनीय रूप से सिद्ध करने का विधान है। इसलिए बौद्ध एवं बौद्धेतर सभी तन्त्रों में मन्त्र की विशेष महत्ता मानी गयी है।

बौद्धतन्त्र के विविध ग्रन्थों, विशेषतः अनुत्तरतन्त्र के ग्रन्थों में मन्त्र के अनेक व्युत्पत्ति परक अर्थ दिये हैं। उन्हीं के आधार पर यहाँ मन्त्र को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। सामान्यतः बौद्ध तन्त्र ग्रन्थों में मन की रक्षा(त्राण) करने से ही मन्त्र कहा गया है। ज्ञानसिद्धि में आचार्य इन्द्रभूतिपाद ने गुह्यसमाजतन्त्र के वचन 'मन्त्रसत्त्वेनेति' (16.15) को स्पष्ट करते हुए—²मन का त्राण होने से मन्त्रज्ञान को सम्यग्ज्ञान के रूप में निर्देश किया है। वास्तव में मन का त्राण होना ही मन्त्र का उपयोग है। आचार्य तथागतारक्षित विरचित योगिनीसञ्चारतन्त्रनिबन्ध में ³तत्त्व का मनन करने से और जगत का त्राण(रक्षा) करने से मन्त्र कहा है।

आर्यदेव ने अपने ग्रन्थ चर्यामेलापकप्रदीप में गुह्यसमाजतन्त्र के वचन को उद्धृत कर मन्त्र को इस तरह से परिभाषित किया है—

प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ।

तन्मनस्त्वशीतिख्यातस्त्रकारस्त्राणनार्थतः ॥ (पृ० 44)

1. बोधिसत्त्वाः प्रोचुः—

कथं मन्त्राः कथं तन्त्रः कथं मण्डलभावना ।

तत्कथं सिद्धयः सिद्धाः सत्त्वानुत्पत्तिकारणात् ॥

वज्रपाणिराह—

प्रतीत्यसमुत्पन्नानि वस्तूनि सम्भवन्ति हि ।

प्रतीत्यमन्त्रमुद्राद्यं सिद्धयः सम्भवन्ति तत् ॥ (कुरुकुल्लाकल्पे, तृतीयकल्पः, पृ० 15)

2. मनस्त्राणभूतत्वात् मन्त्रज्ञानं सम्यग्ज्ञानं निदर्शितमित्यर्थः। (ज्ञानसिद्धिः, 15वाँ पटल, पृ० 137)

3. तत्त्वमननाजगत्त्राणाच्च मन्त्रः। (योगिनीसञ्चारतन्त्रनिबन्ध, पृ० 95)

अर्थात् इन्द्रियों और विषयों की अपेक्षा से जो मन उत्पन्न होता है, वह मन(सूक्ष्म विकल्प चित्त) अस्सी प्रकार का है, तथा 'त्रकार' त्राणार्थक, अर्थात् उसकी त्राण(रक्षा) के लिए है।

आर्यदेव ने इसी ग्रन्थ में चित्तविवेक के संदर्भ में मन के स्वभाव को स्पष्ट करते हुए श्रीज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्र के वचन जिसमें भगवान ने प्रभास्वर से उद्भव विज्ञान को ही चित्त या मन कहा है, जो सभी धर्मों के संक्लेश और व्यवदान के मूल हैं, आदि का विस्तार से वर्णन करते हुए महायान में वर्णित परिकल्पित, परतन्त्र और परिनिष्पन्न तथा राग, द्वेष और मोह आदि तीन-तीन चित्तभेदों को वज्रयान में पर्याय के रूप में वर्णित आलोक, आलोकाभास और आलोकोपलब्धि, शून्य, अतिशून्य और महाशून्य, चित्त, चैतसिक और अविद्या, राग, विराग और मध्यराग आदि प्रत्येक का स्वरूप एवं लक्षण विस्तार से विवेचित कर प्रज्ञाज्ञान प्रकृति के 33, उपायज्ञान प्रकृति के 40 तथा आलोकोप-लब्धज्ञान प्रकृति के 7, कुल 80 क्षणों के नाम भी गिनाये हैं। ये ही 80 बिम्बप्रकृतियाँ 98 क्लेशों में बदल जाती हैं और फिर 62 दृष्टिप्रकृतियाँ हो जाती हैं। ये 80 प्रकार की चित्त की प्रकृतियाँ स्त्री-पुरुष योनिभेद से सम्पूर्ण प्राणियों में रहती हैं।

1गुह्यसमाजतन्त्र में मन्त्रचर्या के संदर्भ में भाषित मन्त्र की व्युत्पत्ति ही अधिकाँश बौद्ध तन्त्रग्रन्थों में उद्धृत मिलती है। भोटदेश के विद्वान बुस्तोन ने भी अपने ग्रन्थ 2“सामान्य एवं संक्षिप्तव्यवस्था तन्त्रोपन्यासरत्ननिधिद्वारोद्घाटककुञ्जी” में मन्त्र की व्युत्पत्ति के प्रसंग में गुह्यसमाजतन्त्र के इसी वचन को उद्धृत कर मन्त्र के स्वरूप को स्पष्ट किया है। लेकिन स्वामी द्वारिकादास शास्त्री द्वारा सम्पादित गुह्यसमाजतन्त्र(18.70) के 'कारकत्राणनार्थतः' की जगह बुस्तोन तथा आर्यदेव इन दोनों आचार्यों के द्वारा उद्धृत गुह्यसमाजतन्त्र के वचन में 'त्रकारस्त्राणनार्थतः' पाठ है, जो मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति की दृष्टि से भी समीचीन लगता है। यद्यपि गुह्यसमाजतन्त्र(18.70) के उपर्युक्त श्लोक की टिप्पणी में भी 'तकार' पाठ उल्लिखित है। संभवतः लिपि दोष के कारण 'त्रकार' के स्थान पर 'तकार' पढ़ा गया। दूसरी ओर, चर्यामेलापकप्रदीप में उद्धृत इसी श्लोक के 'तन्मनो मननं ख्यातं' की जगह 'तन्मनस्त्वशीतिख्यातः' पाठ है। बुस्तोन के उपर्युक्त ग्रन्थ में उद्धृत गुह्यसमाजतन्त्र के वचन का अनुवाद इस प्रकार है—

1. प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ॥
तन्मनो मननं ख्यातं कारकत्राणनार्थतः ।
लोकाचारविनिर्मुक्तं यदुक्तं समयसंवरम् ॥
पालनं सर्ववज्रैस्तु मन्त्रचर्येति कथ्यते । (गुह्यसमाजतन्त्र, 18.69-71)
2. बुस्तोन सुङ्-बुम, 'फ', पृ० 900.

प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ।

तन्मनो मननं ख्यातं त्रकारस्त्राणनार्थतः ॥

अर्थात् इन्द्रियों और विषयों की अपेक्षा से जो मन उत्पन्न होता है, वह मन मननात्मक है और त्रकार त्राण(रक्षा) करने वाला है। यहाँ मन्त्र शब्द में 'मन्' धातु ज्ञानार्थक है। अर्थात् तत्त्व को जानने वाली प्रज्ञा है। 'त्र' लोक की रक्षा या पालन करने वाली महाकरुणा है। इन दोनों की अभिन्नता ही मन्त्र है। इससे काय, वाक् तथा चित्त तीनों की रक्षा होती है।

आचार्य नड़पाद विरचित सेकोद्देशटीका(पृ० 69) एवं भिक्षु रविश्रीज्ञान विरचित अमृतकणिकानामसंगीतिटिप्पणी(पृ० 88) में मूलतन्त्र (कालचक्र) नाम से उद्धृत यह वचन भी मन्त्र के इसी आशय को स्पष्ट करता है—

कायवाक्चित्तधातूनां त्राणभूतो यतस्ततः ।

मन्त्रार्थो मन्त्रशब्देन शून्यताज्ञानमक्षरम् ॥

पुण्यज्ञानमयो मन्त्रः शून्यताकरुणात्मकः ।

अर्थात्—काय, वाक् एवं चित्त धातुओं की जिससे रक्षा होती है, उस मन्त्र शब्द के द्वारा अक्षरशून्यताज्ञान रूपी मन्त्रार्थ को कहा है। पुण्य एवं ज्ञान (संभार) स्वभाव वाला यह मन्त्र शून्यताकरुणात्मक (स्वरूप) है।

बुस्तोन के उपर्युक्त ग्रन्थ में ही 'अन्यत्र भी कहा है', ऐसा कहकर मन्त्र के सम्बन्ध में यह वचन उद्धृत है— "1सांसारिक दुःखों से विना किसी कष्ट के शीघ्र पार कराने से, श्रावक आदि हीनबुद्धि वालों को त्रासित करने से, बुद्ध और बोधिसत्त्वों द्वारा स्तुति, सत्कार और प्रशंसा करने से तथा तत्त्व के अर्थ का अविपर्यास निर्देश होने से मन्त्र कहलाता है।" इनके अतिरिक्त भी मन्त्र की अनेक व्युत्पत्तियाँ बौद्धतन्त्र के आगम एवं टीका ग्रन्थों में मिलती हैं। महापण्डित रत्नाकरशान्तिपाद विरचित महामायातन्त्र की गुणवती टीका में 2तत्त्वद्योतक वचन को मन्त्र कहा है। इसीप्रकार 3गुह्यसमाजतन्त्र तथा आचार्य भवभट्ट(द्र) विरचित 4चक्रसंवरतन्त्र की टीका में भी तत्त्व की ओर प्रेरित करने वाले वचन को मन्त्र कहा है। श्रीकृष्णाचार्यपाद विरचित 5हेवज्रतन्त्र की टीका योगरत्नमाला के अनुसार

1. बुस्तोन सुङ्-बुम, 'फ', पृ० 900.
2. तत्त्वद्योतकं वचनं मन्त्रः। (महामायातन्त्रटीका, पृ० 27)
3. मन्त्रं मन्त्रमिति प्रोक्तं तत्त्वचोदनभाषणम्। (गुह्यसमाजतन्त्र, 18.74)
4. मन्त्रस्तत्त्वचोदनं भाषणम्। (चक्रसंवरतन्त्र(सटीक), भाग-1, पृ० 505)
5. परमार्थमननात् जगत्त्राणनाच्च मन्त्रः। परमार्थबोधिचित्तं मन्त्रः, मन्त्रनिष्पन्दत्वात्। (पृ० 11a)

परमार्थ का मनन करने से और जगत् का त्राण करने से मन्त्र कहा है। साथ ही, परमार्थ बोधिचित्त को भी मन्त्र कहा है।

इसीप्रकार 'मन्' का अर्थ सहजसुख से सम्पन्न तत्त्वज्ञान भी है और 'त्र' का अभिप्रेत अर्थ सभी जीवों को सांसारिक दुःखों से त्राण चाहने वाली महाकरुणा है। हेवज्रतन्त्र के टीकाकार मन्त्र के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं—¹मनन और त्राण करने से मन्त्र कहलाता है, तथा शून्यताकरुणाऽद्वय स्वभाव वाला बोधिचित्त ही मन्त्र है। ²अमृतकणिका में मन्त्र से मन की रक्षा एवं सुख का व्यापार होने के साथ-साथ गुह्य रूप से सिद्ध होने के कारण गोपनीय मन्त्रणा के अर्थ में भी इसे परिभाषित किया है। अर्थात् मन्त्र को अपात्र लोगों के लिए गोपनीय होने से गुह्य कहा है। ³बुस्तोन ने उपर्युक्त ग्रन्थ में मन्त्र की गोपनीयता के प्रसंग में श्रद्धाकरवर्मा के योगानुत्तरतन्त्रार्थावतार (तो० 3713) नामक ग्रन्थ के वचन को उद्धृत किया है, तदनुसार—“गुह्य रूप से सिद्ध होने के कारण मन्त्र को गुह्य कहा है तथा इससे तन्त्र की साधना में महान् फल प्राप्त होता है।”

⁴चर्याव्रती श्रीकृष्णाचार्य ने वसन्ततिलक में नाद को ही मन्त्र कहा है। वसन्ततिलक के टीकाकार आचार्य वनरत्न इसे स्पष्ट करते हुए कहते हैं—⁵नाभिदेश से उच्चरित ऊर्ध्व-गतिशील प्राणवायु ही सभी मन्त्रों का हेतु(जनक) होने से मन्त्र कहलाता है। तथा ⁶नाभिदेश से उच्चरित यह महानाद ही वर्ण, पद, वाक्य और महावाक्य के क्रम से चतुरशीति धर्मस्कन्ध के रूप में अपना विस्तार कर लेता है। यह नादात्मक व्यापार ही मन्त्र का वास्तविक रूप है। ⁷सेकोद्देशटीका के अनुसार प्राणसंयम ही मन्त्रजाप कहलाता है। वस्तुतः दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ उल्लसित हुआ नाद ही मन्त्र है। मन्त्रों को मात्र अक्षर या शब्दों का समूह समझना अनुचित होगा, क्योंकि मन्त्र वर्णों का समूहमात्र नहीं है, अपितु ⁸परमाक्षरज्ञान स्वरूप परमतत्त्व ही है। ⁹वसन्ततिलक की टीका में भी कहा

1. मननात् त्राणनाच्च मन्त्रः, शून्यताकरुणाद्वयस्वभावं बोधिचित्तम्। (हेवज्रतन्त्रटीका, पृ० 9a)
2. मन[स]स्त्राणभूतत्वान्मन्त्रं सुखमुदाहृतमिति। ---‘मन्त्रि-गुप्तभाषणे’ इत्यपि पाठः। (अमृतकणिकानाम-संगीतिटिप्पणी, पृ० 14)
3. बुस्तोन सुङ्-बुम, ‘फ’, पृ० 900-901
4. नादस्तु मन्त्र इत्युक्तः। (पृ० 68)
5. योऽयं प्रागुक्तो नाभिदेशादुच्चारणात् प्राणवायुः, स एव सर्वमन्त्रहेतुत्वान्मन्त्र इत्युच्यते। (पृ० 68)
6. नाभिदेशादुच्चरन् महासुखध्वनिरितरो वा नाद एव मन्त्रः, मनस्त्राणनाद् गुप्तभाषणात्। ---विश्वश्रुतिमहा-स्थानानिर्माणचक्राद्धर्मारल्लिः सर्ववर्णपदवाक्यमहावाक्यादेश्चतुरशीतिधर्मस्कन्धारल्लिव्यापकः। (पृ० 75)
7. मन्त्रजापो नाम प्राणसंयमः। (पृ० 43)
8. मनस्त्राणभूतत्वान्मन्त्रोऽपि परमाक्षरज्ञानमुच्यते। (सेकोद्देशटीका, पृ० 69)
9. तथा- अत एव हि नेच्छामो मन्त्रान् वर्णस्वरूपिणः ।
नहि शक्तास्तृणस्यापि कुब्जीकरणहेतवः ॥ (पृ० 72)

है—मन्त्रों को वर्णस्वरूप मानना उचित नहीं है, क्योंकि यदि मन्त्र को मात्र वर्णों का समूह माने तो वह छोटे से तिनके को भी टेढ़ा करने में समर्थ नहीं हो सकता। इसलिए मन्त्र को परमाक्षर नाद स्वरूप ही मानना चाहिये। वाक् के उद्गम का मूलस्रोत नाद ही है। इसी कारण मन्त्र अपनी सार्थकता सिद्ध करता है। ¹मन्त्र परमाक्षर एवं अनुत्पन्न स्वरूप होता है। इसलिए इसका कोई अपना निश्चित आकार नहीं है, किन्तु भावना के बल से ही मन्त्र नाना प्रकार के विविध कर्मों की सिद्धि का हेतु बन जाता है। ²गुह्यसमाजतन्त्र तथा ³वसन्ततिलक में सभी वाणी को मन्त्रस्वरूप कहा है। अर्थात् सभी वाणी का मूल उत्स (स्रोत) नाद होने से प्राणी जो कुछ भी बोलता है, वह सब मन्त्रमय ही है।

तन्त्रों में ⁴अनुत्पन्न स्वभाव वाले वर्णाग्र ह्रस्व अकार को जिसे सहजाक्षर भी कहा गया है, सभी वर्णों में श्रेष्ठ माना गया है। ⁵“ह्रस्वं समस्तं वाक्यं स्यात्” कह कर भगवान ने भी ह्रस्व अकार को समस्त वाक्प्रवृत्ति का कारण माना है। ⁶सर्ववर्णाग्र, वर्गनायक एवं महार्थ आदि विशेषणों से विशिष्ट इसी अकार को परमार्थ का द्योतक एवं सभी मन्त्रों का जनक माना जाता है। इसी से सारे अक्षरों और मन्त्रों की उत्पत्ति होती है और यही खड्ग, अञ्जन, आदि ⁷आठ महासिद्धियों तथा दिव्यचक्षु, दिव्यश्रोत आदि एवं ⁸अणिमा, लघिमा आदि लौकिक एवं ⁹कायैश्वर्य आदि लोकोत्तर नाना सिद्धियों को देने वाला है। तन्त्रों में ह्रस्व अकार को समस्त वाक्प्रवृत्ति का कारण बताया है। मन्त्रों का सारा रहस्य इसी परमाक्षर अकार में छिपा हुआ है। इसी संदर्भ में आर्यदेव ¹⁰चर्यामेलापकप्रदीप में ¹¹नाम-

1. न कश्चिन्नियतो मन्त्रः सिद्धार्थस्तु व्यवस्थितः ।
अनुत्पन्नस्वभावो हि मन्त्रो वर्गेश्वरः परः ॥
2. जपं जल्पनमाख्यातं सर्ववाङ्मन्त्रमुच्यते । (गुह्यसमाजतन्त्र, 18/74)
3. यः कश्चित्प्रसरो वाचां जन्तूनां प्रतिपद्यते ।
स सर्वो मन्त्ररूपो हि तस्मादेव प्रजायते ॥ (वसन्ततिलक 9.10, पृ० 75)
4. अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वाद् इति । सहजाक्षरं तु पुनरुच्यते । (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 31)
5. चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 3०.
6. अकारः सर्ववर्णाग्रो महार्थो वर्गनायकः ।
अत एव समुद्भूताः सर्वमन्त्रास्तु देहिनाम् ॥ (वसन्ततिलक 9.8, पृ० 74)
7. अञ्जनगुटिकापादुकासिद्धौषधिमणिमन्त्रयक्षस्त्रीपरपुरप्रवेशाख्यम् । (तत्त्वज्ञानसंसिद्धिटीका, पृ० 27)
8. अणिमा-लघिमा-गरिमा-ईशित्वम्-वशित्वम्-कर्तृत्वम्-भोज्यत्वम्-इच्छाप्रकामता इति गुणाष्टकम् ।
(तत्त्वज्ञानसंसिद्धिटीका, पृ० 27)
9. सिद्धिस्त्रैधातुके श्वरत्वम् । (सेकोद्देशटीका, पृ० 47)
10. चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 30-31.
11. अकारः सर्ववर्णाग्रो महार्थः परमाक्षरः ।
महाप्राणो ह्यनुत्पादो वागुदाहारवर्जितः ।
सर्वाभिलाषहेत्वयः सर्ववाक्सुप्रभास्वरः ॥ (नामसङ्गीति 4.1-2)

संगीति आदि अनेक बुद्धवचनों को उद्धृत कर विस्तार से अकार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुये कहते हैं—सभी वर्णों में अग्रणी अकार ही महान अर्थ वाला, परमाक्षर, महाप्राण, अनुत्पाद, वाणी के उदाहार (व्यापार) से रहित, सभी वर्णों के उच्चारण का हेतु और समग्र वाणी में प्रभास्वर स्वरूप है। इसीलिए भगवान ने इसे 'सकलध्यानमुखबीजपद' कहा है। वहीं, ¹वज्रमण्डालङ्कार को उद्धृत कर अकार के बारे में कहते हैं—जलते हुये दीपक के समान हृदय के मध्य भाग में अनाहत परमसूक्ष्म यह अकार अक्षर ही परम प्रभु है। समस्त लौकिक एवं लोकोत्तर शास्त्र मूल अकार से कैसे निर्गत हैं, इसे स्पष्ट करते हुये आगे कहते हैं कि अक्षरतत्त्व के यथाभूत स्वरूप को तो केवल बुद्ध ही जानते हैं। फिर भी भगवद्देशनानुसार उसकी प्रक्रिया इस प्रकार है—²शब्द आलि और कालि से बनता है। अकारादि सोलह स्वर आलि तथा ककारादि तैंतीस व्यञ्जन कालि हैं। ये 49 वर्ण ही अलग-अलग या समस्त रूप में स्वर, व्यञ्जन, बिन्दु, विसर्ग, संहिता, धातु, विभक्ति, समास, पदविग्रह, तीनों लिङ्ग, सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त, तद्धित, प्रत्यय आदि प्रक्रियाओं से व्याकरण द्वारा सिद्ध होकर शब्द नाम से प्रयोग किये जाते हैं और उन्हीं पद, वाक्य, छन्द, वृत्त, श्लोक, गाथा, दण्डकादि द्वारा 84 हजार धर्मस्कन्ध, सूत्र, तन्त्र, कल्प, त्रिपिटक, काव्य-नाटकादि लौकिक और लोकोत्तर शास्त्र बनते हैं। किन्तु उन पद-वाक्यादि वर्णविशेषों में यह अकार विज्ञानभूत है, क्योंकि अकार से रहित इन ककारादि वर्णों का कोई फल नहीं होता। ³वसन्ततिलकटीका में भी कहा है कि बौद्धेतर निकायों के चार वेद, छः वेदांग, मीमांसा, न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र आदि चौदह विद्यास्थान तथा बौद्ध निकाय के शब्द-विद्या, हेतुविद्या, अध्यात्मविद्या, चिकित्साविद्या और शिल्पविद्या आदि पाँच महाविद्याओं सहित समस्त शास्त्र इसी वर्गेश्वर से ही निर्गत माने गये हैं।

1. ज्वलन्तं दीपसदृशं हृदि मध्यमनाहतम् ।
अक्षरं परमं सूक्ष्मं अकारं परमं प्रभुम् ॥ (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 31)
2. शब्दस्तावदालिकालिमयः। आलीत्यकारादिषोडशस्वराः। कालीति ककारादिवर्णास्त्रयस्त्रिंशत्। कथं षोडशस्वरसंयुक्तम् एकोनपञ्चाशत्लिपिकं सर्वमस्तव्यस्तसमस्तस्वरव्यञ्जनबिन्दुविसर्गसंहिताधातुविभक्ति-समासपदविग्रहस्त्रिलिङ्गतिङन्तकृतद्धितप्रत्ययादिभिर्भाष्यपर्यन्तं व्याकरणमिति नामसङ्केतेन परिभाषमाणेन ज्ञायते। अतस्तस्य पदवाक्यच्छन्दोवृत्तिश्लोकगाथादण्डकादिभिश्चतुरशीतिसहस्रधर्मस्कन्धसूत्रान्तकल्प-त्रिपिटककाव्यनाटकादयो लौकिकलोकोत्तरशास्त्राणि सम्भाव्यन्ते। शास्त्रमाश्रित्य सर्वसिद्धयः सम्पद्यन्ते।
(चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 30)
3. अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः ।
पुराणं धर्मशास्त्राणि विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥ इति परयूध्यपक्षः।
लक्षणं हेतुविद्या च तथैवाध्यात्मिकी पुनः ।
चिकित्साशिल्पविद्ये द्वे विद्यास्थानानि पञ्च तु ॥
एतानि सर्वाण्यकारादेवोद्भिद्यन्त इति सर्वमन्त्रेश्वरं तं विना तेषामुच्चारो न विद्यते।
(वसन्ततिलकटीका, पृ० 72)

१ नामसंगीति की अमृतकणिका टीका में मन्त्र के दो भेद किये हैं, यथा—शान्तिक-पौष्टिकादि प्रत्याहार लक्षण को लौकिक मन्त्र और परमाक्षरयोग से बिन्दु-नादात्मक को लोकोत्तर मन्त्र कहा है। २ सेकोद्देशटीका में अकनिष्ठ भुवन पर्यन्त आधिपत्य को लौकिक सिद्धि तथा क्लेशावरण और ज्ञेयावरण सहित सभी वासनाओं के नाश के साथ क्रमशः द्वादश भूमियों की उपलब्धि सहित सम्यक्संबुद्ध पद की प्राप्ति को लोकोत्तर सिद्धि बताया है। इसीप्रकार ३ गुह्यसमाज में भी अन्तर्धान आदि को सामान्यसिद्धि तथा बुद्धत्व प्राप्ति को उत्तमसिद्धि बतलाया है।

४ वैरोचनाभिसम्बोधिचर्यातन्त्र का यह वचन मन्त्रों के स्वरूप एवं प्रभाव के प्रसंग में विशेष रूप से द्रष्टव्य है—“हे गुह्यकाधिपति! मन्त्रों का लक्षण सर्वबुद्धों ने न किया है, न करवाया है और न उसका अनुमोदन किया है, क्योंकि इन धर्मों की धर्मता तथागतों के उत्पाद से या अनुत्पाद से जैसे सुनिश्चित है, वैसे ही मन्त्रों की मन्त्रधर्मता भी सुनिश्चित है। जैसे—कामधात्वीश्वर की मदयन्तिका नामक विद्या है, उससे वह सर्वकामावचर देवपुत्रों को मद से मूर्च्छित कर देता है, नाना प्रकार के रमणीय प्रदेशों का दर्शन करा देता है, विचित्र प्रकार के भोगों को परिनिर्मित देवताओं के लिये देता है और स्वयं भी उनका भोग करता है। महेश्वर नाम के देवपुत्र के पास मनोजवा नाम की विद्या है, जिससे वह त्रिसाहस्र महासाहस्र लोकधातु में सभी कार्य कर लेता है। सम्पूर्ण भोगों का निर्माण कर

१. शान्तिकादिपौष्टिकादिप्रत्याहारलक्षणो लौकिको मन्त्रः। परमाक्षरयोगेन बिन्दुनादात्मको लोकोत्तरमन्त्रः।
(अमृतकणिकानामसंगीतिटिप्पणी, पृ० ८८)
२. लौकिकसिद्धिरित्यकनिष्ठभुवनपर्यन्ताधिपत्यम्। उत्तरसिद्धिरिति सवासनसर्वक्लेशज्ञेयसमापत्त्यावरण-प्रहाणितो द्वादशभूमिप्रतिलम्बेन सम्यक्संबुद्धत्वम्। (सेकोद्देशटीका, पृ० ३)
३. अन्तर्द्धानादयः सिद्धाः सामान्या इति कीर्तिताः ।
सिद्धिरुत्तममित्याहुर्बुद्धा बुद्धत्वसाधनम् ॥ (गुह्यसमाजतन्त्र, पृ० १८.१३३)
४. यथोक्तं वैरोचनाभिसम्बोधिचर्यातन्त्रे—अपि तु गुह्यकाधिपते मन्त्राणां लक्षणं सर्वबुद्धैर्न कृतं न कारितं नानुमोदितम्। तत् कस्य हेतोः? एषां धर्माणां यदुत उत्पादाद्वा तथागतानामनुत्पादाद्वा तथागतानां स्थितैवैषां धर्माणां धर्मता यदुत मन्त्राणां मन्त्रधर्मता। तद् गुह्यकाधिपते! अस्ति कामधात्वीश्वरस्य मदयन्तिका नाम विद्या तथा सर्वकामावचरान् देवपुत्रान् मदेन मूर्च्छयति। विविधविचित्रपरिभोगांश्चाभिनिर्माय परिनिर्मित-वशवर्तिभ्यो देवेभ्यः प्रयच्छत्यात्मना च परिभुङ्क्ते। तद्यथा—अस्ति महेश्वरस्य देवपुत्रस्य मनोजवा नाम विद्या तथा त्रिसाहस्रमहासाहस्रे लोकधातौ सर्वकार्यं करोति। सर्वोपभोगपरिभोगांश्चाभिनिर्माय शुद्धावास-कायिकेभ्यो देवेभ्यः प्रयच्छत्यात्मना च परिभुङ्क्ते। तद्यथा—माहेन्द्रजालिको मन्त्रैर्विविधविचित्रार्थान् मनुष्यादिकान् दर्शयति। तद्यथा—असुरान् मन्त्रैर्मायां दर्शयति। मन्त्रैर्विषमपनयति ज्वरादिकं च। तद्यथा—मन्त्रकल्पिकादेवतामन्त्रैः श्रेयः सत्त्वेभ्यः प्रयच्छति। मन्त्रैरग्नेरुष्णता नश्यति शीतता च सम्भवति। एभिर्निर्दर्शनपदैर्मन्त्रप्रभावोऽभिश्चन्द्रातव्य इति। स च मन्त्रप्रभावो हि न मन्त्रतो निष्क्रामति, न सत्त्वेषु प्रविशति, न द्रव्यादुत्पद्यते, न कर्तुर्दृश्यते। अथ च कुलपुत्र मन्त्राधिष्ठानधर्मतासम्भवनातिक्रामति काल-त्रयातीतत्वात्। सर्वथाचिन्त्यप्रतीत्यसमुत्पादात् सिद्ध्यति। कुलपुत्र! अतः सर्वे धर्मा अचिन्त्यस्वभावेनेत्य-धिगम्य सदा तत् सततमन्त्रनयोऽवगन्तव्यः इति। (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० ३३-३४)

शुद्धावासकायिक देवताओं को देता है और स्वयं भी उपभोग करता है। माहेन्द्रजालिक मन्त्रों के द्वारा आश्चर्यजनक कार्य करके मनुष्यों को दिखाता है और बड़ी-बड़ी माया द्वारा असुरों को वश में करता है। मन्त्रों द्वारा विष के दोष को और ज्वरादि रोगों को नष्ट कर लोगों की रक्षा करता है। मन्त्रकालिक देवता मन्त्रों से सत्त्वों का कल्याण करता है। अग्नि की दाहकता को शान्त करके उसे शीतल कर देता है।”

आर्यदेव अपने ग्रन्थ चर्यामेलापकप्रदीप में उपर्युक्त वचनों को उद्धृत कर आध्यात्मिक और बाह्यरूप से मणि, मन्त्र और औषधियों के अचिन्त्य प्रभाव के सम्बन्ध में कहते हैं कि “इन पदों के निदर्शन से स्पष्ट है कि मन्त्रों के प्रभाव पर श्रद्धा करनी चाहिए। यद्यपि मन्त्र का प्रभाव न तो मन्त्र से निकलता है, न प्राणियों के अन्दर जाता है, न किसी द्रव्य से उत्पन्न होता है और न प्रयोगकर्ता को दिखाई देता है, अपितु मन्त्र का प्रभाव मन्त्रधर्मिता से उत्पन्न होने के कारण अतिक्रमण नहीं करता है, क्योंकि वह कालत्रयातीत होता है। और, गम्भीर अचिन्त्य प्रतीत्यसमुत्पाद से सिद्ध होता है। इसलिए सदैव धर्मों के अचिन्त्य स्वभाव को जानकर ही सतत मन्त्रनय को जानना चाहिए।”

उपर्युक्त वचनों से यह सुनिश्चित होता है कि मन्त्रों का सारा रहस्य परमाक्षर अकार में छिपा हुआ है। उसके वास्तविक स्वरूप को समझने पर ही मन्त्र में शक्ति का आधान सम्भव हो सकता है।

डॉ० पी० वी० काणे ने धर्मशास्त्र का इतिहास में बौद्धेतर ग्रन्थों में उपलब्ध मन्त्र की व्युत्पत्ति को इस तरह परिभाषित किया है— “मन्त्र शब्द ‘मन्’ (सोचना) एवं ‘त्रै’ या ‘त्रा’ से निष्पन्न हुआ है। यास्क के निरुक्त (7/12) में यह केवल ‘मन्’ से निकला कहा गया है। कुलार्णवतन्त्र का कथन है कि मन्त्र इसीलिए पुकारा जाता है, क्योंकि यह सभी प्रकार के भयों से बचाता है, साधक इसके द्वारा अपरिमित ज्योति वाले एवं एक मात्र तत्त्व परमात्मा पर ध्यान लगा पाता है (17/54)।” वहीं पर उन्होंने प्रपञ्चसार आदि अनेक तन्त्र ग्रन्थों का भी उल्लेख कर मन्त्र के बारे में विस्तार से वर्णन किया है।

प्रसिद्ध साधक एवं चिन्तक महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ कविराज ने अपने ग्रन्थ 2 भारतीय संस्कृति और साधना में कहा है—“तन्त्र मत में शक्ति ही मन्त्र है, अतः वह पंचशक्तिमय होता है। यह मन्त्ररूपा शक्ति मूल में एक ही है। किन्तु, उपाधिवश से नाना हो गई है।

1. धर्मशास्त्र का इतिहास (पंचम भाग), पृ० 53-54, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, 1984.

2. प्रथम-खण्ड, पृ० 27, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1977.

मननात्सर्वभावानां त्राणात्संसारसागरात् ।

मन्त्ररूपा हि तच्छक्तिर्मननत्राणरूपिणी ॥

अर्थात् समस्त भावों के मनन और सम्पूर्ण संसार से त्राण के कारण वह मननत्राणरूपिणी शक्ति मन्त्ररूपा है।”

1 इसी ग्रन्थ में ही महामहोपाध्याय ने “योग का विषय-परिचय” शीर्षक के अन्तर्गत मन्त्र के स्वरूप पर विशद विवेचन करते हुये मन्त्रयोग और जपयोग के संदर्भ में कहा है कि—“मन्त्र के आश्रय से जीवात्मा और परमात्मा का सम्मिलन होता है। शब्दात्मक मन्त्र चेतन होने पर उसी की सहायता से जीव क्रमशः गमन करते-करते शब्द से अतीत परमानन्द-धाम तक पहुँच सकता है। वैखरी शब्द से क्रमशः मध्यमा अवस्थाओं को भेदकर पश्यन्ती में प्रवेश करना ही मन्त्रयोग का प्रधान उद्देश्य है। पश्यन्ती शब्द—स्वप्रकाशमान चिदानन्दमय है, चिदात्मक पुरुष की वही अक्षय और अमर षोडशी कला है। वही आत्मज्ञान, इष्ट देवता के साक्षात्कार अथवा शब्द-चैतन्य का प्रकृष्ट फल है। इस अवस्था में पहुँचने पर जीव कृतकृत्य हो सकता है। इसके बाद अव्यक्त भाव अपने-आप उदित होता है। वही शब्द की तुरीय अवस्था है। मूलाधार से निरन्तर शब्द-स्रोत ऊपर की ओर उठ रहा है। यही शब्द समस्त जगत् के केन्द्र में नित्य विद्यमान है। बहिर्मुख जीव इन्द्रियों के अधीन होकर विषयों की ओर दौड़ रहा है, इसी से उसे इसका पता नहीं लगता। जब किसी क्रियाकौशल से अथवा अन्य किसी उपाय से इन्द्रियों की बहिर्गति रुद्ध हो जाती है और प्राण तथा मन स्तम्भित-से हो जाते हैं, तब साधक इस चेतन शब्द को सुनने के अधिकारी होते हैं। षण्मुखी मुद्रा द्वारा कृत्रिम उपाय से इस नाद के अनुसन्धान की चेष्टा की जाती है। नोदन अथवा अभिघात से जनित शब्द को अनाहत-नाद में लीन न कर सकने पर मन्त्र अक्षर-समष्टि ही रह जाता है। उसका सामर्थ्य और प्रकाश अनुभव-गोचर नहीं होता। इड़ा-पिंगला की गति रुककर प्राण और मन के सुषुम्णा के अन्दर प्रविष्ट होने पर वह नित्य सारस्वत-स्रोत अनुभूत होता है। यही क्रमशः साधक को आज्ञाचक्र में ले जाता है और वहाँ से बिन्दु-स्थान भेदकर क्रमशः सहस्रार के केन्द्र में महाबिन्दु-पर्यन्त पहुँचा देता है।” इसी क्रम में आगे शब्दयोग और वाग्योग को स्पष्ट करते हुए पुनः कहते हैं कि— “व्याकृत शब्द का वैखरी अवस्था से मध्यमा में उत्तीर्ण होकर पश्यन्ती-स्वरूप में प्रवेश कर जाना ही इस योगसाधन का प्रधान उद्देश्य है। पश्यन्ती अवस्था से परा-अवस्था में-अव्याकृत पद में-गति और स्थिति स्वभाविक नियम से आप ही हो जाती है।

वह किसी भी साधना का आन्तरिक लक्ष्य नहीं है। वैखरी या स्थूल इन्द्रियग्राह्य शब्द-विशेष मिश्र अवस्था में होने के कारण उसमें असंख्य आगन्तुक मल विद्यमान रहते हैं।-----आवर्तन अथवा जपयज्ञ इत्यादि के अभ्यास से जब वैखरी शब्द से आगन्तुक समस्त मल दूर हो जाते हैं, तब इड़ा-पिंगला का अपेक्षाकृत स्तम्भन हो जाता है और सुषुम्णा-पथ कुछ परिमाण में उन्मुक्त हो जाता है। फिर प्राणशक्ति की सहायता से शोधित होकर शब्द-शक्ति सुषुम्णा-रूप ब्रह्मपथ का आश्रय लेकर क्रमशः ऊर्ध्वगामिनी होती है। यही शब्द की सूक्ष्म या मध्यमा नामक अवस्था है। इसी अवस्था में अनाहत-नाद प्रकट होता है और स्थूल शब्द इस विराट प्रवाह में निमग्न होकर उससे भर जाता है तथा चेतनाभाव धारण कर लेता है। यही मन्त्र-चैतन्य का उन्मेष है।

इस अवस्था में पहुँच जाने पर साधक जीवमात्र की चित्तवृत्ति को अपरोक्षभाव से शब्दरूप में जान लेता है। देश तथा काल का व्यवधान शब्द की इस स्फूर्ति को नहीं रोक सकता। इसके बाद प्रातःकालीन बाल-सूर्य के समान शब्दब्रह्मरूपी आदित्य साधक के आत्मा अथवा इष्ट देवता के रूप में प्रकाशित होकर अन्तराकाश का अन्धकार दूर कर देते हैं। आगमशास्त्र में इसी को 'पश्यन्ती वाक्' कहा जाता है। प्राचीन वैदिक साहित्य में ऋषित्व-प्राप्ति अथवा मन्त्रसाक्षात्कार के नाम से जिसका उल्लेख किया गया है, यह वही अवस्था है। आत्म-दर्शन, इष्टदेव-दर्शन, ज्ञान-चक्षु का उन्मीलन, शिवनेत्र का विकास, षोडशी कला का उन्मेष अथवा सांख्यवर्णित द्रष्टा पुरुष का स्वरूपावस्थिति के रूप में कैवल्य—ये सब इस पश्यन्ती भूमि की विभिन्न अवस्थाएँ हैं।''

इस तरह हम देखते हैं कि बौद्ध एवं बौद्धेतर सभी तन्त्रों में मन्त्र को तन्त्र-साधना का एक अविभाज्य अंग माना गया है। इसीलिए तन्त्रों में मन्त्र का विशिष्ट स्थान निहित है। बौद्धतन्त्र के ग्रन्थों में वर्णित मन्त्रों के अचिन्त्य प्रभाव से यह भी स्पष्ट होता है कि मन्त्र कितना गम्भीर एवं प्रभावशाली है। इसीलिए इसकी तीव्रशक्तिमत्ता के कारण दुरुपयोग की आशंका से सिद्धों ने इसे गोपनीय रखा। गोपनीयता एवं पारिभाषिकता के लिए तन्त्रों में प्रतीक-प्राचुर्य देखा जा सकता है।

भोट देश के अनुवादकों एवं आचार्यों ने भी मन्त्रों की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए क-ग्युर, तन्युर एवं अन्य आचार्यों के संग्रहों में धारणी एवं मन्त्रों का भोट भाषा में अनुवाद न कर, भोट लिपि में लिप्यन्तर किया है। भोट आचार्य¹ बुस्तोन ने भोट लिपि में

‘गुह्यमन्त्र-तन्त्रचतुर्वर्गधारणीशतसाहस्री’ शीर्षक के अन्तर्गत 354 धारणी-मन्त्रों का एक विशाल संग्रह किया है। यह सभी धारणीमन्त्र बौद्ध आगम ग्रन्थों से संगृहीत किये गये हैं।

अन्ततः उपर्युक्त ग्रन्थों में उपलब्ध वचनों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि धारणीमन्त्र बुद्धोक्त हैं। इन धारणीमन्त्रों के विधिवत् जाप एवं भावना से विघ्न-बाधाओं से रक्षा, लौकिकसुखों की प्राप्ति तथा पाप-शमन के अतिरिक्त दुर्गतियों में गमन आदि से भी बचा जा सकता है। दूसरी ओर, मन्त्र तत्त्व का द्योतक एवं तन्त्रसाधना का अविभाज्य अंग होने के कारण साधना-पद्धति के अनुरूप ध्यान-भावना कर साक्षात्कार करने से अनेक प्रकार की सिद्धियाँ एवं लौकिक सुखों की प्राप्ति ही नहीं, अपितु परम तत्त्व का साक्षात्कार कर भवसागर से मुक्ति भी संभव है। इसलिए मन्त्रों की अमोघता पर संदेह नहीं करना चाहिए।

॥ भवतु सर्व मङ्गलम् ॥

ठिनलेराम शाशनी



1. ओमोहान्धकारं- वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० २१८), ओमरान्तकारं- गण्डीस्तवः (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५), ओमोहान्तकारं- गण्डीस्तवः (धा० सं०, पत्रांक- ३३२a- ३३४b)
2. कलि०- गण्डीस्तवः, वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५, २१८), गण्डीस्तवः (धा० सं० पत्रांक- ३३२a- ३३४b)
3. लोभान्तवन्तं- गण्डीस्तवः (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५), लोभादवन्तं- वज्रसत्त्वस्तोत्रं, (स्तो० सं०, पृ० २१८), लोभादिवन्तं- गण्डीस्तवः (धा० सं०, पत्रांक- ३३२a- ३३४b)
4. देखें- आर्यनामसंगीतिधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १०७b- १०८a)

ॐ क॒मु॒क्ते॒र॒ङ्गं॑ सु॒द्धं॑ सु॒द्धक॒रु॒त[॒ङ्गं॑] सु॒द्धं॑ व॒क्ते॒रु॒त[॒म्] ।

ज्ञानमूर्तिरहं बुद्धो बुद्धानां त्र्यध्ववर्तिनाम् ।

Jñānamūrtirahaṃ buddho buddhānāṃ tryadhvavartinām.

(ॐ ऐ॒षा॒ङ्ग॒व॒द॒ग॒स॒द॒स॒ङ्ग॒स॒त्ते । स॒द॒स॒ङ्ग॒स॒त्तु॒स॒ग॒सु॒म॒व॒गु॒ग॒स॒ङ्ग॒स॒गु॒मि॒ ।)

ॐ व॒ज्रं॑ दै॒त्यं॑ दुः॒खं॑ प॒ङ्क्तं॑ सु॒द्धं॑ क॒मु॒क्ते॒रु॒त॒ ।

ॐ वज्रतीक्ष्णदुःखच्छेदप्रज्ञाज्ञानमूर्तये ।

Om vajratīkṣṇaduhkhacchedaprajñājñānamūrttaye.

(द॒ङ्गे॒ क॒मु॒क्ते॒रु॒त॒सु॒ग॒स॒त्तु॒स॒ग॒सु॒म॒व॒गु॒ग॒स॒ङ्ग॒स॒गु॒मि॒ ।)

ॐ क॒मु॒क्ते॒रु॒त॒सु॒ग॒स॒त्तु॒स॒ग॒सु॒म॒व॒गु॒ग॒स॒ङ्ग॒स॒गु॒मि॒ ।

ज्ञानकायवागीश्वर अरपचनाय ते नमः ।

Jñānakāyavāgiśvara arapacanāya te namaḥ.

(ॐ ऐ॒षा॒ङ्ग॒व॒द॒ग॒स॒द॒स॒ङ्ग॒स॒त्तु॒स॒ग॒सु॒म॒व॒गु॒ग॒स॒ङ्ग॒स॒गु॒मि॒ ।)

ॐ स॒र्व॒ध॒र्मा॒भा॒व॒स्व॒भा॒व॒वि॒शु॒द्ध॒व॒ज्र॒ अ॒ आ॒ अं॒ अः॒ ।

ॐ सर्वधर्माभावस्वभावविशुद्धवज्र अ आ अं अः ।

Om sarvadharmābhāvasvabhāvaviśuddhavadajra a ā aṃ aḥ.

(ॐ स॒र्व॒ध॒र्मा॒भा॒व॒स्व॒भा॒व॒वि॒शु॒द्ध॒व॒ज्र॒ अ॒ आ॒ अं॒ अः॒ ।)

ॐ प॒रि॒शु॒द्धा॒ स॒र्व॒ध॒र्मा॒ य॒दु॒त॒ ।

ॐ प्रकृतिपरिशुद्धाः सर्वधर्मा यदुत ।

1. देखें- आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीति (सटीक), मन्त्रविन्यासः, पृ० १०८, २१५-२१७, सम्पा०- डॉ० बनारसी लाल); आर्यनामसंगीतिसाधनं (साधनमाला, भाग-१, पृ० १६०); "ॐ----- अं अः" तक का मन्त्र, नामसंगीति का मूलमन्त्र है ।

2. श्रीं - ख.

3. यह नामसंगीति का मालामन्त्र है । देखें- आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीति (सटीक), मन्त्रविन्यासः, पृ० २१५, सम्पा०- डॉ० बनारसी लाल

१कर'कर	गुरु'गुरु	बन्ध'बन्ध
कर कर	कुरु कुरु	बन्ध बन्ध
kara kara	kuru kuru	bandha bandha
(अईद'अईद)	अईद'अईद	ऊँद'ऊँद)
दू'सय'दू'सय	क्षोभय'क्षोभय	ह्रौं'ह्रौं
त्रासय त्रासय	क्षोभय क्षोभय	ह्रौं ह्रौं
trāsaya trāsaya	kṣobhaya kṣobhaya	hrauṃ hrauṃ
(क्ष'प'स'क्ष'प'स'क्ष)	क्ष'भ'य'क्ष'भ'य	
दृः'दृः	पें'पें	धत्'धत्
हः हः	फें'फें	फट'फट
hrah hrah	phem phem	phaṭ phaṭ
		(पें'पें)
दह'दह	पठ'पठ	भक्ष'भक्ष
दह दह	पच पच	भक्ष भक्ष
daha daha	paca paca	bhakṣa bhakṣa
(क्ष'प'क्ष'प)	ऊँ'ऊँ	ऊँ'ऊँ)
वस'रुद्धि'रुद्धि'सू'ल'व'ल'म्बिने ^१		ग्रिह'ग्रिह
वसरुधिरान्त्रमालावलम्बिने		३गृह'गृह
vasarudhirāntramālāvalambine.		gr̥hṇa gr̥hṇa
(व'स'रु'ध'र'अ'न्'त्र'म'ल'व'ल'म्ब'न)		गृ'ह'गृ'ह)

१. देखें- मूलमन्त्रस्याक्षरोद्धारविधिपटलः, च० त०, पृ० ४८-५९)

२. ०व'ल'म्बिने- ख.

३. 'ग्रिह'ग्रिह'- चक्रसंवरतन्त्र मन्त्रोद्धार, (ऋ ऋ लृ लृ—इन चार स्वरों को तन्त्रशास्त्र की सभी शाखाओं में नपुंसक माना गया है तथा फलदायक न होने से इनका प्रयोग बीज अथवा मन्त्र के अंग के रूप में निषिद्ध माना गया है। अतः 'गृह-गृह' के स्थान पर 'ग्रिह-ग्रिह' ही होना चाहिए।)

सप्त'पूतूय'सुई'वां'सर्प'वा
सप्तपाताल¹भुजङ्गां(ङ्गान्) सर्प वा
saptapātālabhujāṅgān sarpam vā.
(सप्त'प'त'ल'भ'ज'अ'ङ्ग'आ'न'स'र'प'व)

तर्जय'तर्जय
तर्जय तर्जय
tarjaya tarjaya
ईश'स'ईश'ईश'स'ईश)

आकड्ड'आकड्ड
आकड्ड आकड्ड
ākaddha ākaddha
ह्रीं'ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
hrīm hrīm

ज्जौं'ज्जौं
ज्जौं ज्जौं
jjaum jjaum

क्ष्मां'क्ष्मां
क्ष्मां क्ष्मां
kṣmām kṣmām
हां'हां
हां हां
hām hām

ह्रीं'ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
hīm hīm

हूं'हूं
हूं हूं
hūm hūm
किलि'किलि
किलि किलि
kili kili

सिलि'सिलि
सिलि सिलि
sili sili

हिलि'हिलि
हिलि हिलि
hili hili
धिलि'धिलि
धिलि धिलि
dhili dhili

हूं'हूं'धत्
हूं हूं फट्।
hūm hūm phat

अप'पितृ'मूलमन्त्रः॥ (पितृ-मूलमन्त्रः= Pitṛ-mūlamantraḥ)

ॐ'स्रैव'हे'हे'रु'रु'कं'हूं'हूं'धत्।
ॐ श्रीवज्र हे हे रु रु कं हूं हूं फट् ।

हूं'हूं'धत्'स्रैव'हूं'हूं'धत्
डाकिनीजालसंवरं स्वाहा ।

1. भुजङ्ग- चक्रसंवरतन्त्र (सटीक), पृ० ५५, १३०

2. देखें- चक्रसंवरस्य हृदयमन्त्रमाला नाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ३२६b-३२७a); विपरीतहृदय षड्योगिनीमन्त्रोद्धारविधिपटलः, चक्रसंवरतन्त्र पृ० ७३-७४, दु० बौ० ग्र० शो० अनुभाग से प्रकाशित ।

(हेवज्रमन्त्रः = Hevajra-mantraḥ)

(རབ་བསྐྱལ་ས་ཞལ་བརྒྱད་པ་ལ།

དབྱུགས་དམར་མེར་གྱིན་དུ་བརྒྱུས་པ་ལ།)

(སྤྲུལ་ཉི་ཤུ་བཞི་པ་ལ།

ཕུག་བརྟུན་པ་ལ།)

(ཆར་སྤྱོད་ནས་པོ་ལྟ་བུའི་སྒྲ་ཅན་ལ།

ཐོད་པའི་འཕྲུང་བ་དུ་མ་འཛིན་པ་ལ།)

(ཁྲི་ནས་འཁྱུགས་པའི་བྱུགས་ཅན་ལ།

སྐ་བ་ཕྱིད་པ་ལྟ་བུའི་མཆི་བ་ཅན་ལ།)

1. देखें- हेवज्रधारणीपूजाविधिः (धा० सं०, पत्रांक- ११३b-११४a), इस धारणी में हेवज्र की पूजा विधि है, जिसमें 'ॐ अष्टाननाय-----अर्द्धेन्दुदंष्ट्रिणे' तक ही हेवज्रमन्त्र उपलब्ध है, और प्रत्येक पद के साथ प्रारम्भ में 'ॐ' और अन्त में 'हूं हूं हूं फट् स्वाहा' जोड़ा है। यथा- ॐ पिङ्गलोर्ध्वकेशवर्त्मने हूं हूं हूं फट् स्वाहा-----इत्यादि। आगे का मन्त्र इसमें नहीं है
2. वा०वा०र०शृङ्गमू०मु०स०वा०क्ख०रा०व०षा०लि०णु०शृङ्गमू०ऽमु०द०वा०क्खि०द०क्ष०सु०द०सा०पा०रे॥— क. ख., आध्या(मा)तक्रूरचिताय- हेवज्रधारणीपूजाविधिः (धा० सं०, पत्रांक- ११३b-११४a)

मू॒रय॑ मू॒रय॑

मारय मारय

māraya māraya

(म॒रय॑ म॒रय॑ म॒रय॑ म॒रय॑)

गू॒रय॑ गू॒रय॑

कारय कारय

kāraya kāraya

(क॒रय॑ क॒रय॑ क॒रय॑ क॒रय॑)

ग॒र्जय॑ ग॒र्जय॑

गर्जय गर्जय

garjjaya garjjaya

(ग॒र्जय॑ ग॒र्जय॑)

त॒र्जय॑ त॒र्जय॑

तर्जय तर्जय

tarjjaya tarjjaya

(त॒र्जय॑ त॒र्जय॑)

शोष॑य शोष॑य सप्त॑सागरान् ।

शोषय शोषय सप्तसागरान्

śoṣaya śoṣaya saptasāgarān

(शो॒षय॑ शो॒षय॑ सप्त॑सागरान्)

बन्ध॑ बन्ध॑ नागाष्ट॑कान् ।

बन्ध बन्ध नागाष्टकान्

bandha bandha nāgāṣṭakān

(ब॒न्ध ब॒न्ध नागा॑ष्टकान्)

गृ॒ह गृ॒ह शत्रून् ।

गृह गृह शत्रून्

Gr̥ha gr̥ha śatrūn

(गृ॒ह गृ॒ह शत्रू॑न्)

ह॒ ह॒ हा॒ हि॒ ही॒ हु॒ हू॒ हे॒ है॒ हो॒ हौ॒ हं॒ हः॒ फट् स्वाहा॑ ॥

ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः फट् स्वाहा ।

ha hā hi hī hu hū he hai ho hau haṃ haḥ phaṭ svāhā

(ह॒ ह॒ हा॒ हि॒ ही॒ हु॒ हू॒ हे॒ है॒ हो॒ हौ॒ हं॒ हः॒ फट् स्वाहा॑ ॥)

अथ॑ गृ॒ह मूल॑मन्त्रः॥ (पितृ॑-मूलमन्त्रः = Pitr̥-mūlamāntrah)

ॐ दे॒व पि॒चुव॑ज्र हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा॑ ॥

1 ॐ देव पिचुवज्र हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा ।

1. ॐ देव पिचुवज्र हूँ फट् स्वाहा— हेवज्रनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १२८a-१२९b), इस धारणी मन्त्र में मूलमन्त्र— 'ॐ देव-----स्वाहा' के अतिरिक्त अन्य सभी मन्त्र भिन्न हैं ।

Om deva picuvajra hūṃ hūṃ hūṃ phaṭ svāhā.

(བཀྲ་ཤེས་ཀྱི་འཇམ་མེད་ཀྱི་ལྷ་མོ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་)

ཞིང་པོའོ། (हृदयमन्त्रः = Hrdayamantraḥ)

ཨོ་བཀྲ་ཀཱ་རི་ཏེ་བཟླ་ཡ་རྩྱུ་རྩྱུ་པ་ཏྲ་སྒྲུ།

ॐ वज्रकर्तरी हेवज्राय हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा ।

Om vajrakartarī hevajrāya hūṃ hūṃ hūṃ phaṭ svāhā.

(རྩྱུ་རྩྱུ་པ་ཏྲ་སྒྲུ་བཟླ་པ་[བཟླ་པ་] རྩྱུ་རྩྱུ་པ་)

ཉེ་བའི་ཞིང་པོའོ། (उपहृदयमन्त्रः = Upahrdayamantraḥ)

ཨོ་ཨྲཱ་ཨྲཱ་ཨྲཱ་ཨྲཱ་རྩྱུ་པ་ཏྲ་སྒྲུ།

ॐ आः नं वज्रनैरात्म हूँ फट् स्वाहा ।

Om āḥ nam vajranairātma hūṃ phaṭ svāhā.

(རྩྱུ་རྩྱུ་པ་ཏྲ་སྒྲུ་མེད་པ་)

ཡུམ་གྱི་མཚན་ལྷག་པོ། (मातृ-नाममन्त्रः = Matr-nāmamantraḥ)

ཨོ་ཨྲཱ་ཨྲཱ་ཨྲཱ་ཨྲཱ་རྩྱུ་པ་ཏྲ་སྒྲུ།

ॐ आ अं हूँ फट् स्वाहा ।

Om ā aṃ hūṃ phaṭ svāhā.

ཞིང་པོའོ། ॥ (हृदयमन्त्रः = Hrdayamantraḥ)

(4) རལགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས།

(1आर्य-अमोघपाशनामधारणी = Ārya-Amoghapāśanāmadhāraṇī)

ནམསྟེཡནྟ་ཨཱཀྱུཤ་ཤུའི་ཐིའི་སྟེ་སའ་བྱུ་བོ་ཐིའི་སྟེཤུ།

2(ॐ) नमस्त्रैयध्वानुगतप्रतिष्ठितेभ्यः। 3(नमः) सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः।

(Om) namastraiyadhvānugatapratīṣṭhitebhyaḥ (Namah) sarvabuddhabodhi-sattvebhyah

(ཏུས་གསུམ་ཏུ་གཤེགས་ཤིང་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་ཏུང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ།)

ནམ་ཤུའི་གཟུངསྟེཡནྟ་ཨཱཀྱུཤ་ཤུའི་ཐིའི་སྟེ་སའ་བྱུ་བོ་ཐིའི་སྟེཤུ།

नमः प्रत्येकबुद्ध-आर्यश्रावकसङ्घेभ्यः। अतीत-अनागत-प्रत्युत्पन्नेभ्यः।

Namah pratyekabuddha-āryaśrāvakasaṅghebhyaḥ. Atīta-anāgata-pratyut-pannebhyaḥ.

(འདས་པ་དང་མ་ཕྱོག་པ་དང་ད་ཕྱར་ཏུ་བའི་རང་སངས་རྒྱས་དང་འཕགས་པ་ཉམ་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ།)

ནམ་སམྱུག་གཏུ་རྒྱུ། ནམ་སམྱུག་ཤུའི་པརྒྱུ་རྒྱུ།

नमः सम्यगतानाम्। 4नमः सम्यक्प्रतिपन्नानाम्।

Namah samyaggatānām. Namah samyakpratipannānām.

(ཡང་དག་པར་རིང་བ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ། ཡང་དག་པར་ཞུགས་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ།)

1. 'प्रस्तुत ग्रन्थ में आर्यामोघपाशधारणी से वैश्रवणधारणीमन्त्र' (पृ० १२-७६) तक (१'ལུ་ལོ་རྩ་བ་ཆེན་པོ་) महा-अनुवादक श लु अर्थात् "छोस् क्योङ् जङ्-पो" द्वारा संगृहीत हैं। इसके पूर्व और पर के सभी धारणी मन्त्र प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रणेता (བུཌ་པ་དབང་པོ་) भदन्त इन्द्र के द्वारा संकलित हैं। प्रस्तुत सम्पूर्ण धारणी "आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम्" (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b) के अन्तर्गत (पत्रांक- ५०a-५२a) समाविष्ट है।
2. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
3. 'नमः' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'नमः सम्यक्प्रतिपन्नानाम्' नास्ति- तत्रैव

ॠमः ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये।

नमः शारद्वतीपुत्राय १महामतये ।

Namaḥ śāradvatīputrāya mahāmataye.

(ॠरुदुतिं ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये ।)

ॠमः ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये।

नमः आर्यमैत्रेयप्रमुखेभ्यो महानोधिसत्त्वेभ्यः ।

Namaḥ āryamaitreyapramukhebyo mahābodhisattvebhyaḥ.

(ॠरुदुतिं ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये ।)

ॠमः ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये।

ॠरुदुतिं

नमः सुप्रतिष्ठितशैलेन्द्रराजप्रमुखेभ्यः सर्वतथागतेभ्योऽर्हद्भ्यः सम्यक्सम्बुद्धेभ्यो २भगवद्भ्यः ।

Namaḥ supratīṣṭhitaśailendrarājapramukhebhyaḥ sarvatathāgātebhyo-arhad-
bhyaḥ samyaksambuddhebhyo bhagavadbhyaḥ.

(ॠरुदुतिं ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये ।)

ॠमः ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये।

नमः सुवर्णवर्णसुप्रतिभासविनर्दितेश्वरराजाय तथागताय ।

Namaḥ suvarṇavarṇasupratibhāsavinarditeśvararājāya tathāgatāya.

(ॠरुदुतिं ॠरुदुतिं सुदुयं मरुं मरुये ।)

1. दानपतये- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

2. भगवत्यः- तत्रैव

3. ०प्रभाविनतेश्वरराजाय- तत्रैव

ནམ་མཁའ་མེད་པའི་བྱུང་བ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟར་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བཤེས།

नमः सिंहविक्रीडितराजाय तथागताय ।

Namah simhavikrīḍitarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སངས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕུག་འཆལ་ལོ། 1)

ནམ་མཁའ་མེད་པའི་བྱུང་བ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟར་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བཤེས།

1 नमोऽमिताभाय तथागताय ।

Namo-amitābhāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག་མེད་པའི་ཕུག་འཆལ་ལོ། 1)

ནམ་མཁའ་མེད་པའི་བྱུང་བ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟར་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བཤེས།

नमः सुप्रतिष्ठितमणिकूटराजाय तथागताय ।

Namah supratīṣṭhitamanīkūṭarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལེགས་པར་རབ་གནས་ཆེར་བུ་བཅེགས་པའི་ཕུག་འཆལ་ལོ། 1)

ནམ་མཁའ་མེད་པའི་བྱུང་བ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟར་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བཤེས།

नमः समन्तरश्म्युदगतश्रीकूटराजाय तथागताय ।

Namah samantaraśmyudgataśrīkūṭarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་ཟེར་ཀུན་ནས་འཕགས་པ་དཔལ་བཅེགས་ཕུག་འཆལ་ལོ། 1)

ནམ་མཁའ་མེད་པའི་བྱུང་བ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟར་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བཤེས།

नमो विपश्यने तथागताय ।

Namo vipaśyine tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་གཟིགས་པའི་ཕུག་འཆལ་ལོ།

འཆལ་ལོ། 1)

ནམ་མཁའ་མེད་པའི་བྱུང་བ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟར་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བཤེས།

नमः शिखिने तथागताय ।

Namah śikhine tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གཙུག་ཏྱར་ཅན་པའི་ཕུག་

ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।

Namo viṣṇubhujе tathāgatāya ।

(देवबिक्क'वसे'प'समस'उद'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये । देवबिक्क'वसे'प'ल'प'स'र'द'दे'स'ल'प'पुष'ल'क'ल'ल्ये ।)

ॐ नमः क्रकुच्छन्दाय तथागताय ।

Namaḥ krakucchandāya tathāgatāya ।

(देवबिक्क'वसे'प'समस'उद'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये । देवबिक्क'वसे'प'ल'प'स'र'द'दे'स'ल'प'पुष'ल'क'ल'ल्ये ।)

ॐ नमः कनकमुनये तथागताय ।

Namaḥ kanakamunaye tathāgatāya ।

(देवबिक्क'वसे'प'स'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये । देवबिक्क'वसे'प'ल'प'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये ।)

ॐ नमः काश्यपाय तथागताय ।

Namaḥ kāśyapāya tathāgatāya ।

(देवबिक्क'वसे'प'स'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये । देवबिक्क'वसे'प'ल'प'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये ।)

ॐ नमः शाक्यमुनये तथागताय ।

Namaḥ śākyamunaye tathāgatāya ।

(देवबिक्क'वसे'प'स'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये । देवबिक्क'वसे'प'ल'प'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये ।)

ॐ नमः सम्यक्सम्बुद्धाय ।

arhate samyak sambuddhāya ।

(देवबिक्क'वसे'प'स'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये । देवबिक्क'वसे'प'ल'प'स'र'सुव'ल'पुष'ल'क'ल'ल्ये ।)

तद्यथा—

Tadyathā

(ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।)

ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।

ॐ मुने मुने महामुनये स्वाहा ।

Oṃ mune mune mahāmunaye svāhā ।

(ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।)

ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।

Oṃ same same mahāsama rakṣa rakṣa mām sarvasattvāṃsca ।

(ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।)

(ॐ नमो विष्णुभुजे तथागताय ।)

ནམ་བུ་ལྟོས།

नमो बुद्धाय ।

Namo buddhāya.

(སངས་རྒྱལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

ནམ་རྒྱལ་ལྟོས།

नमो धर्माय ।

Namo dharmāya.

(ཚཱ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

ནམ་མཁའ་སྐྱེས་ལྟོས།

नमः संघाय ।

Namo saṃghāya.

(དགེ་འདུན་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

ནམ་ཡུལ་འདྲིཏ་ཡུལ་ཀྱང་པ་པུ་ཕྱེ་བུ་བྱེ་བུ་སྐྱེས་ལྟོས།

नमोऽतीत-अनागत-प्रत्युत्पन्नेभ्यो बुद्धेभ्यो भगवद्भ्यः ।

Namo-atīta-anāgata-pratyutpannebhyaḥ buddhebhyaḥ bhagavadbhyaḥ.

(འདས་པ་དང་མ་ཕྱིན་པ་དང་ད་ལྟར་ཕྱུང་བའི་སངས་རྒྱལ་བཅོམ་ཡུན་འདས་རྒྱལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

དུམ་ལྟོས།

तद्यथा-

Tadyathā-

(འདྲི་ལྟེ།)

སྤྱི་ཏི་ཕྱོད་ཅི།

स्मृतिवर्धनि

saṃṛtivarḍhani

དྲན་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

མཏི་ཕྱོད་ཅི།

मतिवर्धनि

mativarḍhani

(སློབས་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

གཏི་ཕྱོད་ཅི།

गतिवर्धनि

gativarḍhani

(རྟོགས་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

ཐྱི་ཏི་ཕྱོད་ཅི།

धृतिवर्धनि

dhrtivarḍhani

(བདན་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

པརྱ་ཏི་ཕྱོད་ཅི།

प्रज्ञावर्धनि

prajñāvarḍhani

(ཤེས་རབ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

པའི་སྤྱན་ཕྱོད་ཅི།

प्रतिभानवर्धनि

pratibhānavarḍhani

(སྤྱི་བས་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

རྒྱན་ཕྱོད་ཅི།

ध्यानवर्धनि

dhyānavarḍhani

(བསམ་གཏན་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

འཕམསྐྱ་མཆོན།

1 शमस्थ(थ)वर्धनि

śamaṣṭha(tha)vardhani

(ཞི་གནས་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

སའ་བོདྱི་པཎ་ཆམ་མཆོན།

सर्वबोधिपक्षधर्मवर्धनि

sarvabodhipakṣadharmavardhani

svāha.

(ཏྲ་ཚུབ་ཀྱི་ཕྱགས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་འཕེལ་བར་མཛད་པ། སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་མཐའ་དག་ཡོངས་སུ་འཕེལ་པའི་ཕྱིར་དུ།)

ནམོ་རྩ་རྩལྱལ།

नमो रत्नत्रयाय ।

Namo ratnatrayāya.

(དཀོན་ཅོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

ནམ་ཞུ་ཆ་ཞལ་ལོ་གྱི་དེ་ཤརྩལྱལ་བོདྱི་སྐྱལྱལ་མདྲ་སྐྱལྱལ་མདྲ་ཀྱ་རྩའི་ཀྱལ།

नम आर्य-अवलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय ।

Nama ārya-avalokiteśvarāya bodhisattvāya mahāsattvāya mahākāruṇikāya.

(ཏྲ་ཚུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཕྱགས་ཇེ་ཆེན་པོ་ཅན་འཕགས་པ་རྒྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱག་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

ནམོ་མདྲ་སྐྱལྱལ་སྐྱལྱལ་བོདྱི་སྐྱལྱལ་མདྲ་སྐྱལྱལ་མདྲ་ཀྱ་རྩའི་ཀྱལ།

नमो महास्थामप्राप्ताय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय ।

1. इतः पूर्व 'समाधिवर्धनि' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a ५३b)

2. 'विपश्यवर्धनि' नास्ति- तत्रैव

८५३	ॐ उर उर	उरि उरि	उरु उरु	मर मर
तद्यथा—	ॐ चर चर	चिरि चिरि	चुरु चुरु	मर मर
Tadyathā-	Oṃ cara cara	ciri ciri	curu curu	mara mara
(८६३)				

मिरि मिरि	मुरु मुरु	महाकारुणिक ^१ (स्वाहा।)
miri miri	muru muru	mahākāruṇika (svāhā.)
		(सुषुषुहैकेकं यं ददत्तं यः)

(संशोधनमन्त्रः = Saṃśodhanamantraḥ)

सर सर	सिरि सिरि	सुरु सुरु	चुरु चुरु	चिरि चिरि
2(ॐ)सर सर	siri siri	suru suru	curu curu	ciri ciri
sara sara				

विरि विरि	पिरि पिरि	मिरि मिरि	महापद्महस्त ^४ (य स्वाहा।)
viri viri	piri piri	miri miri	mahāpadmahasta(āya svāhā.)
			(सुषुषुहैकेकं यं ददत्तं यः)

(विघ्नोत्सारणमन्त्रः = Vighnotsāraṇamantraḥ)

1. 'स्वाहा। संशोधनमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'ॐ' नास्ति- तत्रैव
3. 'पिरि पिरि' नास्ति- तत्रैव
4. महापद्महस्ताय स्वाहा। विघ्नोत्सारणमन्त्रः- तत्रैव

गल'गल	गैलि'गैलि	गुलु'गुलु	मदू'मुदू'सदू
1 (ॐ) कल कल	किलि किलि	कुलु कुलु	2 महाशुद्धसत्त्व (अय स्वाहा ।)
kala kala	kili kili	kulu kulu	mahāśuddhasattva (āya svāhā)
			(सिम्ब'दप'दप'स'के'स')

(देवतासंशोधनमन्त्रः = Devatāsamsodhana-mantraḥ)

बुद्ध'बुद्ध	बोद'बोद	बोधि'बोधि	बोधय'बोधय
3 (ॐ) बुद्धय बुद्धय	बोध बोध	4 बोधि बोधि	बोधय बोधय
Oṃ buddhya buddhya	bodha bodha	bodhi bodhi	bodhaya bodhaya

कण'कण	किणि'किणि	कुण'कुण	परम'मुदू'सदू
कण कण	किणि किणि	कुण कुण	5 परमशुद्धसत्त्व (अय स्वाहा ।)
kaṇa kaṇa kiṇi kiṇi	kuṇu kuṇu	paramaśuddhasattva (āya svāhā)	
			(स'के'द'प'स'के'स')

(तथागतमन्त्रः = Tathāgata-mantraḥ)

कर'कर	किरि'किरि	कुरु'कुरु	मदू'सुदू'सदू
6 (ॐ) कर कर	किरि किरि	कुरु कुरु	7 महास्थामप्राप्त (अय स्वाहा ।)
kara kara	kiri kiri	kuru kuru	mahāsthāmaprāpta (āya svāhā)
			(स'के'द'प'स'के'स')

(निवेशमन्त्रः = Niveśa-mantraḥ)

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. महाशुद्धसत्त्वाय स्वाहा । देवतासंशोधनमन्त्रः- तत्रैव
3. 'ॐ' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'बोधि बोधि' नास्ति- तत्रैव
5. महापरमशुद्धसत्त्वाय स्वाहा । तथागतमन्त्रः- तत्रैव
6. 'ॐ' इत्यधिकम्- तत्रैव
7. महास्थामप्राप्ताय स्वाहा । निवेशमन्त्रः- तत्रैव

उल'उल	सञ्जल'सञ्जल	विउल'विउल	प्रउल'प्रउल	ऐत'ऐत
1ॐ चल चल	सञ्जल सञ्जल	विचल विचल	2प्रचल प्रचल	एटट एटट
cala cala	sañcala sañcala	vicala vicala	pracala pracala	eṭaṭa eṭaṭa

झर'झर	झिरि'झिरि	झुरु'झुरु	तर'तर	तिरि'तिरि
भर भर	भिरि भिरि	भुरु भुरु	तर तर	तिरि तिरि
bhara bhara	bhiri bhiri	bhuru bhuru	tara tara	tiri tiri

तुरु'तुरु	ऐह्ये'मह्ये'गुरु'गुरु
तुरु तुरु	एह्येहि महाकारुणिक ³ (स्वाहा) ।
turu turu	ehyehi mahākāruṇika (svāhā.)
	(ऊर'ऊर'ऊर'ऊर'सुष'है'कै'य'उर)

(आकर्षणमन्त्रः = Ākarṣaṇa-mantraḥ)

मह्य'पशुपति'वेष'धर	धर'धर	धिरि'धिरि	धुरु'धुरु	तर'तर
महापशुपतिवेष ⁴ धर	धर धर	धिरि धिरि	धुरु धुरु	तर तर
mahāpaśupativedha	dhara dhara	dhiri dhiri	dhuru dhuru	tara tara
(धुष'वद'कै'य'है'क'पुष'है'य'प)				

सर'सर	चर'चर	पर'पर	वर'वर	मर'मर	लर'लर	हर'हर
सर सर	चर चर	पर पर	वर वर	मर मर	लर लर	हर हर
sara sara	cara cara	para para	vara vara	mara mara	lara lara	hara hara

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनप्रमहदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

2. 'प्रचल प्रचल' नास्ति- तत्रैव

3. 'स्वाहा । आकर्षणमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव

4. 'धर' नास्ति- तत्रैव

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं 1 हा हा ही ही हू हू hā hā hī hī hū hū	ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐकार ब्रह्मवेष ² धर Omkāra brahmaveśadara (ॐकारेण ब्रह्मवेषधरः कुरुष्व इति अर्थः)	ह्रीं ह्रीं धर धर dhara dhara
---	---	-------------------------------------

धिरि धिरि dhiri dhiri	धुरु धुरु dhuru dhuru	तर तर tara tara	सर सर sara sara
--------------------------	--------------------------	--------------------	--------------------

उर उर cara cara	नर नर nara nara	वर वर vara vara	हर हर hara hara
--------------------	--------------------	--------------------	--------------------

रश्मिशतसहस्रप्रतिमण्डितशरीर raśmīśatasahasrapratimaṇḍitaśarīra (रश्मिशतसहस्रप्रतिमण्डितशरीरः ज्वलति इति अर्थः)	ज्वल ज्वल jvala jvala	तप तप tapa tapa
--	--------------------------	--------------------

भास भास bhāsa bhāsa	भ्रम भ्रम bhrama bhrama	भगवान् bhagavān (भगवन् इति अर्थः)	सोम soma क्षेत्र
------------------------	----------------------------	---	------------------------

आदित्य आदित्य	यम यम	वरुण वरुण	कुबेर कुबेर
------------------	----------	--------------	----------------

1. ह हा हि ही हू हू- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'धर' नास्ति- तत्रैव
3. 'नर नर' नास्ति- तत्रैव
4. भगवन्- तत्रैव

āditya (ॐ अ)	yama यमैकै'द'द'।	varuṇa रु'ञ्ज	kubera कुष'द'क'।)
ब्रह्मा	इन्द्रा	वृष्या	अग्नी
ब्रह्म	इन्द्र	वायु	अग्नि
brahma	indra	vāyu	agni
(क'द'स'य)	द'द'द'य'द'द'।	रु'द'ञ्ज	अ'ञ्ज)

ॐ नमो देवाय ऋषिगण अभ्यर्चितचरण१ (स्वाहा ।)

धनद देव ऋषिगण अभ्यर्चितचरण१ (स्वाहा ।)

dhanada deva ṛṣigaṇa abhyarcitacarṇa (svāhā.)

(ॐ नमो देवाय ऋषिगण अभ्यर्चितचरण१ (स्वाहा ।)

(अर्घासन-स्नान-मन्त्राद्यलङ्कार-गन्ध-पुष्प-धूप-छत्र-ध्वज-पताकावली-दीपमन्त्रः = Arghāsana-
snāna-mantrādyalaṅkāra-gandha-puṣpa-dhūpa-chatra-dhvaja-
patākāvalī-dīpamantraḥ)

सुरु'सुरु	चुरु'चुरु	मुरु'मुरु	घुरु'घुरु	सनत्कुमार
सुरु सुरु	चुरु चुरु	मुरु मुरु	घुरु घुरु	सनत्कुमार
suru suru	curu curu	muru muru	ghuru ghuru	sanatikumāra
				(गुरु'द'व'द'व'द'कु)

रुद्रा	वृषवा	विष्णु	धनद	वृष्या
रुद्र	वासव	विष्णु	धनद	वायु
rudra	vāsava	viṣṇu	dhanada	vāyu
(द'व'य)	व'द'स'द'द'द'।	व'द'स'द'द'।	ॐ नमो	रु'द'ञ्ज)

1. 'स्वाहा । अर्घासनस्नानमन्त्राद्यलङ्कारगन्धपुष्पधूपछत्रध्वजपताकावलीदीपमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्यामोघ-
पाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

समन्त-अवलोकित samanta-avalokita (गुरुं नमः श्रुतं रसं वसिष्ठं)	विर्लीङ्ग vilokita रुमं पदं वसिष्ठं	वर्लीङ्ग lokeśvara रुमं पदं वसिष्ठं
महेश्वर maheśvara (श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम्)	त्रिभुवनेश्वर tribhuvaneśvara (श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम्)	सर्वगुणसमलंकृत-अवलोकितेश्वर sarvagūṇasamalamkṛta-avalokiteśvara (श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम्)
मुहुं मुहुं muhu muhu	मुरुं मुरुं muru muru	मुयं मुयं muya muya
रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च rakṣa rakṣa mām sarvasattvāṁśca (वदन् वदन् रक्ष रक्ष उदन् उदन्)	रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च rakṣa rakṣa mām sarvasattvāṁśca (वदन् वदन् रक्ष रक्ष उदन् उदन्)	सर्वभयेभ्यः sarvabhayebyah (रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च)
सर्वोपद्रवेभ्यः sarvopadravebhyah (श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम्)	सर्वोपद्रवेभ्यः sarvopadravebhyah (श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम्)	सर्वोपसर्गेभ्यः sarvopasargebhyah (श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम्)

1. अवलोकिते- ख.
2. विर्लीङ्ग- ख.
3. 'सर्वोपसर्गेभ्यः' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८२-५३६)

सर्वग्रहेभ्यः	सर्वव्याधिभ्यः	सर्वविषेभ्यः	सर्वज्वरेभ्यः
sarvagrahebhyah	sarvavyādhibhyah	sarvaviṣebhyah	sarvajvarebhyah
(सर्वग्रहभ्यः उद'द'।	उद'द'सर्वव्याधिभ्यः उद'द'।	सर्वविषभ्यः उद'द'।	सर्वज्वरेभ्यः उद'द'।
सुद'स'पिण'सुद'स'पिण ।)			

एवं	वध	बन्धन	ताडन	तर्जन
evam	vadha	bandhana	tāḍana	tarjana
(दे'सर्विष'दु।	वध'स'द'।	बन्धन'स'द'।	ताडन'स'द'।	तर्जन'स'द'।)

राज	तस्कर	अग्नि	उदक	विष
rāja	taskara	agni	udaka	viṣa
(सुद'स'द'।	तस्कर'स'द'।	अग्नि'स'द'।	उदक'स'द'।	विष'स'द'।)

शस्त्र	परिमोचक ¹ (स्वाहा) ।
śastra	parimocaka (svāhā.)
(सर्व'स'द'।	परिमोचक'स'द'।)

कण कण	किणि किणि	कुणु कुणु	चर चर
kana kana	kiṇi kiṇi	kuṇu kuṇu	cara cara

1. 'स्वाहा' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

उरि उरि	उरु उरु	इन्द्रिय बल बोध्यङ्ग
ciri ciri	curu curu	indriya bala bodhyaṅga
(५८८ पञ्चमस्य दत्तं पुरा कृत्वा यत्नं यत्नं)		

चतुरार्यसत्यसंप्रकाशक	तप तप	तम तम
caturāryasatyasamprakāśaka	tapa tapa	tama tama

(१२५५ पञ्चमस्य दत्तं पुरा कृत्वा यत्नं यत्नं)

दम दम	सम सम	मस मस	धम धम
dama dama	sama sama	masa masa	dhama dhama

महाकारुणिक	महातमोऽन्धकारविधमन	षट्पारमितापरिपूरक
mahākārunika	mahātamondhakāraavidhamana	ṣaṭpāramitāparipūraka

(५८८ पञ्चमस्य दत्तं पुरा कृत्वा यत्नं यत्नं)

मल मल	मिलि मिलि	मुलु मुलु	तट तट
mala mala	mili mili	mulu mulu	ṭaṭa ṭaṭa

1. 'तप तप' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८२-५३६)

2. रभ रभ- तत्रैव

3. मस मस- तत्रैव

4. दम दम- तत्रैव

मह० वि० शुद्ध० वि० य० नि० वा० सि०

महाविशुद्धविषयनिवासिन

mahāviśuddhaviṣayanivāsina

(मह० द० क० के० य० वि० शुद्ध० वि० य० नि० वा० सि० य०)

मह० क० रु० णि० क०

महाकारुणिक१

mahākāruṇika

(मृग० स० ह० के० णि० क०)

(सप्तपरिवारमन्त्रः = Saptaparivāra-mantraḥ)

श्वेत० य० ज्ञो० प० वी० त०

श्वेतयज्ञोपवीत

śvetayajñopavīta

(श्वेत० य० ज्ञो० प० वी० त०)

य० क० त०)

रत्न० मुकुट० माला० धर०

रत्नमुकुटमालाधर

ratnamukutaṁmālādhara

(रत्न० मुकुट० माला० धर०)

सर्व० ज्ञ० शिर० सिकृ० तज० टामु० कुट०

सर्वज्ञशिरसिकृतजटामुकुट

sarvajñaśirasikṛtajaṭāmukuta

(सर्व० ज्ञ० शिर० सिकृ० तज० टामु० कुट०)

महो० भूत० त० (महो० भूत०) कमल० अलं० कृत० कर० तल०

2महोद्भूत (महोद्भूत) कमल-अलंकृतकरतल

mahodbhūtakamala-alamkṛtakaratala

(महो० भूत० त० (महो० भूत०) कमल० अलं० कृत० कर० तल०)

ध्यान० समाधि० विमोक्ष०-3अप्रकम्प्य

ध्यानसमाधिविमोक्ष-3अप्रकम्प्य

dhyānasamādhivimokṣa aprakampya

(ध्यान० समाधि० विमोक्ष०-3अप्रकम्प्य)

बहु० सत्त्व० सन्त० ति० परि० 4पाचक

बहुसत्त्वसन्ततिपरि४पाचक

bahusattvasantatiparipācaka

(बहु० सत्त्व० सन्त० ति० परि० 4पाचक)

मह० क० रु० णि० क०

महाकारुणिक

mahākāruṇika

(मृग० स० ह० के० णि० क०)

1. 'सप्तपरिवारमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशानामहदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

2. महोद्भूत- तत्रैव

3. प्रकम्प्य- तत्रैव

4. ०पालक- तत्रैव

सर्वकर्मविवरणविशोधक

sarvakarmāvaraṇaviśodhaka

(लस'क्ष्व'गु'ङ्'य'प)

सर्वव्याधि¹परिमोचक

sarvavyādhiparimocaka

(क'ङ्'म'गु'ङ्'ल'स'य'सु'य'म'ङ्'य)

sarvasattvāśāparipūraka

(सि'म'स'त'ङ्'गु'ङ्'प'स'य'स'ह'य'स'य)

सर्वसत्त्वसमाश्वासनकर नमोऽस्तु ते स्वाहा।

sarvasattvasamāśvāsanakara namo'stu te svāhā।

(अ'स'गु'ङ्'द'सु'य'स'य'म'ङ्'य'प'स'य'स'ह'य'स'य)

अमोघाय स्वाहा।

Amoghāya svāhā.

(द'ङ्'य'ल'स'य)

अमोघपाशाय स्वाहा।²

Amoghapāśāya svāhā.

(द'ङ्'य'ल'स'य)

अजिताय स्वाहा।

Ajitāya svāhā.

(अ'ज'म'य)

सर्वज्ञानपरिपूरक

sarvajñānāparipūraka

सर्वसत्त्वाशापरिपूरक

(सि'म'स'त'ङ्'गु'ङ्'प'स'य'स'ह'य'स'य)

सर्वसत्त्वसमाश्वासनकर नमोऽस्तु ते स्वाहा।

sarvasattvāśāparipūraka

(सि'म'स'त'ङ्'गु'ङ्'प'स'य'स'ह'य'स'य)

(सि'म'स'त'ङ्'गु'ङ्'प'स'य'स'ह'य'स'य)

(हासमन्त्रः = Hāsa-mantrah)

अपराजिताय स्वाहा।

Aparājitāya svāhā.

(अ'प'र'ज'म'य)

1. विमोचक- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

2. 'हासमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव

ཨམིདྲཱལ་སྐྱུར།

अमिताभाय स्वाहा ।

Amitābhāya svāhā.

(འོད་དཔག་མེད་ལ།)

ཨམིདྲཱལ་སྐྱུར།

अमिताभसुताय स्वाहा ।

Amitābhasutāya svāhā.

(འོད་དཔག་མེད་གྱི་སྐུ་ལ།)

མར་སྐྱུ་ཡམ་དྲཱལ་སྐྱུར།

मारसैन्यप्रमर्दनाय स्वाहा ।

Mārasainyapramardanāya svāhā.

(བདུད་གྱི་དཔུང་རབ་དུ་འཇོམས་པ་ལ།)

འཇམ་ཡལ་སྐྱུར།

1अभयाय स्वाहा ।

Abhayāya svāhā.

(མི་འཇིགས་པ་ལ།)

འཇམ་ཡལ་སྐྱུར།

अभयप्रदाय स्वाहा ।

Abhayapradāya svāhā.

(མི་འཇིགས་པ་རབ་དུ་སྐྱུ་པ་ལ།)

ཇལ་སྐྱུར།

जयाय स्वाहा ।

Jayāya svāhā.

(ཇལ་བ་ལ།)

བེཇལ་སྐྱུར།

विजयाय स्वाहा ।

Vijayāya svāhā.

(རྒྱལ་པར་ཇལ་བ་ལ།)

ཇལ་བེཇལ་སྐྱུར།

जयविजयाय स्वाहा ।

Jayavijayāya svāhā.

(ཇལ་ཁིང་རྒྱལ་པར་ཇལ་བ་ལ།)

བར་དྲཱལ་སྐྱུར།

वरदाय स्वाहा ।

Varadāya svāhā.

(མཚོག་སྐྱུ་པ་ལ།)

བར་དྲཱལ་སྐྱུར།

वरप्रदाय स्वाहा ।

Varapradāya svāhā.

(མཚོག་རབ་དུ་སྐྱུ་པ་ལ།)

(དམ་མ་ཡིན་པའི་འཆི་བ་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་ལ།

བདག་གི་ལས་འདི་ཡང་མཛོད་ཅིག་བྱུང་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

(हृदयमन्त्रः = Hṛdaya-mantramḥ)

Om rana rana hūm phat svāhā.

Om jaya hūm phat svāhā.

(কৃষ্ণ'বা)

Om jra ji jum svāhā.

Om hūm jaya svāhā.

(কৃষ্ণ'বা)

Om hrīḥ trailokyavijaya amoghapāśa apratihata hrīḥ haḥ hūm phat svāhā.

(འཛིག་རྟོག་གསུམ་ལས་རྣམ་རྒྱལ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ།)

(उपहृदयमन्त्रः = Upahṛdaya-mantraḥ)

1. 'हृदयमन्त्रम्' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. ॐ पुजिताय हूँ फट्- तत्रैव
3. जय हूँ स्वाहा- तत्रैव
4. ह्रीं:- तत्रैव
5. प्रतिहत ह्रीं हः हूँ फट् स्वाहा। उपहृदयमन्त्रः- तत्रैव

འཁོར་བ་འཛིན།)

(མང་འཛིན་མང་འཛིན།)

(བཙུག་ལྷན་འདས་བདག་གི་མི་དགེ་བའི་ལས་ཚུར་བར་ངེས་པ་དང་མ་ངེས་པ་མཁྲུས་པ་ཟད་པར་མཛོད་ཅིག་སྟུག།)

ཨྱིས་ངས་རྒྱས་དང་ཚྱིས་དང་དགེ་འདུན་ལ་སྣུ། ॥)

འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཞེས་ཕུ་བའི་གཟུང་ས་རྩོགས་པོ། །



1. हौं: हूं फट् स्वाहा ।- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. परिक्षयं - तत्रैव

(5) ॐ वसुवर्धनं वसुवर्धनं वसुवर्धनं

(1 एकादशाननधारणी = Ekādaśānanadhārāṇī)

ॐ नमो रत्नत्रयाय ।

2 नमो रत्नत्रयाय ।

Namo-ratnatrayāya.

(ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥)

ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥

नम आर्यज्ञानसागरवैरोचनव्यूह³राजाय तथागताय ।

Nama Āryajñānasāgaravairocanavyūharājāya tathāgatāya.

(ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥)

ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥

नमः सर्वतथागतेभ्यः अर्हद्भ्यः सम्यक्संबुद्धेभ्यः ।

Namaḥ sarvatathāgatebhyaḥ arhadbhyaḥ samyaksaṃbuddhebhyaḥ.

(ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥)

ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥

नम आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय ।

Nama āryāvalokiteśvarāya bodhisattvāya mahāsattvāya mahākāruṇikāya

(ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥)

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी' (पत्रांक- ५४a) तथा 'आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी' (पत्रांक- २४४a) शीर्षक से उपलब्ध है ।

2. 'ॐ नमो रत्नत्रयाय'- आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २४४a); ॐ नम आर्यावलोकितेश्वराय- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a) .

3. ०राजतथागतायाहंते सम्यक्संबुद्धाय- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a); ०राजाय तथागतायाहंते सम्यक्संबुद्धाय- आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी (पत्रांक- २४४a)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
तद्यथा- ॐ धर धर धिरि धिरि धुरु धुरु एट्टे वट्टे २चले चले
Tdyathā- Om dhara dhara dhiri dhiri dhuru dhuru ette vatte cale cale
(ॠॡॢॣ।॥)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
३प्रचले प्रचले ४कुसुमे कुसुमवरे इलि मिलि ५चितिज्वलमपनये स्वाहा।
pracale pracale kusurne kusumavare ili mili citijvalamapanaye svāhā.
(ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥)

(६) ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
(शीलविशुद्धिधारणी = Śilaviśuddhidhārāṇī)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
ॐ अमोघशीलसंभर भर भर महाशुद्धसत्त्व
Om amoghaśīlasaṁbhara bhara bhara mahāśuddhasattva
(ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥)
ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
पद्मविभूषितभुज धर धर समन्त-अवलोकिते हूं फट्।
padmavibhūṣitaḥbhuja dhara dhara samanta-avalokite hūṁ phaṭ.
(ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥)

- ॠॡॢॣ।॥-क.
- चल चल- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a)
- प्रचर(ल) प्रचर(ल)- तत्रैव
- कुसुमे कुसुमचले- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a), कुसुम कुसुमवरे आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी(पत्रांक- २४४a)
- चित्ताज्वालन(म)पनये- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (पत्रांक-५४a),चितिज्वालन(म)पनये आर्य सर्वलोकेश्वरधारणी(धा० सं०, पत्रांक- २४४a)

(¹उष्णीषविजयाधारणी = Uṣṇīṣavijayādhārāṇī)

བྱུང་པ་དེ་ནི་མཆོག་ལ།

बुद्धाय ते नमः।

Om namo bhagavate sarvatrailokyapratiṣṭāya. buddhāya te namaḥ.

(ཨྲིལ་མས་གསུམ་རྒྱན་ལས་བྱུང་[པར་དུ]།)འཕགས་པའི་(?)བཅོམ་ཐུན་འདས་ལ་བྱུག་འཛལ་ལོ། །སངས་བྱུང་།

ཁྱེད་ལ་ཕུག་འཆལ་ལོ།)

৫৫শ্রী ৐ঃ
 ৐ঃ
 ৐ঃ
 ৐ঃ

শ্রদ্ধা শ্রদ্ধা বি-শ্রদ্ধা বি-শ্রদ্ধা

तद्यथा- ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रूं

शोधय शोधय विशोधय विशोधय

Tadyathā- Om bhrūm bhrūm bhrūm śodhaya śodhaya viśodhaya viśodhaya

(དི་ལྟ་སྟེ ཡོང་ཆ་ཡོང་ཆ། རྒྱུ་ཡོང་ཆ་རྒྱུ་པར་ཡོང་ཆ།)

ཨ་སུམ་སུམ་ཨ་བརྒྱལ་གླེང་ཤི་གཞན་སྐད་ཀྱི་འཕྲིན།

असमसमन्तावभासस्फरणगतिगगनस्वभावविशुद्धे² (उष्णीषविजयापरिशुद्धे)

**asamasamantāvabhāsaspharaṇagatigaganasvabhāvaviśuddhe (uṣṇīṣavijayā-
pariśuddhe)**

(མཉམ་མེད་ཀུན་ནས་འོད་འཕྲོའི་གནས། །ནམ་མཁའི་ཡང་བཞིན་རྣམ་དག་ལ། །)

1. प्रस्तुत धारणी 'आर्योष्णीषविजयानामधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- १४५b-१४७a) शीर्षक के अन्तर्गत पत्रांक १४६a-१४६b में वर्णित है। यद्यपि अन्त में वर्णित 'ॐ भ्रूँ स्वाहा-----सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा' तक का मन्त्र उपलब्ध नहीं है।
इस धारणी का प्रारम्भ ॐ नमो भगवते आर्य-उष्णीषविजयायै के पश्चात् 'एवं मया श्रुतम्' से हुआ है और अन्त में इस धारणी की पूजा-पाठ विधान एवं फल आदि का वर्णन है।
2. 'उष्णीषविजयापरिशुद्धे' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)

ཨཐིའི་ཕུན་སྒྲོལ།

अभिषिञ्चन्तु मां

abhiṣiñcantu mām.

(བདག་ལ་མངོན་པར་དབང་བསྐྱར་གསོལ།)

སྙུག་པ་པའཕམ་

सुगत¹प्रवचन-

sugatapravacana

(བདེ་བར་གསལ་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི།)

མདྲ་མུདྲ་མུདྲ་པདེ་²།

महामुद्रामन्त्रपदैः

mahāmudrāmantrapadaiḥ

(ཡུག་ཆེན་ཐུགས་རྒྱུ་ཆེན་མཁས་ཀྱིས།)

མམ་ཡུལ་སྤྲོད་རྩི།

4मम आयुस्संधारणि

mama āyussamdhāraṇi

(བདག་གི་ཆེ་ནི་ཀྱན་འཛིན་མ།)

བེ་སྤྲོད་པ་བེ་སྤྲོད་པ།

विशोधय विशोधय

viśodhaya viśodhaya

(རྒྱལ་རྒྱུང་ས་རྒྱལ་པར་རྒྱུང་ས།)

སའ་དཔྱལ་དུ།

सर्वतथागताः

sarvatathāgataḥ

(དེ་བཞིན་གསལ་པ་ཐམས་ཅད་དང་།)

ཨམྲིཏ་ཨཐིའི་ཀེ།

अमृत-अभिषेकैः

amṛta-abhiṣekai

(བདུད་རྩི་མངོན་པར་དབང་བསྐྱར་དང་།)

ཨྲ་ར་ཨྲ་ར།

3(ॐ) आहर आहर

āhara āhara

(ཀྱན་བསྐྱུས་ཀྱན་ནས་བསྐྱུ་བར་མཛོད།)

སྤྲོད་སྤྲོད།

शोधय शोधय

śodhaya śodhaya

(རྒྱུང་ས་རྒྱུང་ས།)

གགན་སྙུལ་བེ་སྤྲོད།

गगनस्वभावविशुद्धे

gaganasvabhāvaviśuddhe

(རྒྱལ་མཁའི་རང་བཞིན་རྒྱལ་དག་མ།)

1. वरवचन- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)

2. पदैः- ख.

3. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)

4. 'मम' नास्ति- तत्रैव

प्रतिनिवर्तय मम आयुर्विशुद्धे

pratinivartaya mama āyurviśuddhe

adhiṣṭhite

(नमः परमं कुरु मर्त्यं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

ॐ मुनि मुनि महामुनि

Om muni muni mahāmuni

(सुखं पश्यन्ति सुखं पश्यन्ति)

मति मति महामति

mati mati mahāmati

(नमः कुरु मर्त्यं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

भूतकोटिपरिशुद्धे

bhūtakoṭipariśuddhe

(परमं दानं कुरु मर्त्यं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

हे हे जय जय

he he jaya jaya

(गुरुं गुरुं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

सर्वतथागतसमय-अधिष्ठान-अधिष्ठिते

sarvatathāgatasamaya-adhiṣṭhāna-

adhiṣṭhite

विमुनि विमुनि महामुनि

vimuni vimuni mahāvīmuni

(सुखं पश्यन्ति सुखं पश्यन्ति)

ममति सुमति तथता

mamati sumati tathatā

(नमः कुरु मर्त्यं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

विष्णुतुष्टिपरिशुद्धे

viṣṇuṭuṣṭipariśuddhe

(परमं दानं कुरु मर्त्यं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

विजय विजय

vijaya vijaya

(गुरुं गुरुं वदन्ति ते । कुरु दानं देवलिङ्गं वदन्ति ते । नमः कुरु प्रियं कुरु वदन्ति ते ॥)

1. 'विमुनि' नास्ति- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)

2. विष्णुटीविशुद्धे- तत्रैव

శ్రీ గృహిణి

स्मर स्मर

smara smara

(ཐུན་པ་ཐུན་པ།

ཐུ་རྩ་ཐུ་རྩ་

स्फारय स्फारय

sphāraya sphāraya

(ཁྱས་མཛོད་ཁྱས་མཛོད།)

ॐ ॐ

3(ॐ) शुद्धे शुद्धे

(Om) śuddhe śuddhe

(དག་ཅིང་དག་མ་སངས་རྒྱས་མ།

མདྲ་བརྟེ་སུབརྟེ།

महावज्रे 4सुवज्रे

mahāvajre suvajre

(རྫོག་ཆེན་མོ་རྫོག་པའང་།

ཐེངས་ལྔ་པ་གསུམ།

6 विजयगर्भे

vijayagarbhe

(རྒྱལ་པར་གྱི་བའི་སྒྲིང་པོ་ལ།

정·정·정·정

1स्फर स्फर

sphara sphara

सुनः प्रैः सुनः ।)

མད་བྱུ་ཨནྲིརྟ་ཨནྲིརྟ།

सर्व^२बुद्ध-अधिष्ठान-अधिष्ठिते ।

sarvabuddha-adhithāna-adhithite

སངས་རྒྱལ་ནི་(?)ཀྱི་བྱིན་ལྷན་གྱི་ལྷན་ལ།)

ସୁଆଁ, ସୁଆଁ, ସୁଆଁ, ସୁଆଁ

बुद्धे बुद्धे वज्रे वज्रे

buddhe budhhe vajre vajre

།སངས་བྱུང་དོན་དོན་མ། །)

བརྒྱ་གཞི་རྒྱ་གཞི།

वज्रगर्भे 5जयगर्भे

vajragarbhe jayagarbhe

༥༥ རྩིང་མ་གྲུབ་པའི་རྩིང་། །)

மா. ஆ. சி. சி.

वज्रज्वालागर्भे

vajrajvālāgarbhe

|རྩི་ཆེ་འབར་བའི་སྤྱང་པོ་མ། ་)

1. स्फुर स्फुर- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. सर्वमुद्रा०- तत्रैव
3. 'ॐ' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'सुवज्रे' नास्ति- तत्रैव
5. 'जयगर्भे' नास्ति- तत्रैव
6. 'विजयगर्भे' नास्ति- तत्रैव

वज्रैर्ह्रस्वे

वज्रोद्भवे

vajrodbhave

(६६'२५८'भा)

वज्रैःसंश्रुते

वज्रसंभवे

vajrasambhave

(६६'२५८'भा)

वज्रे वज्रिणि

vajre vajrini

(६६'३३'भा)

वज्रं भवतु मम शरीरम् ।

vajram bhavatu mama śarīram

(६६'३३'भा)

सर्वसत्त्वानाञ्च कायपरिशुद्धिर्भवतु ।

sarvasattvānāñca kāyapariśuddhirbhavatu me

(सर्वसत्त्वानाञ्च कायपरिशुद्धिर्भवतु ।)

(६६'३३'भा)

(६६'३३'भा)

ॐ सदा सर्वगतिपरिशुद्धिश्च ।

ॐ सदा सर्वगतिपरिशुद्धिश्च ।

(६६'३३'भा)

सर्वतथागताश्च मां

sarvatathāgatāśca māṃ

(६६'३३'भा)

समाश्रयन्तु ।

samāśvāsayantu

(६६'३३'भा)

बुद्धे बुद्धे

ॐ बुद्धे बुद्धे (ॐ बुद्धे बुद्धे)

सिद्धे सिद्धे

ॐ सिद्धे सिद्धे (सिद्धे सिद्धे)

1. वज्रं भवतु मम सपरिवारं- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)

2. ०परिशुद्धिर्भवतु- तत्रैव

3. मम सर्वदा सर्वगतिपरिशुद्धं च- तत्रैव

4. मम सर्वतथागतश्चेमां- तत्रैव

5. ॐ बुद्धे बुद्धे- तत्रैव

6. सिद्धे सिद्धे- तत्रैव

buddhya buddhya(Oṃ buddhe buddhe) siddhya siddhya (siddhe siddhe)

(ཐང་ཐང་མ།

བྱུ་བྱུ་མ།)

བོདྱལ་བོདྱལ།

བིབོདྱལ་བིབོདྱལ།

बोधय बोधय

विबोधय विबोधय

bodhaya bodhaya

vibodhaya vibodhaya

(རྟོགས་མཛོད་རྟོགས་མཛོད།

རྣམ་རྟོགས་མཛོད་རྣམ་རྟོགས་མཛོད།)

མོཙལ་མོཙལ།

བིམོཙལ་བིམོཙལ།

मोचय मोचय

विमोचय विमोचय

mocaya mocaya

vimocaya vimocaya

(བྲོལ་མཛོད་བྲོལ་མཛོད།

རྣམ་པར་བྲོལ་མཛོད་རྣམ་བྲོལ་མཛོད།)

ཤོདྱལ་ཤོདྱལ།

བིཤོདྱལ་བིཤོདྱལ།

शोधय शोधय

विशोधय विशोधय

śodhaya śodhaya

viśodhaya viśodhaya

(སྟོར་སྟོར་ས།

རྣམ་སྟོར་ས་རྣམ་པར་སྟོར་ས།)

སམརྟཱན་མོཙལ་མོཙལ།

སམརྟཱན་རྩི་པརི་བྱུ།

समन्तान् मोचय मोचय

समन्तरश्मिपरिशुद्धे

samantān mocaya mocaya

samantaraśmipariśuddhe

(ཀུན་ནས་བྲོལ་མཛོད་བྲོལ་པར་མཛོད།

ཀུན་ནས་འདྲ་ཟེར་ཡོང་ས་དག་མ།)

སའ་དྭམྱག་དྭིདལ།

ཨདྷིཐྱཱན་ཨདྷིཐྱིདེ།

सर्वतथागतहृदय-

अधिष्ठान-अधिष्ठिते ।

sarvatathāgatahṛdaya

adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite

(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་རྩི་པོལ།

ཁྱི་གྱི་ལྷབས་ཀྱིས་ཁྱི་བལྷབས་མ།)

मुद्रे मुद्रे महामुद्रे

1 (ॐ) मुद्रे मुद्रे महामुद्रे

mudre mudre mahāmudre

(ॐ मुद्रे मुद्रे मुद्रे मुद्रे)

महामुद्रामन्त्रपदैः स्वाहा

महामुद्रामन्त्र²पदैः (पदे) स्वाहा³

mahāmudrāmantrapadaiḥ (pade) svāhā

(ॐ महामुद्रामन्त्रपदैः स्वाहा ।)

ॐ भ्रूं स्वाहा

ॐ भ्रूं स्वाहा⁴

Om bhrūṃ svāhā

(हृदयमन्त्रः = Hṛdaya-mantraḥ)

ॐ अमृत-आयुर्ददे स्वाहा

ॐ अमृत-आयुर्ददे स्वाहा⁵

Om amṛta āyurdade svāhā

(ॐ अमृत-आयुर्ददे स्वाहा ।)

(उपहृदयमन्त्रः = Hṛdaya-mantraḥ)

ॐ आः हूं हां हीः अं अः रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा

ॐ आः हूं हां हीः अं अः रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा ।

Om Āḥ hūṃ hrām hrīḥ aṃ aḥ rakṣa rakṣa mām sarvasattvāṃśca svāhā.

(ॐ आः हूं हां हीः अं अः रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा ॥)

•

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. ०पदे- तत्रैव
3. इस के बाद का मन्त्र 'आर्योष्णीषविजयानामधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- १४५b-१४७a) में नहीं है।
4. 'हृदयमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयासाधनं (साधनमाला, भाग-२), पृ० ४१८
5. 'उपहृदयमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव

(१उष्णीषविमलधारणी = Uṣṇīṣavimaladhārāṇī)

ནམ་པག་དབྱུག་དྲིལ།

(ॐ) २नमः सर्वतथागतानाम् ।

(Om) namaḥ sarvatathāgatānām.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀྱི་ལ་ཕྱག་འཆལ། །)

ཨོ་མདྲ་ཅི་རྩུ་མཆི་རྒྱལ་ན་སྤྲལ་ར་གཤམི་ར་ཞུགས་ལྷལ་ཞུགས་ལྷལ།

ॐ महाचिन्तामणि ज्वलनसागर^{१२}गम्भीर आकर्षय आकर्षय

Om mahācintāmani jvalanasāgaragambhīra ākarsaya ākarsaya

(ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཆེར་འབར་བའི། ཁྱ་མཆོ་ཟབ་མོ་འགྲགས་ཤིང་འགྲགས། །)

ସ୍ୱୟଂ ଓ ସ୍ୱୟଂ ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

꺄꺄'꺄꺄

॥१॥

आयुं धर आयुं धर

सन्धर सन्धर

क्षण क्षण

क्षिणि क्षिणि

āyurṃ dhara dhara

sandhara sandhara

ksana ksana

ksini ksini

ꠘꠞꠟ ꠘꠞꠟ

སའ་ཏཱ་ལྷ་མཉུ་སའ་ཡེ་དཱེ་དཱེ།

क्षुण्ण क्षुण्ण

सर्वतथागत⁴महासमये तिष्ठ तिष्ठ

ksunu ksunu

sarvatathāgatamahāsamaye tiṣṭha tiṣṭha.

(དེ་བཞིན་གཤམས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དམ་ཆེན་ཆེ་ལ་བརྟན་པར་གནས། །)

1. प्रस्तुत धारणी 'चिन्तामणिनामधारणी' नाम से धारणी संग्रह (पत्रांक- १०४b-१०५a) में उपलब्ध है। यद्यपि इसके प्रारम्भ में कुछ मन्त्र अधिक हैं, जिनको पाद-टिप्पणी में दिया जा रहा है। इसके बाद प्रस्तुत धारणी यथावत् है।
2. 'ॐ नमो रत्नत्रयाय। नमः सम्यक्संबुद्धकोटीनाम्। तद्यथा— ॐ चले चूले चूंदे महाविद्ये सत्यवादिनि वरदे कथय कथय स्वाहा। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अः। क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष। ॐ' —इत्यधिकम्, चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १०४b-१०५a)।
3. ०गम्भीरे- तत्रैव
4. 'महा' नास्ति- तत्रैव

महूँ सुवक् स्रुगरे संशोधय मां सर्वसत्त्वांश्च ।

महाभुवनसागरे संशोधय मां सर्वसत्त्वांश्च ।

mahābhuvanasāgare saṁśodhaya mām sarvasattvāṁśca.

(सदृशं दत्तं सैव सा उक्तं सैव सा उदग्नि । श्रद्धां पतिः शुभं कर्तुं के गुणं शुद्धं सा ।)

भगवति सर्वपापविमले

भगवति सर्वपापविमले

bhagavati sarvapāpavimale

(सर्वपापविमलं भगवति सर्वपापविमले ।)

जय जय जयलब्धे

जय जय जयलब्धे

jaya jaya jayalabdhe

(जय जय जयलब्धे ।)

स्फुट स्फुट

स्फुट स्फुट

saphuṭa saphuṭa

स्फोटय स्फोटय

स्फोटय स्फोटय

saphoṭaya saphoṭaya

विगतावरणे भयहरणे

विगतावरणे भयहरणे

vigatāvaraṇe bhayaharaṇe

(विगतावरणं भयहरणं ।)

हूं हूं हूं मृत्युदण्डधरे

हूं हूं हूं मृत्युदण्डधरे

hūṁ hūṁ hūṁ mṛtyudaṇḍadhare

(हूं हूं हूं मृत्युदण्डधरे ।)

अभयप्रदे उष्णीषव्यवलोकिते

अभयप्रदे उष्णीषव्यवलोकिते

abhayaprade uṣṇīṣavyavalokite

(अभयप्रदं उष्णीषव्यवलोकिता ।)

समन्तमुखे समन्तव्यवलोकिते

समन्तमुखे समन्तव्यवलोकिते

samantamukhe samantavyavalokit

(समन्तमुखं समन्तव्यवलोकिता ।)

महामाये महा¹पाशधरे

महामाये महा¹पाशधरे

अमोघ²विमल(ले) आकर्षय आकर्षय

अमोघ²विमल(ले) आकर्षय आकर्षय

1. ०याते(?) धरे - चिन्तामणिनामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- १०४b-१०५a)

2. ०विमले- तत्रैव

mahāmāye mahāpāsadhare

(མཁའ་མཛུགས་ཆེན་མོ་ལགས་པ་ཆེ་འཆང་མ།)

ལྷ་ཀ་རྒྱལ་ལྷ་ཀ་རྒྱལ་

आकङ्कय आकङ्कय

ākadḍhaya ākadḍhaya

ཇི་རྒྱལ་བེ་ཤོ་རྒྱལ་བེ་ཤོ་རྒྱལ་བེ་ཤོ་

1 इन्द्रियविशोधनि भूषितभुजे

indriyaviśodhani bhūṣitabhuje

(དབང་པོ་རྣམ་པར་རྫོང་བ་ཡན་ལག་བརྒྱུ།)

ཇལ་ཇལ་

जय जय

jaya jaya

(རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ་)

བུ་རྒྱལ་བུ་རྒྱལ་

2 बुद्धे बुद्धे

buddhe buddhe

(མང་མ་རྒྱལ་མ་མང་མ་རྒྱལ་མ།)

སྦོ་བུ་རྒྱལ་སྦོ་བུ་རྒྱལ་

संबोधनि संबोधनि

sambodhani sambodhani

(ཀུན་ནས་རྟོགས་ཀྱིང་མ་ཀུན་ནས་རྟོགས་ཀྱིང་མ།)

amoghavimala(le) ākarṣaya ākarṣaya

(དོན་ཡོད་ཇི་སྒྲུབ་འགྲུགས་ཤིང་འགྲུགས་མཛད་པ། 1)

བྱར་བྱར་སྦྲི་བྱར་སྦྲི་བྱར་

भर भर संभर संभर

bhara bhara saṃbhara saṃbhara

མརྒྱ་མུརྒྱ་བེ་ལོ་གེ་

महामुद्राविलोकिते

mahāmudrāvilokite

(ཕུག་བྱ་ཆེན་མོ་རྣམ་གཟིགས་མ། 1)

སི་རྩེ་སི་རྩེ་

सिद्धे सिद्धे

siddhe siddhe

(བྱུང་བ་མ་བྱུང་བ་མ།)

བོ་རྩེ་བོ་རྩེ་

बोधनि बोधनि

bodhani bodhani

(རྟོགས་ཀྱིང་མ་རྟོགས་ཀྱིང་མ།)

ཤོ་བུ་རྩེ་ཤོ་བུ་རྩེ་

शोधनि शोधनि

śodhani śodhani

(རྫོང་ཀྱིང་མ་རྫོང་ཀྱིང་མ།)

1. 'इन्द्रियविशोधनि' नास्ति- चिन्तामणिनामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- १०४b-१०५a)

2. 'बुद्धे बुद्धे' नास्ति- तत्रैव

संशोधने संशोधने।	विशोधने विशोधने।
संशोधनि संशोधनि	विशोधनि विशोधनि
saṁśodhani saṁśodhani	viśodhani viśodhani
(गुणं कसंभुं मं गुणं कसंभुं मं)	कसंभुं मं कसंभुं मं)
हर हर मम सर्वपापं	सर्वतथागतकुलभुजे
hara hara mama sarvapāpaṁ	sarvatathāgatakulabhujе
(वदन् विप्रस्यन् पं प्रमत्तं उदं प्रमत्तं विप्रस्यन्)	(दि वदितं विप्रस्यन् पं गुणं विप्रस्यन् १ भुं मं)
समयतिष्ठे प्रसारन्तु मम पुण्यं विनश्यन्तु पापं सर्वकिल्बिषहरे मणिविशुद्धे	सर्वतथागतोष्णीषविलोकिते स्वाहा।
saṁyatiṣṭhe prasārantu mama puṇyaṁ vinaśyantu pāpaṁ sarvakilviṣahare	sarvatathāgatoṣṇīṣavilokite svāhā.
manivīśuddhe.	
(दमं केषं कसंभुं मं वदन् विप्रस्यन् कसंभुं मं । २ वदन् कसंभुं मं वदन् विप्रस्यन् कसंभुं मं । विप्रस्यन् कसंभुं मं कसंभुं मं १)	
शोधय विमले	विकसितपद्मकवचितभुजे
śodhaya vimale	vikasitapadmakavacitabhujе
(भुं मं विप्रस्यन् मं वदन् प्रमत्तं)	(कसंभुं मं विप्रस्यन् कसंभुं मं १)
षट्पारमिता परिपूरणि	सर्वतथागतोष्णीषविलोकिते स्वाहा।
ṣaṭpāramitā paripūraṇi	sarvatathāgatoṣṇīṣavilokite svāhā.
(धं रं विप्रस्यन् मं वदन् प्रमत्तं)	(दि वदितं विप्रस्यन् पं गुणं विप्रस्यन् कसंभुं मं कसंभुं मं १)

མཐོང་དྲགས་པ་བྱུང་། ཡན་འཛིན་ལྷ་ཡན་འཛིན་ཏེ་སྤྱད།

सर्वतथागतगुह्य-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा ।

Sarvatathāgataguhyā-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite svāhā.

ཡུལ་དེ་སྤྲུལ།

आयुर्ददे स्वाहा ।

Āyurdade svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤམས་ཀུན་གསང་བ་ཡི། འབྲིན་གྱི་ལྷ་བས་ཀྱིས་འབྲིན་བལྟ་བས་མ།།

ཆེ་ལྷན་ལ།)

1 ཡུལ་དང་སྤྱད།

३पुण्य ददे स्वाहा ।

Puṇya dade svāhā.

(བསྟོན་ནམས་སྒྱུ་ལ།

2ཡུལ་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ལྟར།

पुण्य विलोकिते स्वाहा ।

Puṇya vilokite svāhā.

བསྟོན་ནམས་ནམ་གཟིགས་ལ།)

4ཡུ་ཨའལྱུ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་

पुण्याव^५लोकिते स्वाहा ।

Puṇyāvalokite svāhā.

(བསོད་ནམས་ཀུན་གཟིགས་མ།)

མིང་དཔྱད་པུ་ལྟོ་

मृत्युदण्डे स्वाहा ।

Mrtyudande svāhā.

འཆི་བདག་དབྱུག་པ་མ།)

ཡམདལྷེ་སྤྲུལ།

यमदण्डे स्वाहा ।

Yamadāṇḍe svāha.

(གཤིན་ཏེ་དཔྱད་པ་ལ།

ཡེམ་དུ་ཏེ་སྤྲུལ།

यमदत्ते स्वाहा ।

Yamadūte svāhā.

ལ་གྱིས་རྒྱ་མོ་བུ།)

1. शुद्ध- क.
2. शुद्ध- क.
3. पुण्य- चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं० पत्रांक- १०४b-१०५a)
4. शुद्ध- क.
5. ओरोपिते- चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं० पत्रांक- १०४b-१०५a)
6. यमदूते- ख.

संहरति॑ स्मृत्यु॒

संहरणि स्वाहा ।

Samharani svāhā.

(सुखं भवेत् सा)

संभरति॑ स्मृत्यु॒

संभरणि स्वाहा ।

Sambharani svāhā.

(सुखं भवेत् सा)

सन्धारति॑ स्मृत्यु॒

सन्धारणि स्वाहा ।

Sandhāraṇi svāhā.

(लक्ष्मीं भवेत् सा)

प्रति॑सरति॑ स्मृत्यु॒

प्रति२सरणि स्वाहा ।

Pratisaraṇi svāhā.

(सौख्यं भवेत् सा)

ओजो॑वति॑ स्मृत्यु॒

ओजोवति स्वाहा ।

Ojovati svāhā.

(अदम्यं भवेत् सा)

तेजो॑वति॑ स्मृत्यु॒

तेजोवति स्वाहा ।

Tejovati svāhā.

(वज्रं भवेत् सा)

जय॑ति॑ स्मृत्यु॒ सत्त्वं॑ द्रष्ट॑व्यं॒ मुद्रा॑न् अ॒धि॒ष्ठि॒त॑स्मृत्यु॒

जयवति स्वाहा । सर्वतथागतमुद्रा-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा ।

Jayavati svāhā. Sarvatathāgatamudrā-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite svāhā

(सुखं भवेत् सा देवदेवि सर्वेषां गुणप्रदायि त्रिकुण्डलवस्त्रिभुवनवस्त्रिभुवनं ॥)

•

1. संभरति - क.

2. संरक्षण- चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं० पत्रांक- १०४b-१०५a) ।

(10) རྩ་གསང་བ་རིང་བསྐྱེལ་[གྱི་གཟུངས་] རྟེ།

(1गुह्यधातुधारणी = Guhyadhātudhāraṇī)

ནམསྟེལའྟིཀློ།

སམ་དཔྱལ་དྲུགློ།

नमस्त्रैयध्विकानां

सर्वतथागतानां

Namastraiyadhvikānām

sarvatathāgatānām.

(དུས་གསུམ་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

དཔྱལ་དྲུག་རྩལ་ཕྱམ་རྩེ།

བརྩ་བོནྟེ་མརྩ་ཨལློ་རྩ་ཨལློ་རྩེ།

2तथागतधर्मचक्रप्रवर्तने

3वज्रबोधिमण्ड-अलंकार-अलंकृते

tathāgatadharmacakrapravarttane

vajrabodhimanda-alaṃkāra-alaṃkr̥te

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཆོས་འཁོར་རབ་སྒྲེར་ལ།)

འོ་ཇི་ཡང་ཆུབ་སྤྱིར་པོ་ཟུན་གྱིས་བརྩམ།)

ཨྲོ་ཐུབ་ཐུབ་ལྟ་བུ་བའི་བཅའྟེ།

ཅུལུ་ཅུལུ་ཐར་ཐར།

ॐ 4भुव भवान् वरे वचटौ

5चुलु चुलु धर धर

Oṃ bhuva bhavān vare vacaṭau

culu culu dhara dhara

སམ་དཔྱལ་དྲུག་རྩལ་ཕྱམ་རྩེ།

པརྩ་གཤི་ཇལ་ཐར་ཨལའྟི་ཐུར།

सर्वतथागतधातुधरे

6पद्मगर्भे जयवरे अचले स्मर

sarvatathāgatadhātudhare

padmagarbhe jayavare acale smara

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་རིང་བསྐྱེལ་འདྲིན།

པརྩའི་སྤྱིར་པོ་ཟུབ་མཆོག་གལ་མེད་དམ།)

1. प्रस्तुत धारणी 'श्रीधर्मचक्रप्रवर्तननामधारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- २२३b-२२४a) में उपलब्ध है, यद्यपि इसके अन्त में कुछ और मन्त्र हैं, जिन्हें पाद-टिप्पणी में रखा गया है।
2. 'तथागतधर्मचक्रप्रवर्तने' नास्ति- श्रीधर्मचक्रप्रवर्तननामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a)
3. 'वज्रबोधिमण्डालंकारालंकृते' नास्ति- तत्रैव
4. भुवि भवन वरे वचटे- तत्रैव
5. चरु चरु- तत्रैव
6. पद्मगर्भस्ति जायवरे - तत्रैव

སའ་དུག་ཏུ་ཨཱིཐྱི་ཏེ།

བོདྱལ་བོདྱལ།

1 सर्वतथागत-अधिष्ठिते

बोधय 2 बोधय

sarvatathāgata-adhiṣṭhite

bodhaya bodhya

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱིས་བྱིན་བརྒྱབས་མ།

|རྟོགས་པར་མཛད་རྟོགས་པར་མཛད།)

བོདྱན་བོདྱན།

བུདྱ་བུདྱ།

बोधनि 3 बोधनि

बुद्धय बुद्धय

bodhani bodhani

buddhya buddhya

(རྟོགས་པར་མཛད་པ་རྟོགས་པར་མཛད་པ།

རྟོགས་པ་རྟོགས་པ།)

སྟོབོདྱན་སྟོབོདྱལ།

ཙལ་ཙལ་ཙལ་རྒྱ།

4 संबोधनि संबोधय

चल चल चलन्तु

saṃbodhani saṃbodhaya

cala cala calantu

(ཀུན་ནས་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་རྟོགས་པར་མཛད།

གཡོ་བ་གཡོ་བ་གཡོ་བར་མཛད།)

སའ་ཞུབ་རུལ་ཞི་སའ་ཡུལ་བེག་ཏེ།

དུརུ་དུརུ་སའ་ཤོག་བེག་ཏེ།

सर्वावरणानि सर्वपापविगते

हुरु हुरु सर्वशोकविगते

sarvāvaranāni sarvapāpavigate

huru huru sarvaśokavigate

(རྒྱལ་པ་ཀུན་དང་རྩིས་པ་ཀུན་བྲལ་མ།

ལྷུང་ན་ཀུན་དང་བྲལ་མ།)

སའ་དུག་ཏུ་རྟོལ་ཡ།

བརྟོལ་སྟོབོདྱལ་སྟོབོདྱལ།

सर्वतथागतहृदय

वज्रिणि संभव संभव

1. तथागतधर्मचक्रप्रवर्तनवज्रबोधिमण्डालाकोलालंकृते (मण्डालंकारालंकृते ?)' इत्यधिकम्- श्रीधर्मचक्र-प्रवर्तननामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a)
2. 'बोधय' नास्ति- तत्रैव
3. 'बोधनि' नास्ति- तत्रैव
4. संबोधि- तत्रैव

|རྩི་མེ་ཡང་དག་འདྲུང་མ་གླན་འདྲུང་མ། །)

༥༥ །སང་ཅིང་རབ་སང་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀྱིན་གྱི། ༥༥

༡༥༥ ཆེག་གིས་ནི་ཕྱིན་བརྒྱབས་མ།།)

ॐ नमः॥)

1. 'बुद्धे' इत्यधिक:- श्रीधर्मचक्रप्रवर्तननामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a)
2. 'समयाधिष्ठिते स्वाहा' नास्ति- तत्रैव
3. 'सर्वतथागतहृदयधातुद्रे स्वाहा' नास्ति- तत्रैव

सर्वं नमस्तथागतधर्मधातुविभूषितेऽधिष्ठिते हुर हुर हूं हूं स्वाहा ।¹

sarvatathāgatadharmadhātuvibhūṣite adhiṣṭhite huru huru hum̐ hum̐ svāhā ।¹

(देवबिक्खवमेवसंश्रुतं कसंस्सुतं कसंस्सुतं कसंस्सुतं कसंस्सुतं ॥)

•

(11) ॐ हुरं कुपं [ग्रीष्मं पतिं] श्रुतं नमः [श्रुतं नमः] ॐ

(बोधिगर्भालङ्कारलक्षधारणी = Bodhigarbhālankāralakṣadhāraṇī)

ॐ कसंस्सुतं नमस्तथागतधर्मधातुविभूषितेऽधिष्ठिते हुर हुर हूं हूं स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते विपुलवदनकाञ्चनोत्क्षिप्तप्रभासकेतुमूर्ध्ने तथागताय ।

Oṃ namo bhagavate vipulavadanakāñcanotkṣiptaprabhāsaketumūrdhne tathāgatāya.

(सर्वं नमस्तथागतधर्मधातुविभूषितेऽधिष्ठिते हुर हुर हूं हूं स्वाहा ।
ॐ नमो भगवते विपुलवदनकाञ्चनोत्क्षिप्तप्रभासकेतुमूर्ध्ने तथागताय ।)

ॐ कसंस्सुतं नमस्तथागतधर्मधातुविभूषितेऽधिष्ठिते हुर हुर हूं हूं स्वाहा ।

नमो भगवते शाक्यमुनये तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

Namo bhagavate śākyamunaye tathāgatāya arhate samyaksaṃbuddhāya.

(सर्वं नमस्तथागतधर्मधातुविभूषितेऽधिष्ठिते हुर हुर हूं हूं स्वाहा ।
ॐ नमो भगवते शाक्यमुनये तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।)

1. 'श्रीधर्मचक्रप्रवर्तननामधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a) में यहाँ से आगे निम्नलिखित धारणीमन्त्र अधिक हैं—

“ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते जय स्वाहा । ॐ हुर हुर जयमुखे स्वाहा । ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते जय स्वाहा । ॐ हुर हुर जयमुखे स्वाहा । ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते जय स्वाहा । ॐ हुर हुर हूं हूं स्वाहा । ॐ मणिवज्रे हूं मणिवज्रे हूं । ॐ मणिधरी हूं फट् । नमः सर्वतथागतानां ॐ विपुलगर्भमणि-प्रभेदेन देहनिर्माणसुप्तेन विमले सागरगंभीरे हूं हूं ज्वल ज्वल बुद्धे बुद्धे विलोकिते गुह्याधिष्ठितगर्भ स्वाहा । ॐ मुद्गर जः, ॐ दण्ड हूं, ॐ प (पाश वं), खड्ग हा (होः) । इति श्रीधर्मचक्रप्रवर्तननाम-धारणी समाप्ता ।”

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
 तद्यथा— बोधि बोधि बोधिनि बोधिनि सर्वतथागतगोचरे
 tadyathā- bodhi bodhi bodhini bodhini sarvatathāgatagocare
 (ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॥)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
 धर धर हर हर प्रहर प्रहर महाबोधिचित्तधरे
 dhara dhara hara hara prahara prahara mahābodhicittadhare
 (ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॥)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
 चुलु चुलु शतरश्मिसञ्चोदिते सर्वतथागत-अभिषिक्ते गुणे गुणवते
 culu culu śataraśmisamcodite sarvatathāgata-abhiśikte guṇe guṇavate
 (ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॥)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
 सर्वबुद्धगुण-अवभासे मिलि मिलि गगनतले
 sarvabuddhguṇa-avabhāse mili mili gaganatale
 (ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॥)

ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥
 सर्वतथागत-अधिष्ठिते नभस्तले शमे शमे प्रशमे प्रशमे सर्वपापं प्रशमण(पापप्रशमने)
 sarvatathāgata-adhiṣṭhite nabhastale śame śame praśame praśame sarva-
 pāpaṃ praśamaṇa(praśamane).
 (ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॠॡॢॣ।॥ ॥)

སའ་ཕུཔ་བེཤོར་མེ། ཏུལ་ཏུལ། མརྒྱ་བོདྱི་མུག་སྦྱུངྱི་རྩེ།

सर्वपापविशोधने हुलु हुलु महाबोधिमार्गसंप्रतिष्ठिते

Sarvapāpaviśodhane hulu hulu mahābodhimārgasampratiṣṭhite

(རྩིས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་རྒྱུང་མ། །ཏུ་རྒྱུ་རྩེན་པོའི་ལམ་གནས་མ། །)

སའ་ཏུཐྲག་ཏུ་སྦྱུངྱི་རྩེ་ཤུཌྱི་སྦྱུ།

सर्वतथागतसुप्रतिष्ठिते शुद्धे स्वाहा ।

sarvatathāgatasupratiṣṭhite śuddhe svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །ཤིན་ཏུ་རབ་གནས་དག་པ་མ། ॥)

•

(12) རྩྱ་ཕྱགས། (मूलमन्त्रः = Mūlamantraḥ)

ཨྱོ་སའ་ཏུཐྲག་ཏུ་བཤེལྱི་རྩེ་སྦྱུ།

ཇེལ་ཇེལ་སྦྱུ།

ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते स्वाहा ।

जय जय स्वाहा ।

Om sarvatathāgatavyavalokite svāhā. jaya jaya svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་རྣམ་གཟིགས་མ།)

ཨྱོ་ཏུ་རུ་ཏུ་རུ་ཇེལ་ཕྱེའི་སྦྱུ།

ཨྱོ་བརྒྱ་ལྷུ་ཡུའི་སྦྱུ།

ॐ हुरु हुरु जयमुखे स्वाहा ।

ॐ वज्र-आयुषे स्वाहा ।

Om huru huru jayamukhe svāhā.

Om vajra āyuse svāhā.

(རྒྱལ་བའི་ལལ་མ།

རྩྱ་ཕྱེའི་རྩེ་ལ་གཞི་རྒྱགས། ॥)

ཉེ་བའི་སྤྲོད་པོ། ॥ (उपहृदयमन्त्रः = Upahṛdayamantraḥ)

•

1. नास्ति- क.
2. नास्ति- क.
3. प्रस्तुत धारणी 'आर्य-अपरिमितायुर्नाम महायानसूत्रम्' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १३१b-१३७a) में उपलब्ध है। इस का प्रारम्भ 'एवं मया श्रुतम्' से किया है तथा प्रारम्भ से अन्त तक "ॐ नमो भगवते अपरिमितायु-----महानयपरिवारे स्वाहा।" मन्त्र को अनेकशः दुहराते हुए उपर्युक्त सूत्र को पत्रांक १३७b में समाप्त किया है।

(15) ॥ [कं'द'य'ये'मे'स'द'प'य'दु'मे'द'प'रि'] १॥त्रु'द'स'सु'द'के॥

(2अपरिमितायुर्ज्ञानलघुधारणी=

Aparimitāyurjñānalaghudhārāṇī)

ॐ'अम'रानि'जीवन्तीये'स्वाहा॥

ॐ अमराणि जीवन्तीये स्वाहा ।

Oṃ amarāṇi jīvantīye svahā.

(ॠ'व'मे'द'प'रि'सु'म'क'म'॥ ॥)

•

(16) ॥ ॐ'क'स'द'सु'द'प'रि'कु'प'रि'रि'प'सु'म'क'के॥

(4दुर्गतिपरिशोधनमूलविद्यामन्त्रः=

Durgatipariśodhanamūlavidyāmantraḥ)

ॐ'क'मे'सु'म'क'के'स'द'दु'क'रि'प'रि'मे'क'क'सु'द'प'रि'सु'म'क'के'स'द'दु'क'रि'प'रि'मे'क'क'सु'द'प'रि'सु'म'क'के॥

ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

Oṃ namo bhagavate sarvadurgatipariśodhanarājāya tathāgatāya arhate samyak sambuddhāya.

(सु'म'क'के'स'द'दु'क'रि'प'रि'मे'क'क'सु'द'प'रि'सु'म'क'के'स'द'दु'क'रि'प'रि'मे'क'क'सु'द'प'रि'सु'म'क'के॥

ॐ'क'मे'सु'म'क'के'स'द'दु'क'रि'प'रि'मे'क'क'सु'द'प'रि'सु'म'क'के॥

1. नास्ति- क.

2. प्रस्तुत धारणी दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित सिद्धैकवीरमहातन्त्र के प्रथम पटल (पृ० ६) में उपलब्ध है तथा इस मन्त्र के जाप से गतायु से शतायु होने, अनेक शारीरिक रोगों के निदान और गर्भरक्षा का उपाय आदि का सविधान वर्णन किया है ।

3. नास्ति- क.

4. प्रस्तुत धारणी 'आर्यदुर्गतिपरिशोधनी नाम धारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ६०a) में उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में ही 'आर्यदुर्गतिपरिशोधनराजस्य कल्पदेशः' (पत्रांक- २२६b- २३१b) नाम से उपलब्ध धारणी में भी प्रस्तुत धारणी के अतिरिक्त विविध मन्त्र उपलब्ध हैं ।

ॐ षोडशे षोडशे सत्पूय विषोडशे पुद्गे विपुद्गे सत्पूय षोडशे विपुद्गे
सु॥

तद्यथा— ॐ १शोधने शोधने सर्वपापविशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मावरणविशुद्धे स्वाहा ।

Tadyathā- Om śodhane śodhane sarvapāpaviśodhane śuddhe viśuddhe
sarvakarmāvaraṇaviśuddhe svāhā.

(ॐ षोडशे षोडशे सत्पूय विषोडशे पुद्गे विपुद्गे सत्पूय षोडशे विपुद्गे
सु॥ ॥)

•

(17) ॐ २अक्षोभ्यधारणी पतिं पद्मं सत्पूय

(३अक्षोभ्यधारणी = Akṣobhyadhārāṇī)

ॐ सत्पूय

४नमो रत्नत्रयाय । (ॐ नमो भगवते अक्षोभ्याय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय । तद्यथा—)

Namo ratnatrayāya. (Om namo bhagavate akṣobhyāya tathāgatāyārhate
samyak sambuddhāya. Tadyathā-)

(ॐ नमो भगवते अक्षोभ्याय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ।)

ॐ कंकनि कंकनि

रौचनि रौचनि

त्रोटनि त्रोटनि

ॐ कंकनि कंकनि

रोचनि रोचनि

त्रोटनि त्रोटनि

Om kaṁkani kaṁkani

rocani rocani

troṭani troṭani

(ॐ कंकनि कंकनि)

रौचनि रौचनि

त्रोटनि त्रोटनि

1. ॐ शोधनि शोधनि सर्वपापविशोधनि०- आर्यदुर्गतिपरिशोधनी नाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a)

2. नास्ति- क.

3. प्रस्तुत धारणी 'आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी' (पत्रांक- ६०a) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में उपलब्ध है ।

4. 'ॐ नमो भगवते अक्षोभ्याय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय । तद्यथा' — आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a) में अधिक है ।

5. 'वाकनि वाकनि' इत्यधिकम्— तत्रैव

(བདག་དང་སྐུ་མཆོད་མཆོད་ཀྱི་ལས་གཅིག་ནས་གཅིག་དྲ་བརྒྱུད་པ་ཐམས་ཅད། །)

(18) སྐ དེ་བཞིན་གསེགས་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།
(³तथागतशताक्षरम् = Tathāgataśatāksaram)

नमस्तैयध्वकानां तथागतानाम् ।
 नमस्तैयध्वकानां तथागतानाम् ।

**Namastraiyadhvikānaṃ tathāgatānaṃ sarvatrāpratihatāvāpti dharmatā-
balīnām.**

(དུས་གསུམ་གྱི་དེ་བཞིན་གསལ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་པར་བྱལ་པའི་
ཆོས་ཉིད་ཀྱི་རྩྭ་པས་རྒྱམས་ལ།)

1. संत्राशय संत्राशय- आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a)
2. 'सर्वसत्त्वानां च ' नास्ति— आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a)
3. प्रस्तुत धारणी 'शताक्षरनामधारणी' (पत्रांक- ८८b) तथा 'तथागतशताक्षर' (पत्रांक- २९५a) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त पण्डित कुमुदाकरमति विरचित 'त्रिसमयराजस्य साधनम्' शीर्षक से साधनमाला, भाग-१, (पृ० २) में उपलब्ध साधन के अन्तर्गत यह धारणीमन्त्र समाविष्ट है।
4. सर्वत्रप्रतिहताव्याप्ति०- 'तथागतशताक्षर' (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); सर्वत्राप्रतिहताव्याप्ति०- शताक्षर-नामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b)

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥

1 (ॐ) 2 असमसमसमन्ततोऽनन्तावाप्तिशासनि 3 हर हर स्मर स्मरण

Oṃ asamasamasamantato'nantāvāptiśāsani hara hara smara smaraṇa

(ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥)

विगत-रुग्-बुद्ध-धर्मते

सर-सर-सम-बल

हस-हस

त्रय-त्रय

विगतरागबुद्धधर्मते

4 सर सर समबल(ला)

हस हस

5 त्रय त्रय

vigatarāgabuddhadarmate

sara sara samabala(lā) hasa hasa traya traya

(ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥)

भगवन् महावरलक्षणे

ज्वल-ज्वलन-सागरे-स्वाहा

6 भगवन् महावरलक्षणे

7 ज्वल ज्वलनसागरे स्वाहा ।

bhagavan mahāvaralakṣaṇe

jvala jvalanasāgare svāhā

(ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥)

ज्वल-ज्वलन-सागरे-स्वाहा ॥)

•

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- 'तथागतशताक्षर' (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); साधनमाला, (भाग-१) पृ० २.
2. असमसमन्ततोऽनन्तता(वा ?) शिशावामणि(शासनि ?)- शताक्षरनामधारणी (पत्रांक- ८८b)
3. हर हर स्मर स्मर स्मरण- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); हर स्मर स्मरण- तथागत-शताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a)
4. सर सर सर समबला- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); सर सर समबला- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); साधनमाला, (भाग-१) पृ० २.
5. त्रस त्रस- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); त्रस(स) त्रस(स)- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b)
6. गगणमहाबल(र) लक्षण- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); गगणसदालल(वर) लक्षण- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); गगनमहावरलक्षणे- साधनमाला, (भाग-१) पृ० २.
7. 'ज्वल' नास्ति- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); ज्वल २ न(ज्वल ज्वलन) सागरे स्वाहा- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b)

(19) ཨོྃ རྩོམ་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

(1वज्रसत्त्वशताक्षरम्= Vajrasattvaśatākṣaram)

ཨོྃ་བཟླ་སྤྲུལ་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

བཟླ་སྤྲུལ་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

ॐ वज्रसत्त्व समयमनुपालय

वज्रसत्त्वत्वेनोपतिष्ठ ।

Oṃ vajrasattva samayamanupālaya

vajrasattvatvenopatiṣṭha

(ཨོྃ་རྩོམ་སྤྲུལ་པའི་དམ་ཚིག་ཨོྃ་སྤྲུལ་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།)

(རྩོམ་སྤྲུལ་པའི་ཉིང་གྱི་ཉིང་གཞན་པར་མཛོད།)

དྲྀཤོ་མེ་བླ་བ།

སྤྱོད་ཤོ་མེ་བླ་བ།

दृढो मे भव ।

सुतोष्यो मे भव ।

dr̥ḍho me bhava

sutoṣyo me bhava

(བདག་ལ་བདུན་པར་མཛོད་དུ་གསོལ།)

(བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་དབྱེས་པར་མཛོད།)

སྤྱོད་ཤོ་མེ་བླ་བ།

འཕྱོད་ཤོ་མེ་བླ་བ།

सुपोष्यो मे भव ।

अनुरक्तो मे भव ।

supoṣyo me bhava

anurakto me bhava

(བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་ཐུག་པར་མཛོད།)

(བདག་ལ་ཨོྃ་སྤྲུལ་སྤྲུལ་པར་མཛོད།)

སེའ་སྤྱོད་ཤོ་མེ་བླ་བ།

སེའ་ཀུན་སྤྱོད་ཤོ་མེ་ཅེ་རྩོམ་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

सर्वसिद्धि मे प्रयच्छ ।

सर्वकर्मसु च मे चित्तं श्रेयः कुरु हूं ।

sarvasiddhiṃ me prayaccha

sarvakarmasu ca me cittam śreyaḥ

kuru hūṃ.

(བདག་ལ་དངོས་སྤྲུལ་ཐུག་པར་མཛོད།)

(ལས་ཀུན་ལ་ཡང་བདག་སྤྲུལ་སྤྲུལ་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།)

(སྤྱོད་ཤོ་མེ་བླ་བ།)

1. प्रस्तुत 'वज्रसत्त्वशताक्षर' मन्त्रनय में अत्यन्त प्रसिद्ध है। ॐ से लेकर आः तक कुल एक सौ अक्षरों से युक्त मन्त्र होने के कारण इसे शताक्षर मन्त्र कहा जाता है। यह शताक्षरमन्त्र तन्त्र के ग्रन्थों में एवं साधनों में सर्वत्र सुलभ होता है। अतः इसके पाठ भी शुद्ध रूप में प्राप्त होते हैं। विभिन्न तन्त्र ग्रन्थों के अतिरिक्त साधनमाला (भाग १-२) के अनेक साधनों में इसे देखा जा सकता है।

dr̥ḍho me bhava

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

sutoṣyo me bhava

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

अनुरक्तो मे भव ।

anurakto me bhava

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

सुपोष्यो मे भव ।

supoṣyo me bhava

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

सर्वसिद्धि मे प्रयच्छ ।

sarvasiddhiṃ me prayaccha

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

सर्वकर्मसु 1 च मे चित्तं 2 श्रेयः कुरु हूं ।

sarvakarmasu ca me cittam śreyaḥ kuru hūṃ

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

ह ह ह ह होः भगवन् वज्रहेरुक मा मे मुञ्च ।

ha ha ha ha hoḥ bhagavan vajraheruka mā me muñca

(हं हं हं हं होः भगवन् वज्रहेरुक मा मे मुञ्च)

(हं हं हं हं होः भगवन् वज्रहेरुक मा मे मुञ्च)

हेरुको भव ।

heruko bhava

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

महासमयसत्त्व आः हूं फट् ।

mahāsamayasattva āḥ hūṃ phaṭ

(महासमयसत्त्व आः हूं फट्)

(सदृशं सद्गुणं पश्यन् मया दृश्यते)

(महासमयसत्त्व आः हूं फट्)

1. 'च' नास्ति- 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक- २९२b-२९३b).

2. श्रियं- तत्रैव

3. 'हेरुको भव' नास्ति- तत्रैव

4. 'हेरुक' इत्यधिकः- तत्रैव

5. यद्यपि हेरुकशताक्षर यहीं पर समाप्त हो जाना चाहिए; क्योंकि शत अक्षर यहीं पूरे हो जाते हैं ।

6. इसके पश्चात् 'हितसुखश्चाकरबुद्धदेशविस्तार भव से लेकर-----मंगलं भवन्तु' पर्यन्त मन्त्र धारणी संग्रह में उपलब्ध 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' शीर्षक के अन्तर्गत हेरुकशताक्षर (पत्रांक- २९३a-२९३b) में नहीं है ।

བཀྲ་ཤིས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། ॥)

(21) སྐྱེ་མཚོ་དཔ་སྤྱིན་གྱི་གཟུངས།

(1पूजामेघधारणी = Pujāmeghadhārāṇī)

ཨོྃ་ནམ་ལྷ་མགུ་བཟླ་སྤྱི་ཡུལ་དེ། དཔྱུག་དྲུག་ཨུ་རྒྱུ་མཁུ་སྤྱི་ཡུལ་

ॐ नमो भगवते 2वज्रसारप्रमर्दने तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

Oṃ namo bhagavate vajrasārapramardane tathāgatāyārhathe samyak sambuddhāya.

(བཙུམ་ལྷ་མགུ་བཟླ་སྤྱི་ཡུལ་དེ། དཔྱུག་དྲུག་ཨུ་རྒྱུ་མཁུ་སྤྱི་ཡུལ་
ཨོྃ་ནམ་ལྷ་མགུ་བཟླ་སྤྱི་ཡུལ་།)

དཔྱུག་

ཨོྃ་བཟླ་བཟླ་

तद्यथा—

ॐ वज्रे वज्रे

tadyathā-

Oṃ vajre vajre

(འདི་ལྟ་སྟེ།

དྲི་ཨོྃ་དྲི་ཨོྃ་།)

མཁུ་བཟླ་

མཁུ་དྲི་བཟླ་

महावज्रे

3महातेजवज्रे

mahāvajre

mahātejavajre

(དྲི་ཨོྃ་ཆེན་མོ།

གཟི་བུ་དྲི་ཨོྃ་ཆེན་མོ།)

མཁུ་བཟླ་བཟླ་

མཁུ་བཟླ་ཅི་བཟླ་

4महाविद्यावज्रे

5महाबोधिचित्तवज्रे

mahāvidyāvajre

mahābodhicittavajre

(འཇིག་པ་ཆེན་མོ་དྲི་ཨོྃ་མོ།

ཏུང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཆེན་མོ་དྲི་ཨོྃ་མོ།)

1. प्रस्तुत धारणी 'पूजामेघधारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- २९५a) में उपलब्ध है ।

2. वज्रधरसागरप्रमर्दनाय- पूजामेघधारणी (पत्रांक- २९५a).

3. 'महातेजवज्रे' और 'महाविद्यावज्रे' इन दोनों में व्यतिक्रम है । - तत्रैव

4. महाविद्ये वज्रे - तत्रैव

5. 'महाबोधिचित्तवज्रे' नास्ति- तत्रैव

མདྲ་བོཌི་མཚོ་པ་སྒྲུ་མཆ་བཟེ་སཱ་ཀཱ་ཞུལ་རུ་བེཤོན་བཟེ་སྒྲུ༥

महाबोधिमण्डोप¹ संक्रमणवज्रे सर्वकर्मावरणविशोधनवज्रे स्वाहा ।

mahābodhimāṇḍopasaṁkramaṇavajre sarvakarmāvaraṇaviśodhanavajre
svāhā.

(ཏྲ་ཆུབ་ཆེན་པོའི་སྤྲེལ་པོར་ཉེ་བར་བཞུད་པའི་དོ་ཨེ་མ། ལས་དང་སྤྱི་པ་ཐམས་ཅད་ནམ་པར་སྤྲེལ་བའི་དོ་ཨེ་མ།)



(22) རྩ་མཚོ་ད་རྟེན་བསྐྱོར་བའི་གཟུང་ས།

(2चैत्यपरिक्रमाधारणी = Caityaparikramādhārāṇī)

ནམོ་རྣམ་པའི་རྩ་མཚོ་ད་རྟེན་བསྐྱོར་བའི་གཟུང་ས།

(ॐ)³नमो भगवते रत्नकेतुराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

(Om) namo bhagavate ratnaketurājāya tathāgatāyārhathe samyaksaṁbuddhāya.

(བཙུག་ཅེས་པའི་རྩ་མཚོ་ད་རྟེན་བསྐྱོར་བའི་གཟུང་ས། ལས་དང་སྤྱི་པ་ཐམས་ཅད་ནམ་པར་སྤྲེལ་བའི་དོ་ཨེ་མ།)

པོ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།)

དུས། རྩ་མཚོ་ད་རྟེན་བསྐྱོར་བའི་གཟུང་ས།

तद्यथा— ॐ रत्ने रत्ने महारत्ने ⁴रत्नविजये स्वाहा ।

Tadyathā— Om ratne ratne mahāratne ratnavijaye svāhā.

(འདི་ལྟར་ རྩ་མཚོ་ད་རྟེན་བསྐྱོར་བའི་གཟུང་ས།)



1. ०संक्रमणी सर्वकर्मावरणविशोधने स्वाहा- पूजामेघधारणी (पत्रांक- २९५a).

2. प्रस्तुत धारणी 'आर्य-अमिताभनाम धारणी' शीर्षक से धारणीसंग्रह (पत्रांक- ६५a) में तथा अद्वयवज्र विरचित कुट्टुष्टिनिर्घातन (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० 8) में 'मृत्तिकासिकतादिचैत्यकरणविधि' के अन्तर्गत उपलब्ध है ।

3. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्य-अमिताभनामधारणी (पत्रांक- ६५a), अद्वयवज्रसंग्रह(कु० नि०, पृ० 8)

4. रत्नसंभवे- आर्य-अमिताभनामधारणी (पत्रांक- ६५a)

(23) རྩོམ་གྱི་ཐུག་པའི་གཟུངས།

(दक्षिणापरिशोधनीधारणी = Dakṣiṇāpariśodhanīdhārāṇī)

ཀམ་སམ་རྩ་པུ་རྩ་རྩལ་དཔྱག་དཔྱ། ཨ་རྩ་ཏེ་སུ་ལྷོ་པུ་རྩལ།

नमः समन्तप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

Namaḥ samantaprabharājāya tathāgatāya arhate samyaksaṃbuddhāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དག་པོའ་པ་ཡང་དག་པར་ཚོགས་པའི་སངས་རྒྱལ་ཀུན་ནས་འོད་གྱི་རྩལ་པོལ་ཕྱག་

འཆལ་ལོ།)

ཀམ་མཁྱེ་ཤི་ཤེ་ཀུམ་ར་རྩལ་དཔྱ།

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय

Namo mañjuśrīye kumārabhūtāya

runikāya.

(ཏུ་རྩལ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཕྱགས་ཇི་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པ་འཇམ་དཔལ་གཞིན་རྩལ་གྱར་པོལ་ཕྱག་

འཆལ་ལོ།)

བོ་རྩེ་སུ་རྩལ་མདྲ་སུ་རྩལ་མདྲ་ཀུ་རྩེ་ཀུལ།

बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय ।

bodhisattvāya mahāsattvāya mahākā-

དཔྱ།

ཨོ་ནི་རྩལ་ཤེ།

ནི་རྩལ་ཤེ།

ཇེ།

तद्यथा—

ॐ निरालम्बे(म्बे)

निराभासे

जये

Tadyathā-

Om nirālambhe(be)

nirābhāse

jaye

(འདི་ལྟ་ན།

དམིགས་པ་མེད་མ།

རྩེ་བ་མེད་མ།

རྩལ་ཞིང་།)

འཇལ་ལའ་ཤེ།

མདྲ་མདྲེ།

དཔྱ།

དཔྱིའི་མེ་པར་ཤོད་པ་སྤྱ།

जयलब्धे

महामते

दक्षे

दक्षिणं मे परिशोधय स्वाहा ।

jayalabdhe

mahāmate

dakṣe

dakṣiṇaṃ me pariśodhaya svāhā.

(རྩལ་བ་ཤོད་མ།

མྱུ་མྱེས་ཆེན་མོ།

མཁས་མ།

བདག་གི་ཡོན་ཡོངས་སུ་རྩེ་ས་ཤིག་སྤྱ།)



(24) ॥ १मुव०दवद०वि०श्रुद०प०के॥

(२मुनीन्द्रहृदय[मन्त्रः] = Munīndrahṛdaya[mantraḥ])

ॐ सुके सुके मकु सुकये सुकु॥
तद्यथा— ॐ मुने मुने महामुनये स्वाहा ।
Tadyathā— Om mune mune mahāmunaye svāhā.
(२वि०श्रु ॥ मुव०द०मुव०द० मुव०द०के०प०के० ॥)

•

(25) ॥ ३श्रुत०रस०ग०त्रि०ग०श्रु०श्रुद०प०के॥

(४अवलोकितेश्वरहृदय[मन्त्रः] = Avalokiteśvarahṛdaya[mantraḥ])

ॐ मणि०पद्मे०ह्रूं॥
ॐ मणिपद्मे ह्रूं ।
Om maṇi padme hūṃ
(श्रु०र०पु०पद्मे ॥)

•

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी 'शाक्यमुनीनां विशेषधारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १०२b) में उपलब्ध है ।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी 'आर्यावलोकितेश्वरस्य नीलकण्ठनामधारणी' (पत्रांक- ५४a-५४b) तथा 'आर्यषडक्षरी महाविद्यानामधारणी' (पत्रांक- ५५a-५५b) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में उपलब्ध है । आर्य-षडक्षरी महाविद्यानामधारणी का प्रारम्भ "एवं मया श्रुतम्" से किया है तथा बुद्ध के जेतवन में अनाथपिण्डद के आराम में निवास के दौरान षडक्षरी महाविद्या के बारे में विभिन्न देवताओं सहित उपदेश करने के प्रसंग के साथ विस्तार में है, इसी सातत्य में अन्य मन्त्रों के साथ प्रस्तुत षडक्षरी मन्त्र भी है । अन्त में इस षडक्षरी महाविद्या के माहात्म्य एवं फल को भी बताया है । इसके अतिरिक्त साधनमाला (भाग-१) में आर्यषडक्षरीमहाविद्यासाधनम्, कारण्डव्यूहाम्नायेन रचितं साधनम् तथा श्रीमल्लिकनाथसाधनम् आदि अनेक साधनों में यह षडक्षरी मन्त्र उपलब्ध है । विदित है कि यह मन्त्र बौद्ध समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध है । यह अवलोकितेश्वर का हृदयमन्त्र है । इस मन्त्र में छः अक्षर होने से इसे षडक्षरी कहा जाता है । इस मन्त्र के स्वरूप एवं माहात्म्य के बारे में भोट आचार्यों ने अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ भी रचे हैं ।

(26) རྩི་མཁའ་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་ནི།

(2मञ्जुघोषहृदय[मन्त्रः] = Mañjughoṣaḥṛdaya[mantrah])

ཨོྃ་མཁའ་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་ནི།

4ॐ वागीश्वरि मुं ।

Oṃ vāgīśvari muṃ

(གཟུང་གི་དབང་ལུགས། ॥)

•

(27) རྩི་མཁའ་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་ནི།

(वज्रपाणिहृदय[मन्त्रः] = Vajrapāṇihṛdaya[mantrah])

ཨོྃ་བཟླ་པའི་སྒྲིང་པོ་ནི།

ॐ वज्रपाणि हूं ।

Oṃ vajrapāṇi hūṃ.

(ལྷུག་ན་རྩི་མཁའ་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་ནི། ॥)

•

1. नास्ति- क.

2. प्रस्तुत धारणी साधनमाला (भाग-१) में मञ्जुघोषसाधन (पृ० १०५), वादिराट्साधन (पृ० १०९) महाराजलीलमञ्जुश्रीसाधन (पृ० १४१) और मञ्जुश्रीसाधन (पृ० १४२) शीर्षक के अन्तर्गत तथा सिद्धैकवीरमहातन्त्र, पटल-३, (पृ० १९), (दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित) में उपलब्ध है ।

3. རྩི་མཁའ་དབྱངས་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་ནི།- ख

4. ॐ वागीश्वर मुः- साधनमाला में उपलब्ध उपर्युक्त सभी साधनों में तथा सिद्धैकवीरमहातन्त्र, पटल-३, (पृ० १९); लेकिन सिद्धैकवीरमहातन्त्र के भोट पाठ, देगे तथा ल्हासा संस्करण में 'ॐ वागीश्वरि मुं', नरथंग संस्करण में 'ॐ वागीश्वर मुं' तथा पेकिंग संस्करण में 'ॐ वागीश्वरि मुः' पाठ है ।

5. नास्ति- क.

(28) སྐྱེ་ལྷ་མོ་འཕགས་པའི་མཛུགས་ཀྱི་མཛུགས་ཀྱི།

(2मञ्जुश्री-अरपचन [हृदयमन्त्रः] =

Mañjuśrī-arapacana [hṛdayamantraḥ])

ཨོཾ་འཕགས་པའི་མཛུགས་ཀྱི་མཛུགས་ཀྱི།

ॐ अरपचन धीः।

Oṃ arapacana dhīḥ.

(ཨོཾ་འཕགས་པའི་མཛུགས་ཀྱི་མཛུགས་ཀྱི། ॥)

•

(29) སྐྱེ་ལྷ་མོ་འཕགས་པའི་མཛུགས་ཀྱི་མཛུགས་ཀྱི།

(4अचलहृदय [मन्त्रः] = Acalahṛdaya [mantraḥ])

ཨོཾ་འཕགས་པའི་མཛུགས་ཀྱི་མཛུགས་ཀྱི།

ॐ चण्डमहारोषण हूं फट्।

Oṃ caṇḍamahāroṣaṇa hūṃ phaṭ.

(ཨོཾ་འཕགས་པའི་མཛུགས་ཀྱི་མཛུགས་ཀྱི། ॥)

•

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी सद्योऽनुभव-अरपचनसाधन, साधनमाला (भा०-१), पृ० १२१-१२२ में तथा 'मञ्जुश्री-मन्त्रसूत्रम्' (पत्रांक- २९८a) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में मञ्जुघोष के हृदयमन्त्र के रूप में उपलब्ध है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी सिद्धैकवीरमहातन्त्र, प्रथम पटल, (पृ० ७), (दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित) और साधनमाला (भाग-१) में प्रभाकरकीर्ति विरचित चण्डमहारोषणसाधन संकल्प (पृ० १६९-१७१), तथा चण्डमहारोषणसाधन शीर्षक से तीन साधन क्रमशः (पृ० १७२, १७२-१७३, १७३-१७५) उपलब्ध है। सिद्धैकवीरमहातन्त्र तथा प्रभाकरकीर्ति विरचित चण्डमहारोषणसाधन संकल्प (पृ० १६९-१७१), में इस मन्त्र से मिलने वाले फल और विधि का विस्तार से वर्णन है।
5. साधनमाला में उपलब्ध उपर्युक्त सभी साधनों में 'हूं' पाठ ही मिलता है।

(२ताराधारणी = Tārādhārāṇī)

ཨོྭ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཨཱཱ།

ॐ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा ।

Om tāre tuttāre ture svāhā.

(ཡུལ་མ་རྒྱལ་བཟུང་ལས་ཡུལ་མ། ॥)

(31) སྐྱེད་ཅེས་ཅན་མའི་གཟུང་ས་ནི།

(4मारीचीधारणी = Mārīcīdhārānī)

ਭੈਂ ਸੁਨਿਤੈ ਸੁਨਾ

ॐ मारीच्यै स्वाहा ।

ཨོ་པིགཱུའི་པརྟ་བཤམ་སྒྲིལ་དྲུག་མཆོད་ཅིང་།

ॐ पिशाचि पर्णशवरि 5 सर्वज्वरप्रशमनये स्वाहा ।

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यप्रतिज्ञानामधारणी' (पत्रांक- १५a) और 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' शीर्षक के अन्तर्गत (पत्रांक- २१३a) उपलब्ध है। 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' इस शीर्षक के अन्तर्गत आये धारणी मन्त्रों के सम्बन्ध में सूचना 'हेरुकशताक्षर' के पाद-टिप्पणी में दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त साधनमाला, भाग-१ (पृष्ठ संख्या १७६-२४५), साधन संख्या ८९-११६ में आर्यखदिरवर्णीतारा, महत्तरीतारा, वज्रतारा तथा मृत्युवञ्जनतारा आदि तारा के विविध रूपों के कुल २८ साधन उपलब्ध हैं, इनमें से अधिकांश साधनों में उपर्युक्त मन्त्र उपलब्ध है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी किञ्चित् पाठभेद के साथ सिद्धैकवीरमहातन्त्र (पृ० ७) में उपलब्ध है। यहाँ इस मन्त्र को द्विपद और चतुष्पद प्राणियों के सभी उपद्रवों का नाश करने वाली महाविद्या कहा है। इसी के साथ मन्त्र को धारण करने का विधान भी बताया है।
साधनमाला, भाग-१, (पृष्ठ संख्या २७४-३०६), साधन संख्या १३२-१४७ में संक्षिप्त मारीचीसाधनम्, अशोकान्तामारीच्याः साधनम् तथा अष्टभुजपीतमारीचिसाधनम् आदि अनेक मारीचीसाधन उपलब्ध हैं, इनमें से अधिकांश साधनों में उपर्युक्त धारणीमन्त्र "ॐ मारीच्यै स्वाहा" उपलब्ध है। इसी प्रकार साधन संख्या १४८-१५०, पृ० सं० ३०६-३१० में 'पर्णशवरीसाधन' तथा 'आर्यपर्णशवरीताराधारणी' शीर्षक से कुल तीन साधन उपलब्ध हैं, उनमें से पर्णशवरीसाधन में "ॐ पिशाचि पर्णशवरी सर्वमारिप्रशमनि स्वाहा।" यह धारणीमन्त्र मिलता है।
5. ॐ पिशाचि पर्णशवरी सर्वोपद्रवनाशनि स्वाहा- सिद्धैकवीरमहातन्त्र, पृ० ७; ॐ पिशाचि पर्णशवरी सर्वमारिप्रशमनि स्वाहा- पर्णशवरीसाधन, (सा० मा०, पृ० ३०६-३०८)

ॐ धी धरणी स्वाहा ।

धी धारणी स्वाहा ।

Dhī dhāraṇī svāhā.

(ॐ धी धरणी स्वाहा ॥)

ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ।

ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ।

Oṃ prajñāpāramitā bala svāhā.

(ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ॥)

•

(36) ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ॥

(1 पञ्चविंशतिसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्रः -

Pañcaviṃśatisāhasrikāprajñāpāramitāmantraḥ)

ॐ धी धरणी स्वाहा ।	ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ।	ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ।
2 तद्यथा—	ॐ प्रज्ञा प्रज्ञा	प्रज्ञावभासे प्रज्ञावभासे
Tadyathā-	Oṃ prajñā prajñā	prajñāvabhāse prajñāvabhāse
(ॐ धी धरणी स्वाहा ॥)	ॐ प्रज्ञा प्रज्ञा	ॐ प्रज्ञा प्रज्ञा ॥ ॐ प्रज्ञा प्रज्ञा ॥

ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ॥

प्रज्ञाबलगतिसर्वधर्म-अर्धकरभिधमानि (अज्ञानविधमने)

prajñābalagatisarvadharmārdhakarabhidhamāni (ajñānavidhamane)

(ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा ॥)

1. प्रस्तुत धारणी महायानसूत्रसंग्रह (भाग-१), मिथिला संस्करण, पृ० ९६ में 'कौशिकनाम प्रज्ञापारमितासूत्र' में उपलब्ध हैं। पाठभेद की अधिकता को देखते हुए यथावत् पादटिप्पणी में दिया गया है।
2. नमो दशसु दिक्षु सर्वेषामतीतानागतप्रत्युत्पन्नानां त्रयाणां रत्नानाम्। नमो भगवत्यै प्रज्ञापारमितायै सर्वतथागतसुनिभायै सर्वतथागतानुज्ञातविज्ञातायै। (ॐ) प्रज्ञे महाप्रज्ञे प्रज्ञावभासे प्रज्ञालोककारि अज्ञानविधमने सिद्धे सुसिद्धे सिद्धयमने (५) गवते सर्वाङ्गसुन्दरि (५) क्विवत्सले प्रसारहस्ते समाश्वासकरे सिध्य सिध्य बुध्य बुध्य कम्प कम्प चल चल राव राव आगच्छ भगवते मा विलम्ब स्वाहा।- कौशिकप्रज्ञापारमितासूत्र, महायानसूत्रसंग्रह, पृ० ९६.

3. धी- ख.

4. धी- ख.

सिद्धे सुसिद्धे । ¹	सिद्धुं सुं॥	झगवति
सिद्धे सुसिद्धे	सिद्धयन्तु मां	भगवति
siddhe susiddhe	siddhyantu mām	bhagavati
(ददँस'सुस'सिद्ध'दु'ददँस'सुस)	वदग'ल'ददँस'सुस'वदुं॥	वदँस'ल'ददँस'सु)

सर्वज्ञानसंधरि भगवति वच्छेल(वत्सले?) प्रसरदे हस्त मम सुकर सिद्धि सिद्धि
 sarvajñānasamdhari bhagavati vacchela(vatsale?) prasarade hasta mama
 sukara siddhi siddhi

(ये'मेस'समस'उद'हँस'प'र'लदँस'सु) वदँस'ल'ददँस'सु) म'र'र'सु'द'स'सु) वदग'ल'ददँस'सु) प'र'ल'ददँस'सु)

बुद्ध बुद्ध कम्प कम्प पाल पाल धर धर वर वर गज्ज गज्ज

buddha buddha kampa kampa pāla pāla dhara dhara vara vara garjja garjja
 (बुद्ध'बुद्ध'कम्प'कम्प'पाल'पाल'धर'धर'वर'वर'गज्ज'गज्ज)

आगच्छ आगच्छ भगवति मा विलम्ब स्वाहा ।

āgaccha āgaccha bhagavati mā vilamba svāhā.

(अ'ग'छ'अ'ग'छ'भ'ग'व'ति'मा'वि'ल'म्ब'स्वा'हा ॥)

•

-
1. सुसिद्धे - ख.
 2. ल'द'स' - ख.
 3. सु'द'सु'द' - ख.

(37) ॐ ऐं ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

(1अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्रः =

Aṣṭasāhasrikāprajñāpāramitāmantraḥ)

ॐ ह्रीं

ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

तद्यथा—

ॐ ह्रीं श्रुति स्मृति विजये स्वाहा ।

Tadyathā-

Oṃ hrīḥ śruti smṛti vijaye svāhā.

(ॐ ह्रीं

स्वस्त्यै नमः ॥)

ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

4प्रज्ञापारमितायै सर्वदुर्गतिशोधाय राजाय स्वाहा ।

Prajñāpāramitāyai sarvadurgatiśodhāya rājāya svāhā.

(ऐं ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥)

•

(38) ॐ ऐं ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

(5प्रज्ञापारमिताहृदयमन्त्रः = Prajñāpāramitāhṛdayamantraḥ)

ॐ ह्रीं

ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

ॐ ह्रीं स्वस्त्यै नमः ॥

1. 'अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्र' नामक प्रस्तुत धारणी का आंशिक मन्त्र ही साधनमाला (भाग-१) पृ० ३१३ में पीतवर्णसंक्षिप्तप्रज्ञापारमितासाधनं तथा धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ३०a) में आर्यश्रीपीतवर्ण-प्रज्ञापारमिताधारणी शीर्षक से उपलब्ध है ।
2. धीः- साधनमाला (भाग-१) पृ० ३१३, धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ३०a)
3. ॐ ह्रीं स्वस्त्यै- ख.
4. 'प्रज्ञापारमितायै सर्वदुर्गतिशोधाय राजाय स्वाहा ।' नास्ति- साधनमाला (भाग-१) पृ० ३१३; धारण्यादि-संग्रह (पत्रांक- ३०a)
5. प्रस्तुत धारणी 'कौशिकनाम प्रज्ञापारमितासूत्र' (पृ० ९६) और प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र (पृ० ९८-९९) महायानसूत्रसंग्रह (भाग-१), मिथिला संस्करण में उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक- २९२b-२९३b) शीर्षक से उपलब्ध धारणी में अनेक मन्त्रों के साथ उपर्युक्त मन्त्र भी समाविष्ट है ।

པར་ལྷ་ཡི་མཆོད་པ།	སེམས་ཀྱི་ཡུལ་སྤྱོད་པ།
प्रज्ञापारमिता	सर्वधर्मशून्यता स्वाहा ।
prajñāpāramitā	sarvadharmasūnyatā svāhā
(ཤེས་རབ་ཀྱི་ལ་ཡི་མཆོད་པ།	ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤོང་པ་ཉིད། ॥)

•

(40) རྩམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས།
(1मैत्रेयप्रतिज्ञाधारणी = Maitreyapratijñādhārāṇī)

ནམ་རྩ་ཏུ་ཡུལ། ནམ་རྩ་ཏུ་ཡུལ། ནམ་རྩ་ཏུ་ཡུལ། ནམ་རྩ་ཏུ་ཡུལ། ནམ་རྩ་ཏུ་ཡུལ།

2नमो रत्नत्रयाय । नमो भगवते शाक्यमुनये तथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।

Namo ratnatrayāya. Namo bhagavate śākyamunaye tathāgatāyārhate sam-
yaksambuddhāya.

(དཀོན་ཅོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །བཙུག་པོ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །བཙུག་པོ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །བཙུག་པོ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །)

དུས་ལྷ་ རྩམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས། རྩམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས།
གསུམ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། རྩམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས། རྩམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས།
མཆོད་པའི་གཟུངས།

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ३०a) में 'आर्यमैत्रीयप्रतिज्ञानाम धारणी' शीर्षक के अन्तर्गत उपलब्ध है ।
2. ॐ नमः श्रीभगवते आर्यमैत्रेय बोधिसत्त्वाय । नमो भगवते शाक्यमुनये तथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय । नमो मैत्रीयाय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय । - आर्यमैत्रीयप्रतिज्ञानामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- ३०a)

(43) ॐ व॒ते॒द॒व॒ल॒स॒स्रो॒ल॒व॒रि॒श्र॒म॒स॒

(बन्धमोचनीमन्त्रः = Bandhamocanī-mantraḥ)

द॒रे॒द॒रे॒द॒र॒य॒श्र॒म॒स॒स्रो॒ल॒व॒रि॒श्र॒म॒स॒

1 तारे तारे तारय भगवते बन्धमोचनि स्वाहा ।

Tāre tāre tāraya bhagavate bandhamocani svāhā.

(ॐ॒व॒त॒े॒द॒व॒ल॒स॒स्रो॒ल॒व॒रि॒श्र॒म॒स॒स्रो॒ल॒व॒रि॒श्र॒म॒स॒ ॥)

*

(44) ॐ अ॒व॒त॒ंस॒क॒धा॒रि॒का॒म॒न्त्रः॑

(2अवतंसकधारिकामन्त्रः = Avataṃsakadhārikā-mantraḥ)

ॐ॒ न्थी॑

3 ॐ न्थी ।

Oṃ nthī

न॒मः॑ स॒र्व॒बु॒द्धा॒ना॒म् ।

नमः सर्वबुद्धानाम् ।

Namaḥ sarvabuddhānām

(स॒द॒स॒स्रु॒ष॒स्र॒म॒स॒उ॒द॒व॒पु॒ष॒अ॒क॒ल॒य॒त् ॥)

ॐ॒ म॒म॒भ्रु॒म॒मु॒म॒

ॐ मां भ्रूं मुं

Oṃ mām bhrūṃ mūṃ

तद्यथा—

tadyathā—

(ॐ॒ न्थी॑)

ॐ॒ न्थी॑

ॐ भ्रूं ।

Oṃ bhrūṃ.

1. ॐ तारे तुतारे तुरे अमुकस्य बन्धनमुक्तिं कुरु स्वाहा ।- वज्रतारासाधनम्, साधनमाला, पृ० १८८.
2. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १३b) में 'गंधव्यूहो(गण्डव्यूहो)नाम धारणी' शीर्षक से उपलब्ध है । लेकिन इसमें प्रारम्भ के कई मन्त्र उपलब्ध नहीं हैं ।
3. गण्डव्यूहनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १३b) में 'ॐ न्थी' से लेकर 'अप्रतिहतशासनानाम्' तक का मन्त्र उपलब्ध नहीं है ।

1. इसके पूर्व "ॐ नमो रत्नत्रयाय । ॐ नमः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः । तद्यथा-" से प्रस्तुत धारणी प्रारम्भ है-
गण्डव्यूहनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १३b)
2. वरदे- तत्रैव
3. ०द्भवे- तत्रैव
4. स्वाहा- इत्यधिकम्, तत्रैव
5. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १३b) में 'समाधिराजनाम धारणी' शीर्षक से उपलब्ध है ।
6. ॐ नमो बुद्धाय । नमो धर्माय । नमः संघाय । ॐ नमो रत्नत्रयाय ।- समाधिराजनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- १३b)

ॐ हुं हुं हुं हुं हुं धत् धत् धत् ॥

(तद्यथा) 1— ॐ धुन धुन हूं हूं फट् फट् स्वाहा 2

(Tadyathā)- Om dhuna dhuna hūṃ hūṃ phaṭ phaṭ svāhā.

•

(46) ॐ ह्रीं स्वस्ति ॥ धत् धत् धत् ॥

(ॐ प्रज्ञोत्पन्नामन्त्रः = Prajñotpannā-mantraḥ)

ॐ धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् ॥

4हूं (ॐ) पिचु पिचु प्रज्ञावर्धनि ज्वल ज्वल 6मेध(धा)वर्धनि धिरि धिरि बुद्धि⁷वर्धनि स्वाहा ।

Hūṃ (Om) picu picu prajāvārdhani jvala jvala medha(ā)vardhani dhiri dhiri buddhivardhani svāhā.

(ॐ ह्रीं स्वस्ति ॥ धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् धत् ॥)

•

1. 'तद्यथा'- इत्यधिकः, समाधिराजनाम धारणी(धा० सं०, पत्रांक- ९३b)
2. य इमां कश्चिद् धारयेत् संजयो भवति । इति समाधिराजनाम धारणी समाप्ता ।- इत्यधिकम्, समाधि-राजनाम धारणी(धा० सं०, पत्रांक- ९३b)
3. प्रस्तुत धारणी 'आर्यवज्रसरस्वतीसाधन' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १०२a), कृष्णयमारितन्त्र के सातवें पटल, पृ० ५३ में, तथा पण्डितश्रीपद्मवर्द्धनपाद विरचित 'शुक्लप्रज्ञापारमितासाधन' साधन-माला (भाग-१), साधन संख्या-१५५, पृ० ३१५-३१७ में उपलब्ध है ।
4. ॐ- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a), कृष्णयामारितन्त्र (सप्तम पटल, पृ० ५३), साधनमाला (भाग-१), पृ० ३१६
5. ०वर्धनी- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a)
6. मेधावर्धनी- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a), मेधा०- कृष्णयामारितन्त्र (सप्तम पटल, पृ० ५३), साधन-माला (भाग-१), पृ० ३१६
7. ०वर्धनी- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a)

(१सहस्रावर्तिमन्त्रः = Sahasrāvartī-mantrah)

[illegible]

२तद्यथा— ॐ जये जये महाजये जयावहिनि जयोत्तरि कल कल मल मल चल चल
क्षणि क्षणि सर्वकर्मवरणानि मे सर्वज्ञानाधिष्ठिते स्वाहा ।

**Tadyathā- Om jaye jaye mahājaye jayāvahini jayottari kala kala mala mala
cala cala ksani ksani sarvakarmāvaranāni me sarvajñānādhiṣṭhite svāhā.**

(འདི་ལྟར། རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་རྒྱལ་བ། རྒྱལ་བའི་སྐུ་མ། ཅོང་པ་ཅོང་པ། དྲི་མ་དྲི་མ། གཡོ་བ་གཡོ་བ།
བདག་གི་ལས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཐམས་ཅད་ཟད་ཅིང་ཟད་པ་ལ། ཡེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཕྱིན་ཀྱིས་བསྐྱབས་པ་གནི་ཚུགས།)

ནམ་གྲུབ་པའི་སངས་པུན་པལ་གྱི་དེ།

नमो भगवते सहस्रवर्ते सर्वबुद्धावलोकिते ।

Namo bhagavate sahasravarte sarvabuddhāvalokite

(བཙམ་ལྷན་འདས་ལ་ལྷག་འཆལ་ལོ། རྟོང་བསྐྱར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱན་རས་གཟིགས།)

1. प्रस्तुत धारणी 'आर्यसहस्रावर्तानाम धारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ५४b-५५a) में उपलब्ध है। इसमें पाठान्तर अधिक है, इसलिए पूरी धारणी को पादटिप्पणी में दिया जा रहा है।
2. ॐ नमो आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय। तद्यथा- ॐ जय जय महाजयवाहिन जयोत्तरी कल कल मल मल चल चल हुलु हुलु छिणि छिणि सर्वकर्मावरणानि मम भगवति सहस्रावर्ति सर्वबुद्धावलोकित-चक्षुः-श्रोत्र-घ्राण-जिह्वा-(काय)मनोविज्ञानविशोधनि, तद्यथा- ॐ सुरु सुरु प्रसुरु प्रसुरु भर भर संभर संभर स्मर स्मर ॐ सर्वबुद्धाधिष्ठिते स्वाहा। ॐ सर्वबुद्धावलोकिते स्वाहा। ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा। ॐ अभावस्वभावधर्मावबोधनि स्वाहा।
अस्या धारण्या अयमुपचारः कल्पसहस्रं चित्तं कर्मावरणं एकवारोच्चारितेन परिक्षयं गच्छति। बुद्धसहस्रावलोकितं(रो)पितं कुशलमूलं भवति जातिपरिवर्तेन चक्रवर्तिराज्येध्वयं शतसहस्रं प्रतिभभते। मरणकाले च बुद्धसहस्रं पश्यति। प्रतिदिनं सहस्रावर्तं कुर्वन् एकविंशतिदिवसेन बोधिसत्त्वसंख्या-ङ्गच्छति। परिशुद्धेषु बुद्धक्षेत्रेषूपपद्यते। त्रिकृत्वा रात्रौ त्रिकृत्वो दिवसस्य जपेत्। यथेप्सितानि स्वप्नानि पश्यति। सुवर्णवर्णं तथागतं पश्यति। अपरिमितानुसंसारबोधिसत्त्वसंगातिश्रुते पश्यते। सततसमीपं मनसि कर्तव्या। आर्यासहस्रावर्ता नाम धारणी समाप्ता।- धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ५४b-५५a).

(ཕྱགས་བརྩུ་དུས་གསུམ་གྱི་དཀོན་ཅིག་གསུམ་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །)

ནམ་པད་སྤྲུལ་སྤྲུལ་སྤྲུལ་སྤྲུལ་བོ་འཛིན་སྟེ།

नमः प्रदक्ष सुप्रदक्ष सर्वपापविशोधनि स्वाहा ।

Namah pradakṣa supradakṣa sarva pāpaviśodhani svāhā.

(ཕུག་འཆལ་བསྐྱར་བ་ལེགས་པར་བསྐྱར་བ་རྒྱུག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ། ॥)

(51) རྩེ་བཙན་པའི་སྒྲུགས།

(वचनप्रभावकरीमन्त्रः = Vacanaprabhāvakarī-mantrah)

ནམ་གྲགས་དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ལྟོས་ཏེ་བཤད།

नमो भगवते उष्णीषाय धरे रं ते स्वाहा ।

Namo bhagavate usnīsāya dhare ram te svāhā.

(བཅོམ་ལྷན་འདས་གཙུག་རྟེན་ཅན་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ། །)

(52) ཁྱེད་ཀྱི་སྐབས་ནས་ཕྱི་རྒྱལ་གྱི་མཉམ་སྲུང་གི་འོག་ནས།

(१सर्वदुर्गतिपरिशोधनमन्त्रः = Sarvadurgatipriśodhana-mantrah)

८८३॥ ॐ॒ षोडशै॑ वि॒षोडशै॑ ऋ॒षः॑ स॒वः॑ पू॒षः॑ वि॒षोडशै॑। सु॒त्रे॑ वि॒सुत्रे॑ स॒वः॑ ग॒मः॑ ॥ ॐ॒ नमः॑
वि॒सुत्रे॑ ॥

(ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ।) २तद्यथा— ॐ
शोधनि विशोधने मम सर्वपापविशोधने शूद्धे विशूद्धे सर्वकर्मावरणविशूद्धे स्वाहा ।

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यदुर्गतिपरिशोधनीनाम धारणी' (पत्रांक- ६०b) शीर्षक से उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में ही 'आर्यसर्वदुर्गतिपरिशोधनराजस्य तथागतायार्हन्ते-सम्यक्संबुद्धस्य कल्पदेशः' (पत्रांक- २२६b-२३१b) शीर्षक के अन्तर्गत विविध मन्त्रों का संग्रह है, जिसमें प्रस्तुत धारणीमन्त्र भी अनेकशः उपलब्ध है।
2. ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागतायार्हन्ते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा- ॐ शोधनि शोधनि सर्वपापविशोधनि शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मवरणविशुद्धे स्वाहा ॥- धारण्यादिसंग्रह, (पत्रांक- ६०a, २२६b-२३१b)

(འདྲིལ་མེ རྩོད་ཁིང་རྣམ་པར་རྩོད་མ། དངག་གི་རྩིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་རྩོད་མ། དག་ཅིང་རྣམ་དག་མཁའ་ས་
ཀྱིས་རྩིག་པ་རྣམ་པར་དག་མ། ॥)

(1 भैषज्यदाने भैषज्याभिमन्त्रणमन्त्रः=

Vaiṣajyadāne bhaisajyābhimantraṇa-mantrah)

[illegible]

(ॐ नमो भगवते भैषज्यवैडूर्यप्रभराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।) ३तद्यथा— ॐ
भैषज्ये भैषज्ये महाभैषज्ये ४भैषज्यराजसमुदगते स्वाहा।

(Om namo bhagavate bhaiṣajyavaiḍūryaprabharājāya tathāgatāyārhate sam-
yaksambuddhāya) Tadyathā- Om bhaiṣajye bhaiṣajye mahābhaiṣajye bhai-
sajyarājasamudgate svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། ལྷན་ལྷན། ལྷན་ཆེན་པོ། ལྷན་གྱི་ལྷན་པོ་ཡང་དག་པར་འཕགས་དེ་འཁྲུ་ལ། ॥)

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'भैषज्यनाम धारणी' (पत्रांक- ६०b) शीर्षक से उपलब्ध है।
2. २६- क.
3. ॐ नमो भगवते भैषज्यवैद्यप्रभराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।- इत्यधिकम्, भैषज्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०b)
4. सुभैषज्ये स्वाहा।- तत्रैव

(54) རྩ་མཐུན་ཅད་རབ་དྲུ་ཞི་བར་བྱེད་པའི་ལྷན་པ།

(सर्वव्याधिप्रशमनीमन्त्रः = Sarvavyādhipraśamanī-mantrah)

དུས། བཟླ་བཟླ་མཉམ་པའི་ཕྱི་ཉམ་ཉམ་བཟླ་མཉམ་པའི་

तद्यथा— वज्र वज्र महावज्र सर्वव्याधि हन हन वज्रण स्वाहा ।

Tadyathā- vajra vajra mahāvajra sarvavyādhi hana hana vajraṇa svāhā.

(འདི་ལྟ་ནི། རྩེ་རྩེ་རྩེ་རྩེ་ཆེན་པོ་ནང་ཐམས་ཅད་ལ་རྩལ་རྩལ་རྩེ་ལོ་གཞི་ཆུགས།)

སྐྱུང་སཔ་འཕྲུལ་དྲན་པ་ཉི་སཔ་འཕྲུལ་ཐུ་ཙ་སཔ་བྱུང་བྱུང་ཀླུ་ཀླུ་སྐྱུང་།

संघसपरिवार दानपतिसपरिवारस्य च सर्वव्याधि शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

saṃghasaparivāra dānapatisaparivārasya ca sarvavyādhi śāntim kuru kuru
svāhā.

(དགེ་འདུན་ལམ་པ་ཅས་དང་སྒྲིག་པ་དག་ལམ་པ་ཅས་ཀྱི་ཉན་སྐུལ་ཅད་ཞི་བར་མཛོད་མཛོད་ལེགས་པ་སྒྲིག། །)

(55) སྐ ཡོན་ཏན་བཟླགས་པ་དཔག་དྲུ་མེད་པའི་ཟླགས།

(1अपरिमितगुणानुशंसामन्त्रः = Aparimitaguṇānuśamsā-mantraḥ)

ནམ་རྒྱ་དྲུག་། ནམ་ལྷག་བཏེ་ཨམི་དྲུག་། དུས་དྲུག་ཆེ་མཉམ་ལྷན་དྲུག་།

२नमो रत्नत्रयाय । नमो भगवते अमिताभाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्य-अमिताभनाम धारणी' (पत्रांक- ६०a) शीर्षक से उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में 'आर्योष्णीषविजयासाधनधारणी' (पत्रांक- १२५b-१२६b) तथा साधनमाला (भाग-२), पृ० ४१७-४१८ में 'आर्योष्णीषविजयासाधन' नाम से उपलब्ध दोनों साधनों में भी यह मन्त्र मिलता है। यह मन्त्र उपर्युक्त सभी धारणी एवं साधनों में मालामन्त्र के रूप में वर्णित है।
2. "नमो-----संबुद्धाय" नास्ति- 'आर्योष्णीषविजयासाधनधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- १२५b-१२६b); आर्योष्णीषविजयासाधन (साधनमाला, भाग-२), पृ० ४१८.

(དགོན་ཅིག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ། །བཙུ་ལྷན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཙུ་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱུགས་པའི་སངས་ཕྱི་ལོ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ། །)

དུས། རྩེ་ཡམི་དྲུག་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་
 ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་ ཡམི་དྲུག་ལྷན་

**Tadyathā- Om amite amitodbhave amitasambhave amitavikrānte amita-
gāmini gaganakīrtikare sarvakleśaksayamkari svāhā.**

(འདི་ལྟ་སྟེ དཔག་རྒྱ་མེད་ལ། དཔག་རྒྱ་མེད་པ་འཕྱུང་ལ། དཔག་རྒྱ་མེད་པ་འཕྱུང་བ། དཔག་རྒྱ་མེད་པ་ནམ་པར་
གནོན་ལ། དཔག་རྒྱ་མེད་པར་འགྲོ་བ། ནམ་ལཁར་རྒྱུག་པར་བྱེད་ལ། ཉམ་མོངས་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་བྱེད་གཞི་
རྒྱལ་ས། །)

(मालामन्त्रः = Mālā-mantrah)

1. तद्यथा- अमिते-२ अमितोद्भवे अमितसंभवे अमितसिद्धे अमिततेजे-२ अमितविक्रान्ते अमितगामिने अमितगणनकीर्त्तकरे अमितदुर्गभिवरे सवार्थसाधने सर्वकर्मक्लेशक्षयकरि स्वाहा। आर्य-अमिताभ-धारणी समाप्ता- धारण्यादिसंग्रह, (पत्रांक- ६०a)
ॐ अमिते अमितोद्भवे अमितच(वि)क्रान्ते अमितगात्रे अमितगामिनि अमितायुर्ददे गगनकीर्त्तिकरि सर्वक्लेशक्षयकरीये स्वाहा— इति मालामन्त्रः।- आर्योष्णीषविजयासाधनधारणी (पत्रांक- १२५b-१२६b), आर्योष्णीषविजयासाधन (साधनमाला, भाग-२), पृ० ४१७-४१८.

(56) རྩོམ་སྤྱོད་རབ་གསལ་གྱི་སྤྲེལ་གོང་དུ་མ་འབྲུག་པ་རྣམས་ནི།

(पूर्व-असंगृहीत-धर्मचर्याप्रकाशकमन्त्रः =

Purva-asamgrhīta-dharmacaryāprakāśaka-mantraḥ)

བཤྲ་སམྐུང་།	ཨྱ་སའ་དབྲུག་།	ཨ་རྩྭ།
वज्रसमाजः ।	ॐ सर्वतथागत	अर्घ
Vajrasamājah	Oṃ sarvatathāgata	argham
(དེ་ནི་བཟུ་ག	དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ།	མཆོད་ཡོན།)
པུྤ།	པུཐི།	རྩུ་པ།
पाद्यं	पुष्पे	धूपे
pādyam	puśpe	dhūpe
(ཞབས་བསྐྱེལ།	མེ་དྲོག་མ།	བདུག་སྤྲོས་མ།)
ཞུལྱེག།	གནྱ།	ནེམྱི་[མེ]ཏི།
आलोके	गन्धे	नैवेद्ये
āloke	gandhe	naivedye
(རྒྱང་གསལ་མ།	དྲི་ཆ་བ་མ།	ཞལ་ཟས་མ།)

ཤམ་ཞུང་རྩྭ།
 शब्द आः हूँ ।
 śabda āḥ hūṃ
 (མྱེལ་རྩྭ་མ། ॥)

ॐ सर्वतथागतभिषेकतः समयश्रिये हूँ- अभिसमयमञ्जरी, (भोटपाठ) पृ० ११ (अभिसमयमञ्जरी की सभी संस्कृतमातृकाओं में “ॐ सर्वतथागत-अभिषेकसमयश्रिये हूँ” पाठ है।

(१पीतजम्भलमन्त्रः = Pītajambhala-mantraḥ)

པི[ཐི]ཏ་པུར་ཀ

बीजपूरक(कं) ।

Bījapūraka(kam)

(ས་པོན་གྱིས་གང་ག)

ཇེ་ལྷོ་པོ་ལྷོ་ ཇེ་ལྷོ་པོ་ལྷོ་

जः हूँ वं होः जम्भल सपरिवार ।

jaḥ hūṃ vaṃ hoḥ jambhala saparivāra

ཕྱགས་འཛིན་འཁོར་དང་བཅས་པ།)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

२ॐ जम्भलजलेन्द्राय स्वाहा ।

Om jambhalajalendrāya svāhā.

(ཕྱགས་འཛིན་ཆུང་དབང་པོལ་གཞི་ཚུགས།)

ॐ नमः शिवाय ॥

3 व्रूँ ज्रीं आँ खाँ हूँ।

Vrūṃ jrīṃ āṃ khāṃ hūṃ.

ཨོྭ་ཨཱཱཱྀ་[ཨཱཱཱྀ་] ལྷ་མ་མཱཱཱཱྀ་སྤྱད། ཨོྭ་ཨྱྱྀ་སྤྱད།

5ॐ इन्द्रनि (इन्द्राणि) मुखभ्रमरि स्वाहा । 6ॐ जलुं स्वाहा ।

Om indrani (indrāni) mukhabhramari svāhā. Om jlum svāhā.

(དབང་པོ་(མོ་)ཁ་གཡོ་བལ་ལེགས་པ་རྒྱུ༥ ॥)

•

1. प्रस्तुत पीतजम्भल से सम्बद्ध मन्त्र साधनमाला (साधन संख्या २८४-२९९, पृ० ५६०-५८२) में विविध जम्भल साधन के अन्तर्गत उपलब्ध है।
2. यह यक्ष (जम्भल) मन्त्र है। द्र०- सा० मा०, पृ० ५६१; सिद्धैकवीरमहातन्त्र (द्वितीय पटल), पृ० १४. कुट्टिनिर्घातनम्, अष्टवज्रसंग्रह, पृ० ४.
3. वुँ औं जिं खँ हूँ- द्र०- सा० मा० (भा० २), पृ० ५६९, ५८१; साधनमाला के पृ० ५२९, ५३२ और ५३७ में रक्तयमारी के विभिन्न साधनों के अन्तर्गत उपलब्ध इन वुँ औं जिं खँ हूँ आदि बीजाक्षरों को 'समयाधिष्ठानमन्त्रः' कहा है। ये बीजाक्षर वैरोचन आदि पञ्च ध्यानी बुद्धों से सम्बद्ध हैं।
4. शुष्म- ख.
5. यह चुलुक मन्त्र है। द्र०- सा० मा० (भा० २), पृ० ५७४
6. यह उदक (जल) मन्त्र है। द्र०- सा० मा० (भा० २); पृ० ५७४

(१कृष्णजम्भलजलदानमन्त्रः = Kṛṣṇajambhalajaladāna-mantraḥ)

(ཁོད་སྤྱི་བྱ་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ།)

(འདི་ལྟ་སྟེ ལྷགས་འཛིན་རྒྱུ་འདེད་བའ་པོ་ལ་གཞི་རྒྱུགས། བཏོར་མ་འདི་ཕྱོགས་ཕྱོགས་ཞིག་ཕྱོགས། ॥)

(अमृतकुण्डलीमन्त्रः = Amṛtakundalī-mantraḥ)

(རི་ཇི་བདུད་ཅི་འབྱེལ་བ་ལྷན་ལྷན། །)

1. प्रस्तुत कृष्णजम्भलमन्त्र साधनमाला में पण्डित-अभयाकरगुप्तविरचितं उच्छुष्पजम्भलसाधनम् (संख्या २९५, पृ० ५७६-५७९) में कुछ भिन्ना के साथ उपलब्ध है, जिसे पादटिप्पणी में दिया गया है।
2. नमो रत्नत्रयाय। नमो माणिभद्राय महायक्षसेनापतये। ॐ जम्भलजलेन्द्राय स्वाहा।- सा० मा०, पृ० ५७८
3. यह यक्ष (जम्भल) मन्त्र है। द्र०- सा० मा०, पृ० ५६१; सिद्धैकवीरमहातन्त्र (द्वितीय पटल), पृ० १४.

(62) སྐྱེ་མ་དག་པ་སྤྱིང་བའི་སྒྲགས།

(अशुद्धशोधनमन्त्रः = Asuddhaśodhana-mantraḥ)

ཨྲྀ་སྤྱུལ་བྱུང་མཁའ་མཁའ་སྤྱུལ་བྱུང་ཉེ།

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् ।

Oṃ svabhāvaśuddhāḥ sarvadharmāḥ svabhāvaśuddho'ham.

(ཨང་བཞིན་དག་པའི་ཚེས་ཐམས་ཅད་ཨང་བཞིན་དག་པའོ། ॥)

•

(63) སྐྱེ་གཡོ་བའི་གཏོར་སྒྲགས།

(अचलबलिमन्त्रः = Acalabali-mantraḥ)

ཨྲྀ་ཅུ་ཨའལ་སཔ་རིལ་ར་ཨིདྱི་བའི་ཁ་ཁ་ཁུ་ཁུ།

आर्य अचल सपरिवार इदं बलिं ख ख खाहि खाहि ।

Ārya acala saporivāra idam baliṃ kha kha khāhi khāhi.

འཕགས་པ་ཨི་གཡོ་བ་འཁོར་དང་བཅས་པ་གཏོར་མ་འདི་ཟླ་ཟླ་ཞིག་ཟླ་ཞིག། ॥

•

(64) སྐྱེ་མའི་གཏོར་མ་འབུལ་བའི་སྒྲགས།

(ताराबल्यर्पणमन्त्रः = Tārābalyarpaṇa-mantraḥ)

སཔ་བྱུང་བོནྱི་སྤྱུལ་ཞྱོ།

ཨྲྀ་ཕྱི་ཉེ་ཉེ་ལྷ་སྤྱུལ་ཞྱོ།

सर्वबुद्धबोधिसत्त्वानां

अप्रतिहतशासनानां

Sarvabuddhabodhisattvānām

apratihataśāsanānām

(ཨང་ས་ཁྱེས་དང་ཏུང་རྩལ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ། ཐོགས་པ་མེད་པའི་བསྐྱེད་པ་རྣམས་ལ།)

हे हे भगवते

हे हे भगवते

he he bhagavate

(ग्रेग्रेवत्तमसर्वबुद्धावलोकिते)

महोत्सवसर्वबुद्धावलोकिते

महासत्त्वसर्वबुद्ध-अवलोकिते

mahāsattvasarvabuddha-avalokite

(महोत्सवसर्वबुद्धावलोकिते)

मा विलम्ब

मा विलम्ब

mā vilamba

(दक्षिणपक्षे)

मा विलम्ब

मा विलम्ब

mā vilamba

(दक्षिणपक्षे)

इदं बलिं गृह्णापय गृह्णापय हूं हूं सर्वविसञ्जर स्वाहा।

इदं बलिं गृह्णापय गृह्णापय हूं हूं सर्वविसञ्जर स्वाहा।

idaṃ balim grhṇāpaya grhṇāpaya hūṃ hūṃ sarvaviśaṅkara svāhā.

(गर्भेऽर्चयेत्तद्विष्णुं पञ्चविंशत्युक्तं पञ्चविंशत्युक्तं पञ्चविंशत्युक्तं पञ्चविंशत्युक्तं ॥)

•

(65) ॐ नृगर्भेऽर्चयेत्तद्विष्णुं पञ्चविंशत्युक्तं पञ्चविंशत्युक्तं पञ्चविंशत्युक्तं पञ्चविंशत्युक्तं ॥

(नागबलिमन्त्रः - Nāgabalimantraḥ)

ॐ वज्रयक्ष हूं।

ॐ वज्रयक्ष हूं।

Oṃ vajrayakṣa hūṃ.

(दक्षिणपक्षे)

ॐ वज्रज्वालानल हन दह पच मथ भञ्जरण हूं फट्।

ॐ वज्रज्वालानल हन दह पच मथ भञ्जरण हूं फट्।

Oṃ vajra jvālānala hana daha paca matha bhañcarāṇa hūṃ phaṭ.

(दक्षिणपक्षे)

1. यह मन्त्र 'सार्वभौतिकबलिमन्त्र' नाम से साधनमाला (भाग-१), पृ० १०३ में उपलब्ध है; इसके अतिरिक्त यह बलिमन्त्र के रूप में कुदृष्टिनिर्घातनम्, (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ९) में भी उपलब्ध है।
2. ॐ भक्ष भक्ष आगच्छ आगच्छ महानागाधिपति सर्व भुर्भुवः हूँ हूँ फट् स्वाहा।- महामेघसमाधि-वर्षापणम्। (धा० सं०, पत्रांक- १७२a-१७६b)
 ॐ भक्ष भक्ष आगच्छ आगच्छ महानागाधिपति सर्व भुर्भुवः हु हु स्वाहा।- वर्षापणविधिः, कृतिरियं महापण्डिताभयाकरगप्त (धा० सं०, पत्रांक- १७६b-१७७a)

(ཟླ་བེད་ཟླ་བེད་ དམ་ཆེན་ལ་གནས་པར་གྱིས།)

ནམ་མཁའ་ཤིང་གི་རྩལ་པོ་གཡོ་བ་གཡོ་བ། ॥)

(सुरुपमन्त्रः = Surūpamantraḥ)

དེ་མཆིན་གཤམས་པ་དམུ་བཙོམ་པ་ཡང་དག་པར་ཁྱོགས་པའི་སངས་རྒྱུས་གཞུགས་མཛེས་ལ་ཕྱག་འཚུལ་ལོ། །)

ଦତ୍ତସ୍ଥା	ଐଁ ସୁରୁ ସୁରୁ	ପ୍ରସୁରୁ ପ୍ରସୁରୁ
तद्यथा—	ॐ सुरु सुरु	प्रसुरु प्रसुरु
Tadyathā-	Oṃ suru suru	prasuru prasuru
(ନବିଂଶ ଶ୍ଳୋ)	ସକ୍ରମଣ୍ୟାନ୍ଧେଷ୍ୟସକ୍ରମଣ୍ୟାନ୍ଧେଷ୍ୟା	ଅପାନୁସକ୍ରମଣ୍ୟାନ୍ଧେଷ୍ୟ ଅପାନୁସକ୍ରମଣ୍ୟାନ୍ଧେଷ୍ୟ)

तरं तरं	भरं भरं	सम्भरं सम्भरं
tara tara	bhara bhara	sambhara sambhara
(त्रयं त्रयं)	भुषं पं भुषं पं	यत्तं दणं पत्तं भुषं पं यत्तं दणं पत्तं भुषं पं

स्मरं स्मरं	सन्तर्पयं सन्तर्पयं	सर्वप्रेतानां स्वाहा
smara smara	santarpaya santarpaya	sarvapretānām svāhā.
(स्मरं पं स्मरं पं)	गुरुं तु कर्म पत्तं भुषं गुरुं तु कर्म पत्तं भुषं	यत्तं दणं पत्तं भुषं पं यत्तं दणं पत्तं भुषं पं

अपसरन्तु अवतारप्रेक्षिणो ददाम्यहं सर्वलोकधातुवासिनां प्रेतानामाहरम् ।
 Apasarantu avatāraprekṣiṇo dadāmyaham sarvalokadhātuvāsinām pretānā-
 māharam.

(अहं प्रेक्षिणं प्रेक्षितं ददाम्यहं सर्वलोकधातुवासिनां प्रेतानामाहरम् ॥)

•

(67) ॐ सुदं सक्तं रघुवंशं वरिं वृषं
 (अग्रपूजार्पणमन्त्रः = Agrapūjārpaṇa-mantraḥ)

ॐ गुरु वज्र नैवेद्य आः हूं ।
 Oṃ guru vajra naivedya āḥ hūm.
 (सुदं रघुवंशं वरिं वृषं)

ॐ सव'बुद्ध'बोधि'सत्त्वे'भ्यो वज्र'नै'विद्य (नैवेद्ये) आः हूँ।

1 ॐ सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यो वज्रनैविद्य (नैवेद्ये) आः हूँ।

Oṃ sarvabuddhbodhisattvebhyo vajranaividya (naivedye) āḥ hūm.

(सव'बुद्ध'बोधि'सत्त्वे'भ्यो वज्र'नै'विद्य उद्'हृति'त्वात् ३॥)

ॐ काम'देव'मण्डल'वज्र'नै'विद्य (नैवेद्ये) आः हूँ।

ॐ कामदेवमण्डलवज्रनैवि(वे)द्य आः हूँ।

ōm kāmadevamaṇḍalavajranaivi(ve)dya āḥ hūm.

(काम'देव'मण्डल'वज्र'नै'विद्य उद्'हृति'त्वात् ३॥)

ॐ श्री'धर्म'पाल'वज्र'नै'विद्य (नैवेद्ये) आः हूँ॥

ॐ श्रीधर्मपालवज्रनैवि(वे)द्य आः हूँ।

Oṃ śrīdharmapālavajranaivi(ve)dya āḥ hūm.

(श्री'धर्म'पाल'वज्र'नै'विद्य उद्'हृति'त्वात् ॥)

•

(68) ॐ कन्द'सुति'श्रम'सा

(२पिण्डमन्त्रः = Piṇḍa-mantrah)

ॐ ह'रि'ते'स्वाहा

3 ॐ हरिते स्वाहा।

Oṃ harite svāhā.

(ह'रि'ते'स्वाहा उद्'हृति'त्वात् ३॥)

1. ॐ आः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यो वज्रनैवेद्ये हूँ। ६०- कृदृष्टिनिर्घातन; अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ९.
2. प्रस्तुत पिण्डमन्त्र के अन्तर्गत आये मन्त्र क्रमशः 'हारीतीमन्त्र', 'अग्रपिण्डमन्त्र' और 'उत्सृष्टपिण्डमन्त्र' के नाम से साधनमाला (साधन संख्या ४८, पृ० ९९-१०३) में वज्रयोगिनीभाषितं वादिराजमञ्जुश्रीसाधनं शीर्षक से उपलब्ध है।
3. 'ॐ हरिते स्वाहा।' नास्ति-वज्रयोगिनीभाषितं वादिराजमञ्जुश्रीसाधनं, साधनमाला (पृ० ९९-१०३)

ॐ ह॒रि॒ते॒ म॒हा॒व॒ज्र॒य॒क्षि॒णि॒ ह॒र॒ ह॒र॒ स॒र्व॒पा॒पं॒ म॒क्षिं॑ [मे॒ क्षीं॑] सु॒हा॒॥

1 ॐ हरिते महावज्रयक्षिणि हर हर सर्वपापं मक्षिं (मे क्षीं) स्वाहा ।

Oṃ harite mahāvajrayakṣiṇi hara hara sarvapāpaṃ makṣiṃ(me kṣiṃ) svāhā.

(ॐ ह॒रि॒ते॒ म॒हा॒व॒ज्र॒य॒क्षि॒णि॒ ह॒र॒ ह॒र॒ स॒र्व॒पा॒पं॒ म॒क्षिं॑ मे॒ क्षीं॑ सु॒हा॒॥)

(हारीतीमन्त्रः = Hārītī-mantraḥ)

ॐ अ॒ग्र॒पि॒ण्ड॒-अ॒शि॒भ्यः॑ सु॒हा॒॥

2 ॐ अग्रपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा ।

Oṃ agrapiṇḍa-aśibhyaḥ svāhā.

(ॐ अ॒ग्र॒पि॒ण्ड॒-अ॒शि॒भ्यः॑ सु॒हा॒॥)

(अग्रपिण्डमन्त्रः = Agrapiṇḍa-mantraḥ)

ॐ उ॒च्छि॒ष्ट॒पि॒ण्ड॒-अ॒शि॒भ्यः॑ सु॒हा॒॥

3 ॐ उच्छिष्टपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा ।

Oṃ ucchiṣṭapiṇḍa-aśibhyaḥ svāhā.

(ॐ उ॒च्छि॒ष्ट॒पि॒ण्ड॒-अ॒शि॒भ्यः॑ सु॒हा॒॥ ॥)

(उच्छिष्टपिण्डमन्त्रः = Ucchiṣṭapiṇḍa-mantraḥ)

•

1. ॐ हारीत्यै महायक्षिन्यै हर हर सर्वपापानि मे क्षीं सर्वयक्षिणि प्रवेशनि स्वाहा । हारीतीमन्त्रः- वज्रयोगिनीभाषितं वादिराजमञ्जुश्रीसाधनं, साधनमाला (पृ० ९९-१०३)

ॐ हारीति महायक्षिणि हर हर सर्वपापान् क्षीं स्वाहा ।- कुट्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ९)

2. ॐ अग्रपिण्डास(श)नेभ्यः स्वाहा, अग्रपिण्डमन्त्रः ।- तत्रैव

3. ॐ उत्सृष्टपिण्डास(श)नेभ्यः स्वाहा, उत्सृष्टपिण्डमन्त्रः ।- तत्रैव

(69) སྒྲིང་བ་ཚེས་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པའི་ལྷགས།

(1शोधन-धर्मताविशुद्धिमन्त्रः -

Śodhana-dharmatāviśuddhimantraḥ)

ཨོྃ་སྤྱལ་ལྷ་འདྲེ་སའ་རྣམས་སྤྱལ་ལྷ་འདྲེ་ཨོྃ་

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् ।

Oṃ svabhāvaśuddhāḥ sarvadharmāḥ svabhāvaśuddho'ham.

(ཨང་བཞིན་དག་པའི་ཚེས་ཐམས་ཅད་ཨང་བཞིན་དག་པའོ། ॥)

•

(70) སྒྲེལ་བ་རྣམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་ལྷགས།

(संवर्द्धनगगनगञ्जमन्त्रः -

Samvarddhanagaganagañja-mantraḥ)

རྣམས་སའ་དཔྱག་དེ་ཚུ་བི་བྱ་སྤྱུ་མུ་མུ་།

नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

Namassarvatathāgatebhyo viśvamukhebhyaḥ

(དེ་བཞིན་གཤམས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཚོ་སྤྱོད་ཚེས་རྣམས་ཕྱག་འཆལ་ལོ། ।)

སའ་ཐུ་ཁྱིམ་ཁྱེ་ལྷ་རྣམས་ཨོམ་གཤམ་ཁྱིམ་སྤྱོད་།

सर्वथा खं उद्गते स्फरण इमं गगन खं स्वाहा ।

sarvathā khaṃ udgate spharaṇa imaṃ gagana khaṃ svāhā.

(རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྣམ་མཁའ་འཕགས་ཀྱི་ཁྱེ་ཐུ་པ་འདི་རྣམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་གཞི་རྒྱགས། ॥)

•

Caryāvaśitāvegavadaṃśu-mantraḥ)

(དེ་བཞིན་གཤེད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲུག་ཟིན་པ་ལ་བྱས་འཆལ་ལོ། །ཡང་དག་པར་བྱས་པ་ཡང་དག་པར་བྱས་པ། །)

(ज्ञानोल्कामन्त्रः = Jñānolkā-mantraḥ)

ཕུག་འཆལ་ལོ་ཀུན་ནས་འཕྲོ་བའི་འོད་ཟེར་འབྱུང་བ་དམ་ཆེག།

ཕྱིང་པོ་ཆུ་ནམས། ॥)

1. प्रस्तुत मन्त्र कुट्टष्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ४) में उपलब्ध है।
2. नमः समन्तबुद्धानां सर्वतथागतावलोकित- कुट्टष्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ४)
3. फट् स्वाहा- इत्यधिकः, तत्रैव

(73) ॐ नमः सञ्जयन्त्यस्मिन्निष्कृता
(वशिताचक्रमन्त्रः = Vaśitācakra-mantraḥ)

ॐ नमः सञ्जयन्त्यस्मिन्निष्कृता

नमस्समन्तबुद्धानाम् ।

Namassamantabuddhānām.

(गुरुं नमः सञ्जयन्त्यस्मिन्निष्कृता ॥ १)

गुरोर्गुरुः प्रभञ्ज[३]ति महसमयः स्वाहा ॥

ग्रहेश्वरि प्रभञ्ज(ञ्ज)ति महासमय स्वाहा ।

graheśvari prabhañca(ñja)ti mahāsamaya svāhā.

(गुरोर्गुरुः प्रभञ्जन्त्यस्मिन्निष्कृता ॥ १)

•

(74) ॐ यदं कुर्वन्त्यस्मिन्निष्कृता
(पुनः आम्नायान्तरेण जलबलिमन्त्रः =
Punah āmnāyāntareṇa jalabalimantraḥ)

ॐ सर्वकरी हूँ ।

ॐ सर्वकरी हूँ ।

Oṃ sarvakari hūṃ.

(सर्वकरी ॥ १)

ॐ सर्वसिद्धि हूँ ।

ॐ सर्वसिद्धि हूँ ।

Oṃ sarvasiddhi hūṃ.

(सर्वसिद्धि ॥ १)

•

(75) སྐྱེ་གཏོར་གྱི་ཐུགས།

(नागबलिमन्त्रः = Nāga-balimantraḥ)

ཨྎྟ་ནྟག་སཔ་རིལྟར་སམཡ་ཏྱུ་ཇུ་ཇུ།

ॐ नाग सपरिवार समय हूँ जः जः।

Om nāga saparivāra samaya hūṃ jaḥ jaḥ

(སྟུའཔོར་དང་བཅས་པ་དམ་ཆིག་)

ཨྎྟ་བླ་སུ་གེ་མྱོ་སྟྲུ།

ॐ वासुकि मां स्वाहा।

Om vāsuki māṃ svāhā.

(འོར་ལྷ་སྟུ་གྱུ་)

ཨྎྟ་ནྟག་སཔ་རིལྟར་གཙྱཱ།

ॐ नाग सपरिवार गच्छ।

Om nāga saparivāra gaccha.

(སྟུའཔོར་དང་བཅས་པ་སྐྱོང་། ॥)

•

(76) སྐྱེ་མོ་འོད་ཟེར་ཙན་གྱི་ཐུགས།

(मारीचीदेवीमन्त्रः = Māricīdevī-mantraḥ)

ཨྎྟ་མ་རི་[མྱ་རི]ཏྱུ་མྱོ་སྟྲུ།

ॐ मरि(मारी)च्यै मां स्वाहा।

Om mari(mārī)cyaī māṃ svāhā.

(འོད་ཟེར་ཙན་མ། ॥)

(77) ॐ ह्रीं षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा

(1दशदिक्पालमन्त्रः = Daśadikpāla-mantraḥ)

दशदिक्पालं सप्तविंशतिं पद्मं गमयन्ति । सप्तविंशतिं

2दशदिक्पालं सप्तविंशतिं पद्मं गमयन्ति । सप्तविंशतिं

Daśadiklokapāla saparivāra ehyehi padmakamalastvam samayastvam.

(षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा दशदिक्पालं सप्तविंशतिं पद्मं गमयन्ति । सप्तविंशतिं)

ॐ इन्द्राय स्वाहा ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा ।

Oṃ indrāya svāhā.

(दशदिक्पालं सप्तविंशतिं)

ॐ अग्नये स्वाहा ।

ॐ अग्नये स्वाहा ।

Oṃ agnaye svāhā.

(षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा)

ॐ यमाय स्वाहा ।

ॐ यमाय स्वाहा ।

Oṃ yamāya svāhā.

(षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा)

ॐ नैऋत्ये स्वाहा ।

ॐ नैऋत्ये स्वाहा ।

Oṃ nairṛtya(bye) svāhā.

(षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा)

ॐ वरुणाय स्वाहा ।

ॐ वरुणाय स्वाहा ।

Oṃ varuṇāya svāhā.

(षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा)

ॐ वायवे स्वाहा ।

ॐ वायवे स्वाहा ।

Oṃ vāyave svāhā.

(षुणसंज्ञितं वसुतिं क्षणसा)

1. प्रस्तुत दिक्पालमन्त्र धीः के ३३वें अंक में प्रकाशित 'नित्यकर्मपूजाविधिः' के अन्तर्गत पृ० १६० में व्यतिक्रम एवं पाठभेद के साथ उपलब्ध है । किन्तु दिक्पालों के अन्त में वर्णित बलिमन्त्र नित्यकर्म-पूजाविधि में उपलब्ध नहीं है ।

2. ॐ इन्द्राय स्वाहा । ॐ यमाय स्वाहा । ॐ वरुणाय स्वाहा । ॐ कुबेराय स्वाहा । ॐ अग्नये स्वाहा । ॐ नैऋत्ये स्वाहा । ॐ वायवे स्वाहा । ॐ ईशानाय स्वाहा । ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मणे स्वाहा । ॐ अधः पृथिवीभ्यः स्वाहा । ॐ सूर्याय ग्रहाधिपतये स्वाहा । ॐ चन्द्रादिनक्षत्राधिपतये स्वाहा । ॐ नागेभ्यः स्वाहा । ॐ असुरेभ्यः स्वाहा । ॐ यक्षेभ्यः स्वाहा । ॐ सर्वदिग्विदिक्पालेभ्यः स्वाहा ।- नित्यकर्मपूजाविधिः, धीः-३३, पृ० १६०, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित ।

ॐ कृबेराय स्वाहा ।

ॐ कृबेराय स्वाहा ।

Oṃ kuberāya svāhā.

(पुष्पदन्त)

ॐ ईशानाय स्वाहा ।

ॐ ईशानाय स्वाहा ।

Oṃ īśānāya svāhā.

(दण्डवत्)

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

Oṃ brahmaṇe svāhā.

(हस्त)

ॐ सूर्याय स्वाहा ।

ॐ सूर्याय स्वाहा ।

Oṃ sūryāya svāhā.

(शिरः)

ॐ चन्द्राय स्वाहा ।

ॐ चन्द्राय स्वाहा ।

Oṃ candrāya svāhā.

(हस्त)

ॐ पृथिवीभ्यः स्वाहा ।

ॐ पृथिवीभ्यः स्वाहा ।

Oṃ pṛthivībhyaḥ svāhā.

(शिरः)

ॐ नागेभ्यः स्वाहा ।

ॐ नागेभ्यः स्वाहा ।

Oṃ nāgebhyaḥ svāhā.

(हस्त)

ॐ असुरेभ्यः स्वाहा ।

ॐ असुरेभ्यः स्वाहा ।

Oṃ asurebhyaḥ svahā.

(शिरः)

ॐ नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

ॐ नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

Namassarvatathāgatebheyo viśvamukhebhyaḥ.

(देवता)

སེའ་ཕྱེ་ཁྱིམ་འཕྲུལ་ཤིང་ཕྱེ་རུ་ཨིམ་གཤམ་ཁྱིམ་

सर्वथा खं उद्गते स्फरण इमं गगन खं ।

sarvathā khaṃ udgate spharaṇa imaṃ gagana khaṃ.

(ནམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁའ་འཕགས་ཤིང་ཁྱབ་པ་འདི་ནམས་ཁའི་དབྱིངས་སུ།)

གྲྭ་ཆེད་སྤྱད་པའི་སྤྱད།

गृह्णेदं बल्यादि स्वाहा ।

gṛhṇedaṃ balyādi svāhā.

(གཏོར་མ་ལ་སྤྱོད་པ་འདི་བཟུང་། ॥)

•

(78) རྩ་བ་ཆུད་ཀྱི་སྤྱོད་པ།

(अष्टसेनमन्त्रः = Aṣṭasena-mantraḥ)

ཨོ་དེམ་ནྟག་ཡུལ་རྩྱུམ་གཞུག་ཨུམ་གཟུར་གཟུར་གྱི་རྩྱུར་མཆོར་ག་མཆུའུ་ཨུམ་ཆུའུ་ཨུའི་ཉི་
པ་ལྟ་གམའཡུལ་སྤྱོད། ཨོ་ཏྭ་ཀྱི་རྩྱུ་ཨོ།

ॐ देव नाग यक्ष राक्षस गन्धर्व असुर गरुड किन्नर महोरग मनुष्य अमनुष्य एहोहि
पद्मकमलयस्त्वम् । ॐ टक्कि हूँ जः ।

Om deva nāga yakṣa rākṣasa gandharva asura garuḍa kinnara mahoraga
manuṣya amanuṣya ehyehi padmakamalayastvam. Om ṭakki hūṃ jah.

(ལྷ་ལྟ་གནོད་སྤྱོད་སྤྱོད་པོ་དེ་ཟ་ལྷ་མེན་ནམ་མཁའ་ཤིང་མི་འམ་ཅི་ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་མི་དང་མི་མེན་ཆུར་བྱོན་
ཆུར་བྱོན་པ་ལྟ་པ་ལྟ་ལྟ། འདོད་པ། ॥)

•

(79) འཕྲུང་གཏོར་གྱི་སྒྲགས།

(भूतबलिमन्त्रः = Bhūtabalimantraḥ)

ཨྎ་གུང་ཀརི་གུང་ཀརི་སྒྲུ།

ॐ गुङ्करि गुङ्करि स्वाहा ।

Om guṅkari guṅkari svāhā.

ཨྎ་པིཅི་པིཅི་སྒྲུ།

ॐ पिचि पिचि स्वाहा ।

Om pici pici svāhā.

ཨྎ་གུང་གུང་སྒྲུ།

ॐ गुङ् गुङ् स्वाहा ।

Om guṅ guṅ svāhā.

ཨྎ་གྲྀྣེདའྲ།

ॐ गृह्णेदं

Om gr̥hṇedam.

(འདི་བཟུང་།)

སེའྲ་བེལྲུམ།

सर्वविघ्न(ना)न् ।

sarvaviḡhna(nā)n

(བཞགས་ཐམས་ཅད།)

ཨྎ་སེའྲ་བླུང་གཙྱུ།

ॐ सर्वभूत गच्छ ।

Om sarvabhūta gacch.

འཕྲུང་འབྲམས་ཅད་མཛོད་ ॥ ॥)

•

(80) མྲོ་མྲོའི་གཟུངས།

(२४ छ (सञ्चक) धारणी = Sañcaka-dhāraṇī)

ཨྎ་བཙྲ་ཁམ་ཁམ་རྒྱུ།

3ॐ वज्र खन खन हूँ ।

1. མྲོ་- མ.

2. प्रस्तुत सञ्चक-धारणी के अन्तर्गत आये अधिकांश धारणीमन्त्र अद्वयवज्र विरचित 'कुट्टष्टिनिर्घातनम्' (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० १-१२) में और आंशिक रूप से धारण्यादिसंग्रह में 'आर्य-वैरोचननाम धारणी' (पत्रांक- ५९b-६०a) तथा चैत्यपुद्गलस्य हृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a) में उपलब्ध हैं ।

3. ॐ वज्र खन खन हूँ । नास्ति- कुट्टष्टिनिर्घातनम् (अ० व० सं०), आर्यवैरोचननाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५९-६०), चैत्यपुद्गलस्यहृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a)

Om vajra khana khana hūm.

(ॐ वैष्णवेः)

ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

1ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

Om namo bhagavate vairocanaprabharājāya tathāgatāya arhate samyak-sambuddhāya.

(ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।)

(ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।)

ॐ नमो	ॐ नमो	ॐ नमो
तद्यथा—	ॐ सु(सू)क्ष्मे सु(सू)क्ष्मे	समे समये
Tadyathā-	Om sūkṣme sūkṣme	same samaye
(ॐ नमो)	ॐ नमो	ॐ नमो

1. ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय । तद्यथा— ॐ सूक्ष्मे सूक्ष्मे समे समये शान्ते दान्ते समारोपे अनालम्बे तरम्बे यशोवति महातेजे निराकुलनिर्वाणे सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा । अनया धारण्या मृत्पिण्डं बालुकापिण्डं वा एकविंशतिवारान् परिजप्य चैत्यं कुर्यात् । यावन्त-स्तस्मिन् परमाणवस्तावन्त्यः कोट्यः चैत्यानि कृतानि भवन्ति, परमाणुसंख्यातानि पुण्यानि प्रतिलभते, दशभूमिश्चरो भवति, क्षिप्रं चानुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसम्भोत्स्यत इदमवोचद् भगवान् वैरोचनस्तथागतः । महानुशंसाधारणी । — कुट्टिनिर्वातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ८)

ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभकेतुराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय । तद्यथा— ॐ सू(सू)क्ष्मे सू(सू)क्ष्मे समे समे समये समये शान्ते शान्ते दान्ते दान्ते समारोपे अनारम्ब(लम्बे) तरम्बे यथो (शो)भवति महातेजे (तेजे) निरालम्बे निराकुले निर्वाणे सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा । आर्य वैरोचननाम धारणी समाप्ता ॥— आर्य-वैरोचननाम धारणी (पत्रांक- ५९b-६०a)

ॐ नमो भगवत्ये वैरोचने प्रभकेतुराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय । तद्यथा— ॐ सूक्ष्मे सूक्ष्मे स्मय(समये) स्मय(समये) दान्ते दान्ते शान्ते शान्ते समारू(रो)पे अनालम्बे जसभवते(यशोभवति?) महातेजे निरालम्बे निलाकुरे (निराकुले) निर्वाणे (णे) सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा । ----चैत्यपुद्गलस्य हृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a)

2. सु(सू)क्ष्मे- ख.

ཤཱ་རྩོ།	དྲཱ་རྩོ།	ཨ་སམ་རྒྱ་རྩོ།
शान्ते	दान्ते	असमारोपे
ṣānte	dānte	asamārope
(विंश)	दुपंश)	
ཨ་མ་ལ་མྱེ།	ཏ་ར་མྱེ།	ཡ་ཤོ་ལ་ཏི།
अनलम्बे(म्बे)	तरम्बे	यशोवति
analambhe(mbe)	tarambhe	yaśovati
(दक्षिण'स'खेद'स)		ལྷན་གྲགས་ལྷན་པ།)
མ་རྩ་རྩེ།	ནི་རྩ་ལྱེ།	ནི་རི་ལྱེ།
महातेज(जे)	निरकूले(निराकुले)	निरिवणे(निर्वाणे)
mahāteja(je)	nirakūle (nirākule)	nirivane (nirvāṇe)
(मंत्रे'पदे'के'प)	रिण'सुप'स)	

ས་པ་བྱུང་ཨ་མྱེ་རྩ་ཨ་མྱེ་རྩ་སྐྱེ།
 सर्वबुद्ध-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा ।
 sarvabuddha-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite svāhā.
 (སངས་རྒྱལ་མཁས་ཅན་གྱི་ཕྱི་ཕྱིས་བསྐྱེད་པས་གྱིས་ཕྱི་བསྐྱེད་པས་མ།)

ན་མ་སྐྱེ་མ་རྩ་བྱུང་རྩ།
 1 नमस्समन्तबुद्धानाम् ।

1. “नमस्समन्तबुद्धानां-----ॐ आकाशधातुगर्भे स्वाहा ।” तक का मन्त्र महामण्डलव्यूहतन्त्रानुसारेण सञ्चकताडनविधि के अन्तर्गत ‘कुदृष्टिनिर्घातनम्’ (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७) में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त चैत्यपुद्गलस्य हृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a) में भी कुछ व्यतिक्रम एवं पाठभेद के साथ पूर्व में दिये पादटिप्पणी के सातत्य में आंशिक रूप से मिलता है, उपर्युक्त दोनों पाठों को पादटिप्पणी में दिया जा रहा है। —
 नमः समन्तबुद्धानाम् । ॐ वज्रपुष्पे स्वाहा । मृत्तिकाग्रहणमन्त्रः । ॐ वज्रोद्भवाय स्वाहा । बिम्बबलन-मन्त्रः । ॐ अरजे विरजे स्वाहा । तैलम्रक्षणमन्त्रः । ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा । मुद्राक्षेपनमन्त्रः । ॐ

(ཀུན་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལྟོ། །)

ॐ वज्रायुषे स्वाहा ।

Om vajrāyuṣe svāhā.

(རྫོགས་ཆེ་ལ་གཞི་ཚུགས།)

(मृत्तिकाग्रहणमन्त्रः = Mrtikāgrahana-mantraḥ)

१ॐ वसुधाय स्वाहा ।

Om vasudhāya svāhā.

(རྟོག་འཇིག་གཞི་རྒྱལ་པ།)

ॐ वज्रोद्भवाय स्वाहा ।

Om vajrodbhavāya svāhā.

(དོན་མཛད་པ་ལ་གཞི་རྒྱུ་ལས།)

(बिम्बबलनमन्त्रः = Bimbabalana-mantraḥ)

ॐ अरजे विरजे स्वाहा ।

वज्रमुद्राकोटन स्वाहा। आकोटनमन्त्रः। ॐ धर्मरते स्वाहा। आकर्षणमन्त्रः। ॐ अप्रतिष्ठितवज्रे स्वाहा।
स्थापनमन्त्रः। ॐ सर्वतथागतमणिशतदीप्ते ज्वल ज्वल धर्मधातुगर्भे स्वाहा। प्रतिष्ठामन्त्रः। —
कदष्टिनिर्घातनम्, अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७

ॐ वसुधे स्वाहा। ॐ वज्रोद्भवाय स्वाहा। ॐ अल(र)जे विल(र)जे स्वाहा। ॐ वज्रकर्तिच्छेदे-२ स्वाहा। ॐ वज्रमुद्ररानां आकोटय-२ स्वाहा। ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा। ॐ धर्मरचिते स्वाहा। ॐ सुप्रतिष्ठितवज्रे आंशने स्वाहा। इति श्रीचैत्यपुद्ग(ल)स्य हृदयनामधारणी समाप्ता। — धा० सं०, (पत्रांक-२५०b-२५१a)

1. नास्ति- अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७

Om araje viraje svāhā

(ह्रास्वः अराजो विराजो स्वाहा)

(तैलप्रक्षणमन्त्रः = Tailamrakṣaṇa-mantraḥ)

ॐ वज्रधतुगर्भे स्वाहा ।

1ॐ वज्रधातुगर्भे स्वाहा ।

Om vajradhātugarbhe svāhā.

(ह्रास्वः वज्रधातुगर्भो स्वाहा)

ॐ धर्मधतुगर्भे स्वाहा ।

ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा ।

Om dharmadhātugarbhe svāhā.

(ह्रास्वः धर्मधातुगर्भो स्वाहा)

(मुद्राक्षेपणमन्त्रः = Mudrākṣepana-mantraḥ)

ॐ वज्रमुदगरे आकोटय आकोटय हूं फट् स्वाहा ।

ॐ वज्रमुदगरे आकोटय आकोटय हूं फट् स्वाहा ।

Om vajramudgare ākoṭaya ākoṭaya hūṃ phaṭ svāhā.

(ह्रास्वः वज्रमुदगरे आकोटय आकोटय स्वाहा)

(आकोटनमन्त्रः = Ākoṭāna-mantraḥ)

ॐ धर्मरते स्वाहा ।

ॐ धर्मरते स्वाहा ।

Om dharmarate svāhā.

(ह्रास्वः धर्मरतो स्वाहा)

(आकर्षणमन्त्रः = Ākarṣaṇa-mantraḥ)

ॐ सुप्रतिष्ठवज्रं स्वाहा ।

ॐ सुप्रतिष्ठवज्रं (वज्रे) स्वाहा ।

Oṃ supratīṣṭhāvajra(vajre) svāhā.

(विषयः पञ्चवक्त्रः)

(स्थापनमन्त्रः = Sathāpana-mantraḥ)

ॐ सर्वतथागतमणिशतदीपते ज्वल ज्वल धर्मधातुगर्भे स्वाहा ।

ॐ सर्वतथागतमणिशतदीपते (पते) ज्वल ज्वल धर्मधातुगर्भे स्वाहा ।

Oṃ sarvatathāgatamaṇīśatadīpate(pte) jvala jvala dharmadhātugarbhe svāhā.

(देवविष्णुब्रह्मादिदेवतासु सर्वेषां तद्दीपयितुं प्रार्थना । सर्वतथागतमणिशतदीपते ।)

(प्रतिष्ठापनमन्त्रः = Pratīṣṭhā-mantraḥ)

ॐ स्वभावविशुद्धे आहार आगच्छ आगच्छ धर्मधातुगर्भे स्वाहा ।

ॐ स्वभावविशुद्धे आहार आगच्छ आगच्छ धर्मधातुगर्भे स्वाहा ।

Oṃ svabhābha viśuddhe āhara āgaccha āgaccha dharmadhātugarbhe svāhā.

(स्वभावविशुद्धे आहार आगच्छ आगच्छ धर्मधातुगर्भे स्वाहा ।)

(विसर्जनमन्त्रः = Visarjana-mantraḥ)

ॐ आकाशधातुगर्भे स्वाहा ।

ॐ आकाशधातुगर्भे स्वाहा ।

Oṃ ākāśadhātugarbhe svāhā.

(आकाशधातुगर्भे स्वाहा ।)

(क्षमापनमन्त्रः = Kṣamāpana-mantraḥ)

ॐ सर्वतथागत धर्मकाय महासुख वज्रसुरत समयस्त्वम् ।

ॐ सर्वतथागत धर्मकाय महासुख वज्रसुरत समयस्त्वम् ।

Oṃ sarvatathāgata dharmakāya mahāsukh vajrasurata samayaṣṭvam.

(दे'वबिक्'वमेवस'प'स्रमस'उद'गु'कस'ल्लु'वदे'व'केक'पो'दे'हे'मिक्'दु'दग'अ'वदि'दम'कैव'स्रिद।)

ॐ सार्व'तथागत'सम्भोग'काय'समय'स्त्वम्।

ॐ सर्वतथागत सम्भोगकाय समयस्त्वम्।

Oṃ sarvatathāgata sambhogakāya samayaṣṭvam.

(दे'वबिक्'वमेवस'प'स्रमस'उद'गु'र्य'स'स्रु'द'ह'वस'ल्लु'दि'दम'कैव'स्रिद।)

ॐ सार्व'तथागत'निर्माण'काय'समय'स्त्वम्।

ॐ सर्वतथागत निर्माणकाय समयस्त्वम्।

Oṃ sarvatathāgata nirmāṇakāya samayaṣṭvam.

(दे'वबिक्'वमेवस'प'स्रमस'उद'गु'स्रु'प'दि'ल्लु'दि'दम'कैव'स्रिद।)

ॐ वज्र'प्रमर्दन'काय'प्रमर्दन'काय'स्वाहा।

ॐ वज्रप्रमर्दनाय प्रमर्दनाय स्वाहा।

Oṃ vajrapramardanāya pramardanāya svāhā.

(दे'हे'र'व'दु'र'ह'मस'प'र'व'दु'र'ह'मस'प'दि'भु'र'व'बि'कु'वस।)

ॐ ह्रीं'विघ्न'हन्ति'ह्रूं'धत्।

ॐ आः विघ्नान्तकृत् ह्रूं फट्।

Oṃ āḥ vighnāntakṛt hūm phaṭ.

(वमेवस'मस'स्रिद।)

ॐ सार्व'तथागत'अभिषेक'त'समय'श्रिये'ह्रूं।

1ॐ सर्वतथागत-अभिषेकत(तः) समयश्रिये ह्रूं।

(དེ་བཞིན་གཤམས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་བསྐྱར་བའི་དམ་ཆེག་དཔལ་གྱི་ཕྱིར་དུ།)

ཨོཾ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཨཱུ་ཀཱཱ་པིཤོརྩི་སྤྱུ།

ॐ हूँ त्राँ ह्रीः आ कायविशोधनि स्वाहा ।

Om hūṃ trāṃ hrīḥ ā kāyaviśodhani svāhā.

(སྒྲིམ་པར་སྤྱོད་བཀའ་ཚུགས།)

ཨོ་ཙཱ་ཙཱ་སམཙཱ་ཙཱ་པའོ་རྩོམ་སྤྲུལ།

ॐ चक्षु चक्षु समन्तचक्षु विशोधनि स्वाहा ।

Om cakṣu cakṣu samantacakṣu viśodhani svāhā.

(སྤྱོད་སྤྱོད་ཀྱི་ནམ་སྤྱོད་རྣམ་པར་རྫོང་བཀའ་ཁྲིམས།)

ཨོཾ་ཨཱཱཱཾ་ ཨཱཱཱཾ་ སྐྱེ་བའི་ སྐྱེ་བྱེད་ཀྱི་ རྒྱལ་པོ་ལྷ་མོ་ལྷ་མོ་ ཨཱཱཱཾ་ ཨཱཱཱཾ་

ॐ हूँ ह्रीः भु खं वज्री भव दृढ तिष्ठ भु खं स्वाहा ।

Om hūṃ hrīḥ bhu kham vajrī bhava dṛḍha tiṣṭha bhu kham svāhā.

(རྫོག་ཅན་མཛོད། བརྟན་པར་བཞགས།)

[illegible]

१ॐ नमो भगवते पुष्पकेतुराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।

**Om namo bhagavate puṣpaketurājāya tathāgatāya arhate samyakṣam-
buddhāya.**

(པཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་བཞིན་གསུངས་པ་དག་པཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པའི་ཤར་ས་རྒྱལ་མེད་ལོ་གསུམ་པོ་ལ་
ཕུག་འཆལ་ལོ། །)

1. ॐ नमो भगवते पुष्पकेतुराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय । तद्यथा— ॐ पुष्पे-२ महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पोद्भवे पुष्पसंभवे पुष्पावकरणे स्वाहा । - नित्यकर्मपूजाविधिः, धीः-३३, पृ० १५७

(१महाकालमन्त्रः - Mahākālamantrah)

ཨིདྲ་རྩྭ་དཔྱལ་ཨཔ་ཀཱ་འུ་ཡདྲི་པྲའི་རྩྭ་[པྲའི་རྩྭ་] ལྷ་ར་སི་དདྲ་ཨིམྲ་དུམྲི་ཁ་ཁ།
 इदं रत्नत्रयाय अपकारिणं यदि प्रतीज्ञां(ज्ञां) स्मरसि तदा इमं दुष्टं ख ख
 Idam ratnatrayāya apakāriṇaṃ yadi pratijñā(jñāṃ) smarasi tadā imaṃ duṣṭaṃ
 kha kha.
 (འདྲི་ར་དཀྱིན་ཙོག་གསུམ་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་གལ་ཏེ་འཕྱར་ན་དམ་བཅའ་དྲན་པར་གྱིས་ལ་དེའི་ཆོ་ག་དུག་པ་ཅན་
 འདྲི་ཟླ་ཟླ།)

ཁྱའི་ཁྱའི།	མ[ལྷ]ར་མ[ལྷ]ར།	ཤྱྱཾ་ཤྱྱྱྱ།
खाहि खाहि	मार मार	गृह्ण गृह्ण
khāhi khāhi	māra māra	gr̥hṇa gr̥hṇa
(ཟླ་རྒྱལ་ཟླ་རྒྱལ།)	ཞྱོད་ཞྱོད།	ཇྱོད་ཇྱོད།)

1. प्रस्तुत महाकालमन्त्र साधनमाला में 'श्रीमहाकालसाधनम्' (संख्या ३०१, पृ० ५८५-५८६), 'महाकाल-साधनम्' (साधन संख्या ३००, पृ० ५८३-५८४) तथा कवि करुणाभिधान द्वारा विरचित 'वज्रमहाकाल-साधनम्' (साधन संख्या ३०३, पृ० ५८७-५९०) आदि साधनों में उपलब्ध है।
2. तद्यथा— ॐ महाकालाय शासनोपकारिणे एषोऽपश्चिमकालोऽयं रत्नत्रयापकारिणं यदि प्रतिज्ञां स्मरसि तदा इमं दुष्टं ख ख खाहि खाहि मार मार गृह्ण गृह्ण बन्ध बन्ध हन हन दह दह पच पच दिनैकेन मारय हूँ हूँ फट् फट्— श्रीमहाकालसाधनम्, सा० मा०, पृ० ५८५
मन्त्र:- ॐ महाकालाय शासनोपकारिणे सद्योमुक्तिश्मशानवासिमातृगणनमस्कृताय एषोऽपश्चिमकालोऽयं यदि त्वं प्रतिज्ञां स्मरसि तदा इमं रत्नत्रयापकारिणं अमुकनाम दुष्टं ख ख खाहि खाहि मार मार गृह्ण गृह्ण बन्ध बन्ध हन हन दह दह पच पच दिनैकेन मारय मारय हूँ हूँ हूँ फट् (फट्) सर्वयक्षराक्षसभूतप्रेत-पिशाचोन्मादबलि गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरु शान्तिं कुरु रक्षां कुरु। बलि:- महाकालसाधनम्, पृ० ५८३-५८४; वज्रमहाकालसाधनम् (पृ० ५८८-५८९)

बन्ध बन्ध। हन हन दह दह पच पच दिक्मेकेन हूं फट हूं । ।

बन्ध बन्ध हन हन दह दह पच पच दिनमेकेन हूं फट हूं ।

bandha bandha hana hana daha daha paca paca dinamekena hūṃ phaṭ hūṃ.

(हं स हं स हन हन दह दह पच पच दिक्मेकेन हूं फट हूं ।)

ॐ महकाल हूं फट ।

ॐ महाकाल हूं फट ।

Oṃ mahākāla hūṃ phaṭ.

(क प यं के क यं)

ॐ महकालाय हूं हूं फट फट स्वाहा ।

ॐ महाकालाय हूं हूं फट फट स्वाहा ।

Oṃ mahākālāya hūṃ hūṃ phaṭ phaṭ svāhā.

(क प यं के क यं ॥)

•

(82) ॐ ह्रीं शिवाय नमः ।

(देवी[महाकाली]मन्त्रः - Devi (Mahākālī) mantraḥ)

ॐ रु रु रो रु वितिष्ठ वध्वसि कमल राक्षसि हूं भ्यो हूं ।

ॐ रु रु रो रु वितिष्ठ वध्वसि कमल राक्षसि हूं भ्यो हूं ।

Oṃ ru ru ro ru vitiṣṭha vadhvasi kamala rākṣasi hūṃ bhyo hūṃ.

(ॐ रु रु रो रु वितिष्ठ वध्वसि कमल राक्षसि हूं भ्यो हूं ॥)

•

(परिणामनाश्लोकाः = Parīṇāmanāślokaḥ)

[illegible]

यानीह भूतानि समागतानि स्थितानि भूमावथान्तरीक्षे ।

Yanīha bhūtāni samāgatāni sthitāni bhūmāvathāntarikse.

འབྲུང་པོ་གང་དག་འདིར་ནི་ལྷགས་ལྟར་ཏེ། །ས་ལམ་འོན་ཏེ་བར་སྒང་འཁོད་པའང་སྟུང་། །

ཀུའུ་མེད་[ཏྲི]་སཏཏ་པུ་ཏྲི་ཅ་སྟོ་ཅ་ཅ་སྟོ་མེེ།

कुर्वन्तु मैत्रीं सततं प्रजासु दिवा च रात्रौ च चरन्तु धर्मम् ॥

Kurvantu maitrīm satatam prajāsu divā ca rātrau ca carantu dharmam.

ལྷོ་གླ་རྣམས་ལ་རྟག་དུ་བྱམས་བྱེད་ཅིང་། ཉིན་དང་མཚན་དུ་ཆོས་ལ་སྦྱོད་པར་ཤོག། ॥

ཅེས་འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞབས་པའི་གཟུངས་ནས་ངལ་བཟོས་པོའི་མཆན་ཐུགས་ཀྱི་བར་ནི་ཐེ་སྒྲ་མ་ཁྱ་ལུ་ཡོ་
 ཕུ་བ་ཆེན་པོས་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་བཀོད་ཅིང་སྤྱུལ་རས་ཀྱིས་བཙས་པའི་སྒྲིབས་བམ་བཞིན་ལ། རྩོད་སྤང་དུ་གཟུངས་
 ཐུགས་ཐུགས་ཆེ་བ་འདི་དང་འདི་ནམས་བཀོད་དེ་མཆན་བྱར་ཡང་བྱིས་ཤིག་ཅེས་ས་རྒྱུང་བ་དམ་པའི་བཀའ་སྤྱི་པོར་
 རོད་དེ། བཅུན་པ་དབང་པོས་བད་སྤྱོད་པའི་གཞུང་ལུགས་བཞིན་དུ་དག་པར་བབྱིས་པ་འདིས་ནི་བྱལ་བའི་བསྟན་པ་རིན་
 པོ་ཆེ་ཕྱོགས་དུས་ཐམས་ཅད་དྲ་དར་ཞིང་བྱས་པའི་བྱར་ཐུར་ཅིག །

༡དགའ་བའི་དཔལ་ལྷན་ཕྱོགས་ལས་རྒྱུ་པར་བྱལ། །

1. **ଜେ.ସୁନ୍ଦରୀ**

གང་ཞིག་མཚན་ཅམ་ལན་གཅིག་ན་རྒྱང་ཡང་།

མི་བཟད་ངན་འཕྱོེ་ཉེས་བཟུང་ནད་རོ་རྣམས།

དྲང་ནས་འབྱོན་བྱེད་ཕྱན་མཚལ་སྒྲ་མེད་པ།

ལྷ་མ་བདེ་གཤེགས་སྤྲུལ་བཅས་རྣམས་ཀྱི་མཆོད།

མཁམ་མཆོག་ཉུ་ལུ་ལོ་ཆེན་ལ་སྟོན་པས།

མེ་བཞིའི་འབྲུང་བནས་བྱ་འཛིན་པོ་བྲང་ནས། ।

འཇམ་སྒྲིང་སྒྲེ་བྱའི་བསོད་ནམས་དགའ་སྟོན་དུ། ।

མི་ཟད་པར་དུ་བརྒྱབས་འདི་ཨེ་མ་ཡུལ། ।

ཞེས་རབ་བཏན་ལྷན་པོ་སྒྲིང་དུ་པར་དུ་བརྒྱབས་པ་བཞིན་ཡོང་ཅིས་གྱིས། སྒྲར་ཡང་དགའ་ལྷན་ལུན་ཚྭ་བས་

སྒྲིང་དུ་བསར་དུ་བསྐོས་པ་དགེ་ལེགས་སུ་བྱུར་ཅིག།

སའ་མཛུལ།

• • •

ཉེར་མཁོ་ལེགས་སྒྲར་བོད་སྒྲིང་མཆན་གསལ་འདི། ।

ལམོང་ས་ལུ་པས་པར་དུ་བརྒྱན་ན་འང་། ।

ཏ་ཅང་འབྲོ་ཆེས་བཟེས་ཟད་ཉམས་སྒྲོན་བྱིས། ।

བྱུལ་བརྒན་ནོར་འཛིན་ལ་སྒྲིང་ཞིང་པའི་ཚྭ་བས། ।

ཕན་བདེའི་འབྲས་བཟང་ལོངས་སུ་སྒྲིང་པའི་བྱིས། ।

གནམ་བསྐོས་དགའ་བ་བརྒྱ་ལྷན་པོ་བྲང་ནས། ।

འཇམ་མེད་ཚས་སྒྲིན་བྱ་ཆར་འདི་ཕབ་བོ། ।

ཞེས་པ་འདི་ཡང་བརྒྱུད་ས་འབྲམ་རྩིང་བཟེས་ཟད་ལ་བཞེན་སྒྱབས་མཐོན་སྤྲིད་སྒྲིང་སྒྲུབ་བྲག་པརྱའི་བཀའ་

དམོངས་བཞིན་རབ་བྲུང་བཅུ་དྲུག་པའི་ཉི་མཁུལ་བྱེད་ཅས་གིང་པོ་སྒྲེལ་ལོར་པར་བསར་བརྒྱན་བྱིས་ཞོལ་པར་ཁང་

ཆེན་མོ་གངས་ཅན་ཕན་བདེའི་གདེར་མཛོད་སྒྲིང་དུ་བཞུགས། ॥— ལ།

ནམ་ཞུར་ཞབལྟི་དེ་བུ་རྒྱལ། བོདྱི་སྒྲུལ། མདྲ་སྒྲུལ། མདྲ་ཀླུ་རྒྱལ།

नम आर्य-अवलोकितेश्वराय । बोधिसत्त्वाय । महासत्त्वाय । महाकारुणिकाय ।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པ་འཕགས་པ་ཐུན་
རས་གཟིགས་དབང་ཕུག་ལ་ཕུག་འཆལ་ལོ། །

དྲུག་ ཨྱ་རྩ་རྩ་ རྩི་རྩི་ རྩུ་རྩུ་ 1ཨྱི་བཤེ། ཅལི་ཅལི།

तद्यथा । ॐ धर धर । धिरि धिरि । धुर धुर । इष्टे वष्टे । चले चले ।

འདྲི་ལྟེ།

ཕྱེའི་ཕྱེའི། ཀུ་སུ་མེ་ཀུ་སུ་མེ་ལེ་ཨྱི་ལི་མི་ལི། ཅེ་དྲི་ལྷ་ལྷ་པན་ལ་སྒྲུ།

प्रचले प्रचले कुसुमे कुसुमवरे इलि मिलि । चितिज्वलमापनाय स्वाहा ।

མེ་དྲོག་མ། མེ་དྲོག་མཆོག་མ། མཛེའི་ནད་སེལ་བ་གཞི་ཆུགས། ॥

१ རྒྱལ་བྱིམས་རྣམ་དག་གི་གཟུངས། (ལྷོ་ལོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་)

ཨྱ་ཞུར་ཞུར་གྱི་སྒྲུལ། རྩ་རྩ། མདྲ་ཀླུ་སྒྲུ།

ॐ अमोघशीलसंभर । भर भर । महाशुद्धसत्त्व ।

དེ་ན་ཡོད་པའི་རྒྱལ་བྱིམས་ཀྱི་ཆོགས། རྩ་པ་རྩ་པ། སེམས་དཔའ་དག་པ་ཆེན་པོ།

པལ་བྱིས་ཀྱི་རྒྱུང་། རྩ་རྩ། སེམས་ཞུར་ཞུར་གྱི་རྒྱུང་།

पद्मविभूषितभुज । धर धर । समन्त-अवलोकिते हूं फट् ।

པལ་སྒྲུལ་རྣམ་པར་བརྒྱན་པའི་ཕུག། འཛིན་པ་འཛིན་པ། ཀུན་ནས་ཐུན་རས་གཟིགས། ॥

དེ་ན་ཡོད་པའི་རྒྱལ་བྱིམས་ཀྱི་ཆོགས།
རྩ་རྩ་སེམས་དཔའ་དག་པ་ཆེན་པོ།
ཐུགས་རྗེ་པན་བརྒྱན་པའི་རྒྱུང་།
འཛིན་པ་འཛིན་པ་ཀུན་ནས་ཐུན་རས་གཟིགས། ॥

དོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་དམ་ཆེ་གྲུ་སྒྲོང་། ། དོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་ཉིད་ཀྱི་ཉིར་གནས་མཛོད། །

Безопасное управление Судом. Аа.

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སྐམས་ཅད་ན་གནས་པའི་ཡི་དྲུགས་རྣམས་ལ་བདག་བཟའ་བ་འདི་སྟེར་
གྱི། ལྷགས་ལྟ་པ་རྣམས་སྟེར་དེངས་གིག། ॥

(अग्रपूजार्पणमन्त्र)

ལྷ་མ་དོ་རྒྱུ་ལྷ་མ་

སངས་ཀྱིས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་རྫོགས་ཁལ་ནས།

འདྲི་ལྟུང་དགྱེལ་འཁོར་ནི་རྒྱུ་ལྟར།

དཔལ་ལྷན་ཚས་སྐྱོང་བ་དོ་རྒྱུ་ཞལ་ཟས། །

श्री. गंगाधर प्रसाद, श्री. जगन्नाथ

ॐ कन्दुतिश्रुता (पिण्डमन्त्र)

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ हरिते स्वाहा ।

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ हरिते महावज्रयक्षिणि हर हर सर्वपापं मक्षिं स्वाहा ।

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ अग्रपिण्ड-अशिश्रुति स्वाहा ।

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ उच्छिष्टपिण्ड-अशिश्रुति स्वाहा ।

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ कन्दुतिश्रुता

(शोधनधर्मताविशुद्धिमन्त्र)

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् ।

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ कन्दुतिश्रुता

ॐ नमः नमः नमः ॥

ॐ सम्भर सम्भर हूँ ।

ཡང་དག་པར་གྱིས་པ་ཡང་དག་པར་གྱིས་པ། །

ॐ ཨེ་ཤེས་སྒྲུབ་མཛད་པའི་ཡུལ་ས། (ཇཱ་ན་ན་ལོ་ལྷ་ཁ་མ་མྱ་)

ཨོ་རྒྱལ་ཡུལ་ལོང་།

ॐ ज्ञान-अवलोकिते ।

ཡེ་ཤེས་སྒྲུབ་མདའ།

ནམསྐམ་རྩ་ལྟ་བུ་རྩི་སྐྱུལ་སམལ།

नमस्समन्तस्फरणरश्मिसम्भवसमय ।

ཕུག་འཇལ་ལོ་ཀུན་ནས་འཕྲོ་བའི་འོད་ཟེར་
འབྱུང་བ་དམ་ཆེན།

མདྲ་མཆི། དུའུ་དུའུ།

महामणि । दुरु दुरु ।

ནོར་བུ་ཆེན་པོ།

ཨིདཡ་ཇལནི་ལྷོ།

हृदयजलनि हूँ ।

ཡིད་པོ་ཆུ་ནམས། །

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (वशिष्ठाचक्रमन्त्र)

ཀུམ་ལྷན་ལྷན་གྱི་

नमस्समन्तबुद्धानाम् ।

ཀཱ་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།

གཏེག་པའི་ཕ་སྐུ་ཅོང་། ཅོང་ཏེ་མཉུ་སམལ་སྐུ་།

ग्रहेश्वरि प्रभञ्जति महासमय स्वाहा ।

གཟའི་དབང་ཕྱག་རབ་དྲུ་འཛམས་པ་དམ་ཆིག་ཆེན་པོ་གཞི་ཚུགས། །

ॐ अ० कु० ग० र० ग० उ० म० मी० श्रु० म०

(पुनः आम्नायान्तरेण जलबलिमन्त्र)

ॐ स० व० ग० र० ग०

ॐ सर्वकरि हूँ ।

ममस० उ० पु० द० य०

ॐ स० व० ग० र० ग०

ॐ सर्वसिद्धि हूँ ।

ममस० उ० पु० द० य० ॥

ॐ शु० ग० र० ग० श्रु० म० ८१५. ११.

(नागबलिमन्त्र)

ॐ नृ० ग० स० प० र० श्रु० म० ८१६. ११.

ॐ नागसपरिवारसमय हूँ जः जः ।

शु० ग० र० ग० स० प० र० श्रु० म०

ॐ नृ० ग० स० प० र० श्रु० म०

ॐ वासुकि मां स्वाहा ।

शु० ग० र० ग० स० प० र० श्रु० म०

ॐ नृ० ग० स० प० र० श्रु० म०

ॐ नागसपरिवार गच्छ ।

शु० ग० र० ग० स० प० र० श्रु० म० ॥

ॐ म० री० दे० वी० म० ८१७. ११.

(मारीचीदेवीमन्त्र)

ॐ म० री० दे० वी० म०

ॐ मारीची मां स्वाहा ।

म० री० दे० वी० म० ॥

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

(दशदिक्पालमन्त्र)

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं

दशदिक्पालसपरिवार एहोहि पद्मकमलस्त्वम् । समयस्त्वम् ।

ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं
ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं सप्तविंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ इन्द्राय स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ यमाय स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ वरुणाय स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ कुबेराय स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ अग्नये स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ निर्ऋतये स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ वायवे स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ ईशानाय स्वाहा ।

ॐ ध्रुवसंज्ञाद्वयं चतुर्विंशत्यक्षरं

ॐ वृद्धेः सुगु

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

ऊँ व'व'व'व'

ॐ उद्धयः सुगु

ॐ चन्द्राय स्वाहा ।

ऊँ व'व'व'

ॐ नृपेन्द्रः सुगु

ॐ नागेभ्यः स्वाहा ।

ऊँ नृपेन्द्रः सुगु

ॐ सु[सु]द्धयः सुगु

ॐ सूर्याय स्वाहा ।

ऊँ म'व'व'

ॐ प्रेक्षिष्ठः सुगु

ॐ पृथिवीभ्यः स्वाहा ।

ऊँ म'व'व'

ॐ जसुरेन्द्रः सुगु

ॐ असुरेभ्यः स्वाहा ।

ऊँ म'व'व' नृपेन्द्रः सुगु

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

नमः सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ॥ ॥

ISBN: 81-87127-55-4